શ્રી જૈન કન્યાશાળાની

બાળાઓને ઈનામ.

બાઇ ચંદન વીસનગરવાલા શેઠ
ગોકુળભાઇ મુલચંદની
દીકરી તરફથી.

ધોરણ   નંબર

નામ

સંવત ૧૯   સન ૧૯

श्री चतुर्विंशतिजिन स्तुति देशना संग्रह.

छपावी प्रसिद्ध करनार.
श्री आद्य जैनधर्म प्रवर्त्तक सभा.
पांजरापोळ अमदावाद (तरफथी).
शा. बालाभाई ककलभाई.
मांडवीनी पोळ–अमदावाद.

अमदावादमां–"राजनगर प्रिन्टिंग प्रेस" मां छाप्यो.
वीर संवत २४३७.   विक्रम संवत १९६७.
किम्मत रु. ०–१२–०.

प्रस्तावना.

सांप्रतकाळमां संप्रतिराजा समान जे कुमारपाळ राजा तेमना गुरु महाराज श्री हेमचंद्राचार्य थया जे पोतानी असाधारण बुद्धिबळथी कळिकाळमां सर्वज्ञ कहेवाया तेमना नामथी कोइ पण जैन भाग्येज अजाण्यो हशे. तेमणे कुमारपाळ भुपाळना अति आग्रहथी त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित्र संस्कृतमां श्लोकबद्ध बनाव्युं. तेमां चोवीस तीर्थंकर, बार चक्रवर्त्ती, नव वासुदेव, नव बळदेव अने नव प्रतिवासुदेवोनुं चरित्र आपेलुं छे. तेनुं गुजराती भाषांतर भावनगरनी श्री जैनधर्म प्रसारक सभाए कर्युं छे. तेमां चोवीस तीर्थंकर भगवानना जन्म समये तथा केवळज्ञान समये इंद्र महाराजे करेली स्तुतिओ तथा तेमनी पहेली देशनाओ चतुर्विध संघने घणो भाव उत्पन्न करनारी तथा बोधदायक जाणी अमदावादमां चालती साधवी शाळामां भणनार साधवीओने माटे वांचनमाळा तरीके वापरवा सारुं अमारी सभाए तेनो संग्रह करी छपावी प्रसिद्ध करी तेनी अंदर जे जे अघरा शब्दो मालम पड्या तेना अर्थ पण छेवटना भागमां दाखल कर्या छे जेथी भणनारने तथा वांचनारने तेनी सारी समज पडे.

वांचनार वर्गने नम्रतापूर्वक अरज करुं छुं के लक्षपूर्वक आ ग्रंथ वांची मनन करी अपूर्व लाभ मेळववा चुकशो नहीं, तथा आ पुस्तकनी अंदर मंदबुद्धिथी, दृष्टी दोषथी, प्रमादथी तथा छापनारनी बीनकाळजीथी जे कांइ कानो, मात्रा, अनुस्वार तथा ह्रस्व दीर्घनी भूलचुक रही गइ होय तथा जिनाज्ञा विरुद्ध लखाण थयुं होय तेने माटे मिथ्यादुष्कृत देउं छुं, ने सुज्ञपुरुषोने ते सुधारी वांचवा तथा मने लखी जणाववा सविनय प्रार्थना करुं छुं के बीजी आवृत्तिमां ते सुधारी शकाय.

ली. प्रसिद्धकर्त्ता श्री आद्य जैनधर्म प्रवर्त्तक सभा.

ता. १-११-१०.

पांजरापोळ अमदावाद (तरफथी)

शा. बालाभाई ककलभाई.

अनुक्रमणिका.

चतुर्विंशति जिन स्तुति देशना संग्रह.

स्तुति संग्रह.

श्री रिखभदेव भगवानना जन्म वखते इन्द्रमहाराजे करेली स्तुति.

हे तीर्थनाथ! हे जगत्ने सनाथ करनार, हे कृपारसना समुद्र, हे नाभिनंदन, तमने नमस्कार करुं छुं. हे नाथ! नंदनादिक त्रण उद्यानोथी जेम मेरु पर्वत शोभे, तेम मति विगेरे त्रण ज्ञानसहित उपजवाथी तमे शोभो छो. हे देव! आजे आ भरतक्षेत्र स्वर्गथी पण विशेष शोभे छे, केमके त्रैलोक्यनां मुगटरत्नसमान एवा तमे तेने अलंकृत कर्युं छे. हे जगन्नाथ! जन्म कल्याणकना महोत्सवथी पवित्र थएलो आजनो दिवस, संसारमां रहुं त्यां सुधी तमारी पेठे वंदन करवाने योग्य छे. आ तमारा जन्मनां पर्वथी आजे नारकीओने पण सुख थयुं छे. केमके अर्हंतोनो उदय कोना संतापने हरनारो न थाय?

आ जंबुद्धिपने विषे भरतक्षेत्रमां निधाननी पेठे धर्म नष्ट थइ गयो छे, तेने तमारी आज्ञारूपी बीजथी पाछो प्रकाश करो. हे भगवन्! तमारा चरणने प्राप्त करीने हवे कोण संसारने तरशे नहि? केमके नावना योगथके लोढुं पण समुद्रना पारने पामे छे. हे भगवान्! वृक्षविनाना देशमां जेम कल्पवृक्ष उत्पन्न थाय, अने मरुदेशमां जेम नदीनो प्रवाह थाय तेम तमे आ भरतक्षेत्रमां लोकोना पुन्यथी अवतरेला छो.

श्री रिखभदेवजीनी दिक्षा वखते इन्द्रे करेली स्तुति.

हे प्रभु! तमारा यथार्थ गुण कहेवाने अमे असमर्थ छीए, तथापि अमे स्तुति करीए छीए; केमके तमारा प्रभावथी अमारी बुद्धिनो विस्तार थाय छे. हे स्वामि! त्रस अने स्थावर जंतुओनी हिंसानो परिहार करवाथी अभयदान आपनारी दानशाळारूप एवा आपने अमे नमस्कार करीए छीए. सर्वथा मृषावादनो परित्याग करवाथी हितकारी, सत्य अने प्रियवचनरुपी सुधारसना समुद्र एवा आपने अमे नमस्कार करीए छीए. हे भगवन्! अदत्तादाननो त्याग करवारुपी खीलाइ गएला मार्गमां प्रथम पंथी

थएला आपने अमे नमस्कार करीए छीए. हे प्रभु! कामदेवरूपी अंधकारनो नाश करनार अने अखंडित ब्रह्मचर्यरूपी महा तेजवाळा सूर्यसमान आपने अमे नमस्कार करीए छीए. तृणनी पेठे पृथ्वि विगेरे सर्व जातना परिग्रहने एकसाथे त्याग करनार निर्लोभता रूप आत्मवाळा आपने अमे नमस्कार करीए छीए. पंचमहाव्रतनो भार उपाडवामां वृषभ समान अने संसार सिंधुने तरवामां काचबा समान आप महात्माने अमे नमस्कार करीए छीए. हे आदिनाथ! जाणे पांच महाव्रतोनी पांच सहोदरा होय तेवी पांच समीतिने धारण करनारा आपने अमे नमस्कार करीए छीए. आत्मारामने विषेज जोडेला मनवाळा, वचननी संवृत्तिथी शोभता अने शरीरनी सर्व चेष्टाउथी निवृत्त थएला एवा त्रण गुप्तिधारक तमने अमे नमस्कार करीए छीए.

प्रभुना केवळज्ञान वखते इन्द्रे करेली स्तुति.

हे जगत्पते! रत्नोवडे रत्नाकर शोभे तेम आप एकज अनंत ज्ञान दर्शन वीर्यना आनंदथी शोभो छो. हे देव! आ भरतक्षेत्रमां घणा काळथी नष्ट थएल धर्मरुप वृक्षने पुनः उत्पन्न करवामां तमे बीज समान छो; वळी हे प्रभु! तमारा महात्म्यनो कांइ अ-

वधि नथी कारण के पोताने स्थानके रहेला अनुत्तर विमानना देवोना संदेहने तमें अहीं रह्या छता जाणो छो, अने ते संदेहनुं निवारण पण करो छो. मोटी ऋद्धिवाळा अने कांतिथी प्रकाशी रहेला आ सर्व देवताउनो जे स्वर्गमां निवास छे ते तमारी भक्तिना लेश मात्रनुं फळ छे. मूर्खजनने ग्रंथनो अभ्यास जेम क्लेशने अर्थेज थाय छे तेम तमारी भक्ति विनाना मनुष्योना मोटां तप पण श्रमने माटेज थाय छे. हे प्रभु! तमारी स्तुति करनार अने तमारो द्वेष करनार बन्ने उपर तमे तो समान दृष्टिवाळा छो, परंतु तेउने शुभ अने अशुभ एम भिन्न भिन्न फळ थाय छे तेथी अमने आश्चर्य थाय छे. हे नाथ! मने स्वर्गनी लक्ष्मीथी पण संतोष नथी तेथी हुं एवुं मागुंछुं के मारी तमारे विषे अक्षय अने अपार भक्ति थाउ.

भरत चक्रवर्तिए रिखवदेव स्वामिनी करेली स्तुति.

हे अखिल जगन्नाथ! हे विश्वने अभय आपनार! हे प्रथम तीर्थेश! हे संसार तारण! तमे जय पामो. आजे आ अवसर्पिणीमां जन्मेला लोकोरूपी पद्माकरने सूर्य समान तमारा दर्शनथी मारे अंधकारनो नाश थइने प्रभात थयुं छे. हे नाथ! भव्यजी-

वोना मनरूपी जळने निर्मळ करवानी क्रियामां कतकना चूर्ण जेवी तमारी वाणी जयवंती वर्ते छे. हे करुणाना क्षीर सागर! जे तमारा शासनरूपी महारथमां आरूढ थाय छे तेउने लोकाग्र (मोक्ष) दूर नथी. हे देव! निष्कारण जगत्बंधु आप साक्षात् जोवामां आवो छो तेथी आ संसारने अमे लोकाग्रथी पण अधिक मानीए छीए. हे स्वामिन्! आ संसारमां पण निश्चळ नेत्रोवडे तमारा दर्शनना महानंदरुपी झरामां अमने मोक्षसुखना स्वादनो अनुभव थाय छे. हे नाथ! रागद्वेष अने कषायादि शत्रुउए रुंधेला आ जगत्ने अभयदान देनारा तमे उद्घोषित करो छो (रुंधनमांथी छोडावो छो.) हे जगत्पते! तत्व जणावो छो, तमे मार्ग बतावो छो, अने तमे विश्वनी रक्षा करो छो तो तेथी विशेष हुं तमारी पासे शुं याचना करुं? जेउ अनेक जातना उपद्रव अने संग्रामथी परस्परनां गामो अने पृथ्वीने लइ लेनारा छे एवा आ सर्व राजाउ आपनी सभामां परस्पर मित्र थइने रहेला छे. तमारी पर्षदामां आवेलो आ हस्ती पोतानी सूंढथी केसरीसिंहना करने (सुंढने) आकर्षण करी तेनावडे पोतानां कुंभस्थळने वारंवार कंडुयन करे छे (खजवाळे छे). आ महिष, अन्य महिषनी पेठे वारंवार स्नेहथी पोतानी जीव्हावडे आ हणहणता अश्वने मार्जन

करे छे. लीलाथी पोताना पुंछडाने हलावतो आ मृग ऊंचा कान करी अने मुखने नमावी पोतानी नासिकाथी आ वाघना मुखनुं आघ्राण करे छे (सुंघे छे). आ तरुण मार्जार[1] आगळ पाछळ अने पडखे पोताना बच्चानी पेठे फरता एवा मूषक[2] ने आलिंगन करे छे. आ भुजंग पोताना शरीरनुं कुंडाळुं करी आ नकुल[3]नी पासे मित्रनी पेठे निर्भय थइने बेठो छे. हे देव! आ बीजा पण निरंतरनां वैरवाळा प्राणीओ अहीं निर्वैर थइने रह्या छे. आ सर्वनुं कारण तमारो अतुल्य प्रभाव छे.

भरतचक्रीए अष्टापद उपर करेली प्रभुनी स्तुति.

हे प्रभु! अछता गुणोने कहेनारा मनुष्यो अन्यजनोनी स्तुति करी शके छे, पण हुंतो तमारा छता गुणो कहेवाने पण असमर्थ छुं तेथी आपनी स्तुति केम करी शकुं? तथापि दरिद्र पुरुष पण जेम लक्ष्मीवंतने भेट करे छे तेम हे जगन्नाथ! हुं आपनी स्तुति करीश. हे प्रभु! चंद्रनां किरणोथी शेफाळी जातनां वृक्षोनां पुष्पो गळी जाय छे तेम तमारा चरण जोवा मात्रथी मनुष्योनां अन्य जन्ममां करेलां पापो गळी जाय छे. हे

१ बीलाडो. २ उंदर. ३ नोळीओ.

स्वामी! जेनी चिकित्सा न थइ शके एवा महा मोहरूपी संनिपातवाळा प्राणीउने विषे पण अमृत औषधिना रस जेवी तमारी वाणी जयवंती वर्त्तें छे. हे नाथ! वरसादनी वृष्टिनी जेम चक्रवर्ती अने रंकजन उपर सदृश भाववाळी तमारी दृष्टि प्रीति संपत्तिना एक कारणरूप छे. हे स्वामी! क्रूर कर्मरूपी बरफनी गांठने गाळी देवामां सूर्यनी जेवा आप अमारा जेवाना पुण्यबीज पृथ्वीमां विचरो छो. हे प्रभु! शब्दानुशासनमां व्यापी रहेला संज्ञासूत्रना जेवी उत्पाद, व्यय, अने ध्रौव्यमय तमे कहेली त्रिपदी जयवंती वर्ते छे. हे भगवन्! जेउ तमारी स्तुति करे तेउने आ छेल्लो भव थाय छे तो जेउ तमारी सेवा अने ध्यान करे तेनी तो वातज शी करवी?

भरतचक्रीए अष्टापद उपर करेली प्रभुनी स्तुति.

हे प्रभु! मारा जेवाए तमारी स्तुति करवी ते कुंभथी समुद्रनुं पान करवा जेवुं छे, तथापि हुं तमारी स्तुति करीश केमके हुं भक्तिथी निरंकुश छुं. हे प्रभो! दीपकना संपर्कथी जेम वाटो पण दीपकपणाने पामे छे, तेम तमारा आश्रित भविजनो तमारी तुल्य थाय छे. हे स्वामिन्! मद पामेला इंद्रियरुपी हस्तीओने निर्मद करवामां औषधरूप अने

मार्गने बतावनार तमारुं शासन विजय पामे छे. हे त्रिभुवनेश्वर ! तमे चार घातीकर्मने हणीने बाकीनां चार कर्मनी जे उपेक्षा करो छो ते लोककल्याणने माटेज करो छो एम हुं मानुं छुं. हे प्रभु ! गरुडनी पांखमां रहेला पुरुषो जेम समुद्रनुं उल्लंघन करे छे, तेम तमारा चरणमां लग्न थएला भव्यजनो आ संसारसमुद्रनुं उल्लंघन करे छे. हे नाथ ! अनंत कल्याणरूप वृक्षने उल्लसित करवामां दोहदरूप अने विश्वनी मोहरूपी महा निद्रामां प्रातःकाळ समान तमारुं दर्शन जयवंत वर्ते छे. तमारा चरण कमळना स्पर्शथी प्राणीओनां कर्म विदारण थइ जाय छे, केमके चंद्रना मृदु किरणोथी पण हाथीना दांत फुटे छे. मेघनी वृष्टिनी जेम अने चंद्रनी चंद्रिकानी जेम हे जगन्नाथ ! तमारो प्रसाद सर्वने सरखोज छे.

श्री रिखवदेव प्रभुनी अष्टापद उपर निर्वाण समये भरते करेली स्तुति.

हे जगत्सुखाकर ! हे त्रिजगत्पति ! पांच कल्याणकथी नारकीओने पण सुख आपनार एवा आपने हुं नमस्कार करुं छुं. हे स्वामिन् ! सूर्यनी पेठे विश्वनुं हित करनारा तमे हमेशां विहार करीने आ चराचर जगत् उपर अनुग्रह कर्यो छे. आर्य अने अनार्य

ए बंन्ने उपरनी प्रीतिथी तमे चिरकाळ विहार करता, तेथी पत्ननी अने तमारी गति परोपकारने माटेज छे. हे प्रभु! आ लोकमां मनुष्योनो उपकार करवाने माटे तमे चिरकाळ विहार कर्यो हतो, पण मुक्तिमां तमे कोनो उपकार करवाने माटे गया? तमे अधिष्ठित करेलुं लोकाग्र (मोक्ष) आज खरेखर लोकाग्र थयुं छे. अने तमे छोडी दीधेल आ मर्त्य लोक खरेखर मर्त्य लोक (मृत्यु पामवा योग्य) थयो छे. हे नाथ! जेओ विश्वने अनुग्रह करनारी तमारी देशनाने संभारे छे ते भव्य प्राणीओने हजीपण तमे साक्षातज छो. जेओ तमारुं रुपस्थ एवुं ध्यान करे छे तेवा महात्माओने पण तमे प्रत्यक्षज छो. हे परमेश्वर! जेवी रीते ममता रहित एवा तमे आ सर्व संसारनो त्याग कर्यो तेवी रीते हवे कदापि मारा मननो त्याग करशो नहि.

श्री आदिजिन स्तुति.

' हे जगन्नाथ! हे त्रैलोक्य कमल मार्त्तंड! हे संसाररूपी मरुस्थळमां कल्पवृक्ष! हे विश्वोद्धरण बांधव! हुं तमने नमस्कार करुं छुं. हे प्रभु! ए मुहूर्त्त पण वंदन करवा योग्य छे के जे मुहूर्त्तमां धर्मने जन्म आपनारा—अपुनर्जन्मा—विश्व जंतुओना जन्म दुःखनुं

छेदन करनारा, आपनो जन्म थयो छे हे नाथ ! आ वखते तमारा जन्माभिषेकना जळना पूरथी प्लावित थएली अने यत्न कर्या सिवाय जेनो मल दूर थयो छे एवी आ रत्नप्रभा पृथ्वी सत्य नामवाळी थइ छे. हे प्रभु ! जे मनुष्यो तमारुं अहर्निश दर्शन करशे तेमने धन्य छे. अमे तो अवसरेज आपनुं दर्शन करनारा छीए. हे स्वामिन् ! भरतक्षेत्रना जंतुओनो मोक्षमार्ग खीलाइ गयो छे तेने आप नवीन पांथ थइ पुनः प्रगट करशो. हे प्रभु ! तमारी अमृतना तरंग जेवी धर्मदेशना तो दूर रहो, परंतु तमारुं दर्शन पण प्राणीओनुं श्रेय करनार छे. हे भवतारक ! तमारी उपमाने पात्र कोइ नथी तेथी हुंतो तमारी तुल्यज तमेज छो एम कहुं छुं एटले हवे वधारे स्तुति केवी रीते करवी ! हे नाथ ! तमारा सद्-भूतार्थ गुणोने पण कहेवाने हुं असमर्थ छुं केमके स्वयंभूरमण समुद्रना जलने कोण मापी शके ?

श्री आदिजिन स्तुति.

हे भगवन ! जो के उत्तम योगीओथी पण आपना गुणो सर्व प्रकारे जाणवा अशक्य छे तो स्तुति करवाने योग्य एवा ते आपना गुणो क्यां अने नित्य प्रमादी एवो हुं स्तोता

क्यां? तथापि हे नाथ! हुं यथाशक्ति तमारा गुणोने स्तवीश. शुं लंगडो मनुष्य दीर्घ मार्गे चाले तो तेने कोइ निवारे? हे प्रभु! आ संसाररूपी आतपना क्लेशथी परवश थयेला प्राणीओने जेना चरणनी छाया छत्रनी छायानुं आचरण करे छे एवा आप अमारी रक्षा करो! हे नाथ! सूर्य जेम परोपकारने माटे उगे छे तेम फक्त लोकने माटेज विहार करता एवा आप कृतार्थ छो. मध्यान्हना सूर्यनी जेम आप प्रभु प्रगट थये देहनी छायानी जेम प्राणीओनां कर्म चोतरफथी संकोच पामी जाय छे; जेओ हमेशां तमने जुए छे ते तिर्यंचोने पण धन्य छे अने जे तमारा दर्शनथी शून्य छे ते स्वर्गमां रहेला होय तो पण अधन्य छे. हे त्रिजगत्पति! जेओना हृदयरूपी चैत्यमां तमे एक अधिदेवता रहेला छो ते भविकजनो उत्कृष्टमां पण उत्कृष्ट छे. हुं आपनी पासे एकज मागुं छुं के गामोगाम अने नगरे नगर विहार करता आप कदापि पण मारा हृदयने छोडशो नहि.

श्री अजितजिन स्तुति.

हे प्रभु! जातिवंत सुवर्णना छेदना जेवी छबिथी आकाशना भागने आच्छादन करनार अने प्रक्षालन विना पवित्र एवी तमारी काया कोने आक्षेप न करे? सुगंधी;

विलेपन कर्या शिवाय पण नित्य सुगंधी एवा तमारा अंगमां मंदारनी मालानी जेम देवताओनी स्त्रीओनां नेत्रो भ्रमरपणाने पामे छे. हे नाथ! दिव्य अमृतरस स्वादना पोषणथी जाणे हणाइ गया होय तेवा रोगरूपी सर्पना समुहो तमारा अंगमां प्रवेश करी शकता नथी. दर्पणना तलमां लीन थयेला प्रतिबिंबना जेवा तमारां शरीरमां झरता पसीनाना विलीनपणानी कथा पण केम संभवे? हे वीतराग! तमारुं मन मात्र रागरहित छे एम नथी पण तमारा शरीरमां रुधिर पण दुधनी धारा जेवुं श्वेत छे. तमारामां बीजुं पण जगत्थी विलक्षण छे एम अमे कही शकीए छीए. कारण के तमारुं मांस पण नहि बगमेलुं अबिभत्स अने शुभ्र छे. जल तथा स्थलमां उत्पन्न थयेली पुष्पोनी मालाने छोडीने भमराओ तमारा निःश्वासनी सुगंधने अनुसरे छे. तमारी संसारस्थिति पण लोकोत्तर चमत्कार करनारी छे, कारण के तमारा आहार अने निहार पण चर्मचक्षु गोचर थता नथी.

श्री अजितजिन स्तुति.

हे प्रभु! तीर्थंकर नाम कर्मथी थयेला सर्वना अभिमुख्यपणे हमेशां सन्मूख थइने तमे सर्व प्रजाने आनंद पमाडो छो. वळी एक योजनना प्रमाणवाळा धर्मदेशनाना मंदि

रमां करोडो तिर्यंच, मनुष्य अने देवताओ परिवार सहित समाय छे अने एक भाषामां बोलातुं छतां पण सर्वने पोतपोतानी भाषामां समजातुं अने मनोहर लागे एवुं तमारुं वचन जे धर्मना बोधने करनारुं थाय छे ते पण तीर्थंकर नाम कर्मनोज प्रभाव छे. तमारी विहारभूमिनी चोतरफ सवासो सवासो योजन सुधी पूर्वे उत्पन्न थयेला रोगरूपी वरसादो तमारा विहाररूपी पवनना उर्मिओथी प्रयासविना लय पामी जाय छे अने राजाओए नाश करेली अनीतिनी जेम आप ज्यां विहार करो छो ते पृथ्वीमां मुषक, तीड, अने सुडा विगेरेनी उत्पत्तिरूप दुर्भिक्ष इतिओ पण प्रगट थती नथी. तमारी कृपारूपी पुष्करावर्त्तनी वृष्टिथी पृथ्वीपर स्त्री, क्षेत्र अने द्रव्यादि कारणोथी उत्पन्न थयेलो वैररूप अग्नि पण शांत थइ जाय छे. हे नाथ! अशिवनो उच्छेद करवामां पटुरूप तमारो प्रभाव पृथ्वीमां परिभ्रमण करतो होवाथी मनुष्य लोकना शत्रुरूप मारी विगेरे रोगो उत्पन्न थता नथी. विश्वना एक वत्सल अने लोकोना मनोरथने वर्षनारा तमे विचरता होवाथी उपतापने करनारी अतिवृष्टि अने अवृष्टि पण थती नथी. तमारा प्रभावथी सिंहना नादथी हाथीओनी जेम स्वराज्य अने परराज्य संबंधी क्षुद्र उपद्रवो सत्वर नाश पामे छे. सर्व

प्रकारना अद्भुत प्रजावनवाळा अने जंगम कल्पवृक्षरूप तमे पृथ्वीमां विहार करता छतां दुर्भिक्षनो क्षय थइ जाय छे तमारा मस्तक उपर पाछला जागमां सूर्य मंफळना तेजने जय करनारुं एवुं जामंफळ, आपनुं शरीर लोकोने डुरालोक न थाउे एम धारीने पिंका-कारे थयेलुं होय तेम जणाय छे. हे जगवन्! घातीकर्मनो क्षय थवाथी थयेलो आ योग साम्राज्यनो महिमा विश्वमां प्रख्यात थयेलो छे ते कोने आश्चर्यनुं कारण नथी? अनंत काळथीसंचय थयेलां अनंत कर्मरूपी तृणने सर्वथा प्रकारे तमारा शिवाय बीजो कोइ पण मूळथी उन्मूलन करी शकतो नथी. क्रियाना समजिहारथी तेवी रीतना उपायमां तमे प्रवर्त्तेला छो के जेथी नहि इच्छता छतां पण लक्ष्मीनो आश्रय करीने रह्या छो, मैत्रीना पवित्र पात्ररूप हर्षना आमोदथी शोजता अने कृपा तथा उपेक्षा करनाराउेमां मुख्य एवा तमने योगात्माने हुं नमस्कार करुं छुं.

श्री अजितनाथनी सगर चक्रवर्तिए करेली स्तुति.

हे प्रजु! मिथ्यादृष्टिने कल्पांतकाळना सूर्यसमान अने समकितदृष्टिने अमृतना अंजन समान तेमज तीर्थंकरपणानी लक्ष्मीने तिलकरूप आ चक्र तमारी आगळ वृद्धि

पामेलुं छे. आ जगत्मां तमे एकज स्वामी छो एम कहेवाने जाणे इंद्रे इन्द्रध्वजना मिषथी पोतानी तर्जनी आंगळी उंची करी होय एम जणाय छे. ज्यारे तमारा चरणो पगलां भरे छे त्यारे सुर असुरो कमळ रचवाना मिषथी कमळमां वसनारी लक्ष्मीने विस्तारे छे. दान, शीळ, तप अने भाव ए चार प्रकारना धर्मने एक साथे कहेवाने माटे तमे चार मुखवाळा थया छो, एम हुं मानुछुं. आ त्रण भुवननुं त्रण दोषथी रक्षण करवाने तमे प्रवर्त्तेला छो, तेथीज देवताओए आ त्रण गढ करेला जणाय छे. तमे पृथ्वीमां विहार करो छो त्यारे कांटाओ अधोमुखी थइ जाय छे पण तेमां कांइ आश्चर्य नथी, केम के सूर्यनो उदय थाय त्यारे अंधकार सन्मुख थइ शकेज नहि. केश, रोम, नख अने डाढी मुछ वृद्धि पाम्या शिवाय अवस्थित रहेला छे, एवी रीतनो बहारनो योग महिमा तीर्थंकरो शिवाय बीजाओए प्राप्त करेल नथी, शब्द, रुप, रस, स्पर्श अने गंध नामना पांच इंद्रियोनां विषयो तमारी आगळ तार्किक लोकोनी जेम प्रतिकूळपणाने भजता नथी. सर्व रूतुओ अकाळे करेला कामदेवनी सहायना भयथी जाणे होय तेम एक साथे तमारा चरणनी उपासना करे छे. आगळ उपर तमारा चरणनो स्पर्श थवानो छे

एम विचारीने देवताओ सुगंधी जळना वर्षादथी अने दिव्य पुष्पोनी वृष्टिथी ते पृथ्वीनी पूजा करे बे. हे जगत्पूज्य! पक्षीओ पण चोतरफथी तमारी प्रदक्षिणा करे बे. तो तमाराथी विमुखवृत्तिवाळा थाय बे, अने जगत्मां मोटा थइने फरे बे ते पुरुषोनी तो शी गती थवानी ? तमारी पासे एकेंद्रिय एवो पवन पण प्रतिकूळताने बोडी दे बे, तो पंचेंद्रियनुं तो दौःशील्य क्यांथीज थाय ? तमारा महात्म्यथी चमत्कार पामेलां वृक्षो पण मस्तक नमावीने तमने नमे बे, तेथी तेओनां मस्तक कृतार्थ बे पण जेमनां मस्तक तमने नमतां नथी एवा मिथ्यादृष्टिओनां मस्तक कृतार्थ नथी—व्यर्थ बे. जघन्यपणे पण कोटी गमे सुरा सुरो तमारी सेवा करे बे, कारण के मूर्ख—आळसुपुरुषो पण भाग्यना योगथी लभ्य थएला अर्थमां उदासपणे रहेता नथी.

श्री संभवनाथजीनी स्तुति.

हे भगवान ! विश्वना प्रतिपालन करनार ! मोटी समृद्धिओए सहीत अने त्रीजा तीर्थनाथ एवा आप भगवंतने नमस्कार करुं बुं. हे विभो ! जन्मथीज प्राप्त थयेला त्रण ज्ञान अने चार अतिशयोथी तमे जगतमां विलक्षण बो- अने तमारामां स्फुटरीते एक

हजार लक्षणो रहेलां छे हमेशां प्रमादी पुरुषोना प्रमादना छेदनुं कारण एवुं आ तमारुं जन्म कल्याणक आजे मारा जेवाना कल्याणने माटेज थयुं छे. हे जगत्पति ! आ रात्रि आखी प्रशंसा करवाने योग्य थइ छे, कारण के जेमां निष्कलंक चंद्ररूप एवा तमे प्रगट थया छो. हे प्रभु! तमने वंदना करवाने जा आव्य करता अनेक देवताओथी आ मनुष्य लोक हमणां स्वर्गलोकना जेवो जणाय छे, हे देव ! तमारा दर्शनरूप अमृतना स्वादथी जेओनां चित्त संतुष्ट थयेलां छे एवा अमृतभोजी देवताओने हवेथी जीर्ण थयेला स्वर्गना अमृतनी कांइ जरुर नथी. आ भरतक्षेत्ररूपी सरोवरमां कमळरूप एवा हे भगवान्! तमारामां भमरानी पेठे मारो परम लय थइ जाओ. हे अधीश! जेओ हमेश तमारुं दर्शन करे छे ते मनुष्योने पण धन्य छे, कारणके तमारा दर्शननो उत्सव स्वर्गना राज्यथी पण अधिक छे.

श्री संभवनाथजीनी स्तुति.

हे प्रभु ! सर्वना तमे न बोलाव्या छतां पण सहायकारी छो, कारण सिवाय वात्सल्यवान छो, प्रार्थना कर्या वगरना उपकारी छो, अने संबंध वगरना बांधव छो, तेथी हे

नाथ ! अभ्यंग कर्या वगर स्निग्ध हृदयवाळा, मळापकर्षण विना उज्वळ वचनने बोलनारा, प्रक्षालन कर्या वगर निर्मल शीळवाळा अने शरण करवाने लायक एवा तमारा शरणनो हुं आश्रय करुं छुं. हे स्वामी! शांत छतां वीरव्रतवाळा समतावान अने सर्वमां सरखी रीते वर्त्तनारा एवा तमोए कर्मरूपी कुटिल कांटाने अत्यंत कूटी नांख्या छे. अभव छतां महेश, अगद छतां नरकने छेदनार (कृष्ण) अने अराजस छतां ब्रह्मरूप एवा तमने अमे नमस्कार करीए छीए. हे प्रभु ! सिंचन कर्या सिवाय फलद्रुप अने पकवा वगर मोटा वधेला एवा तमे संकल्प रहित कल्पवृक्ष छो माटे तमाराथी मने मोटुं फळ प्राप्त थाओ. हे स्वामि! इत्यादि संग रहित, ममताए वर्जित, कृपालु, मध्यस्थ अने जगतने पालन करनार एवा आप जिनेश्वरनो हुं कोइ पण प्रकारना त्रिशूळादि चिन्ह विनानो किंकर छुं. हे नाथ! नहि गोपवेला रत्नना निधिरूप, वाड विनाना कल्पवृक्षरूप अने नहि चिंतवेला चिंतामणीरूप एवा तमारे विषे आ मारा आत्माने में अर्पण करेलो छे. हे प्रभु! हुं फलनी चिंताथी रहित छुं अने तमारी मूर्त्ति फलरूपज छे तेथी 'शुं करवुं, एवा विचारमां जड थयेला मने मारे शुं करवुं जोइए ते बतावावानो प्रसाद करो."

श्री अभिनंदन स्वामीनी स्तुति.

चोथा तीर्थंकर, चोथा आरारूप आकाशमां सूर्यसमान अने चोथा पुरुषार्थ (मोक्ष) नी लक्ष्मीने प्रकाश करनार हे प्रभु! आप जय पामो. हे नाथ! लांबे काले आपनाथी सनाथ थयेलुं आ जगत् हवे विवेकनी चोरी करनारा मोहादिकथी क्यारे पण उपद्रवने पामशे नहीं. हे प्रभु! आपना पादपीठमां जेनुं मस्तक लोटे छे एवा मारे विषे पुण्यरूप परमाणुना कण जेवी आपनी चरणरज दीर्घकाल स्थापन थाओ. हे ईश! मारां नेत्र आपना मुखने विषे आसक्त होवाथी नहीं जोवा लायक वस्तुने जोवाथी उत्पन्न थयेला ए नेत्रना मळने हर्षाश्रुनी उर्मीओवडे क्षणवारमां धोइ नांखो. हे प्रभु! लांबा कालनी ममताना दर्शनथी उत्पन्न थएलां मारां रोमांचो चिरकालनी असद्दर्शन (मिथ्यादर्शन) नी वासनाने दूर करो. हे नाथ! मारां नेत्रो सर्वदा तमारा मुखने जोइ विलास पामो, मारा हाथ तमारी उपासना करो, अने मारा कान तमारा गुणना श्रोता थाओ. हे देवाधि देव! कुंठ एवी मारी बुद्धि जो तमारा गुणने ग्रहण करवा तरफ उत्कंठावाळी होय तो तेनुं कल्याण थाओ; केमके तेने बीजाथी शुं थवानुं छे. हे नाथ! हुं तमारो

शिष्य, दास, सेवक अने किंकर हुं ए प्रमाणे तमे स्वीकार करो एथी वधारे बीजुं कांइ पण हुं कहेवा इच्छतो नथी.

श्री अभिनंदन स्वामीनी स्तुति.

हे भगवन्! आपे सर्वदा कष्टकारी एवी मन, वचन अने कायानी चेष्टानो संहार करी शिथिलपणाथी मनरूपी शल्यने जुदुं करेलुं छे. हे नाथ! तमारी इंद्रियो संमत पण नथी तेमज उच्छृंखल पण नथी एम सम्यक्प्रकारे प्रतिपादन करीने तमे इंद्रियोनो जय करेलो छे, योगनां जे आठ अंग कहेलां छे तेतो फक्त प्रपंचमात्र छे, नहीं तो ए योग बाळपणाथी आरंभीने तमारी सात्म्यताने केम प्राप्त थाय? हे स्वामिन्! लांबा काळथी साथे रहेनारा विषयोमां तमने विराग छे अने अदृष्ट एवा योगमां सात्म्यपणुं छे ए अमने तो अलौकिक लागे छे. जेवो तमे अपकार करनार उपर राग धरो छो तेवो बीजाउ उपकार करनार उपर पण राग धरता नथी. अहो! तमारुं सर्व अलौकिक छे. हे प्रभु! तमे हिंसक पुरुषोना उपर उपकार कर्यो अने जे आश्रित हता तेमनी उपेक्षा करी एवा तमारा विचित्र चरित्रने कोण अनुसरी शके? हे भगवन्! परम समाधिमां तमे तमारा

आत्माने एवी रीते जोडी दीधो छे के जेथी 'हुं सुखी छुं के दुःखी छुं अथवा सुखी के दुःखी नथी' एम तमारा मनमां पण आवतुं नथी. जेमां ध्याता, ध्यान अने ध्येय ए त्रिपुटी एकात्माने पामेली छे एवा तमारा योगना माहात्म्य उपर बीजाओने केम श्रद्धा आवे?

श्री सुमतिनाथजीनी स्तुति.

हे देव ! आपना जन्म कल्याणकथी आ पृथ्वी कल्याणवाळी थई गई छे तो ज्यारे तमे चरणकमळथी आ पृथ्वीपर विहार करशो त्यारनीतो वातज शी करवी ? हे भगवान् ! तमारा दर्शनथी अमारी दृष्टिओ कृतार्थ थई छे अने तमारुं पूजन करवाथी आ हाथ कृतार्थ थयेला छे. हे जिननाथ ! तमारा स्नात्र अर्चन विगेरेनो जे महोत्सव करवामां आवेलो छे ते चिरकाळना मारा मनोरथरूपी प्रासाद उपर कलशरूप थयेलो छे. हे जगन्नाथ ! सांप्रतकाले पण हुं आ संसारनी प्रशंसा करुं छुं कारणके जेमां मुक्तिना एक निबंधनरूप तमारुं दर्शन प्राप्त थयुं छे. हे देव ! स्वयंभूरमण समुद्रना ऊर्मिओ कदी गणी शकाय, पण मारा जेवा पुरुषो, अतिशयोना पात्र एवा तमारा गुणोने गणी शके नहि. धर्मरूपी मंडपना स्तंभरूप, जगतने उद्योत करवामां सूर्यरूप अने दया

रूपी वेलाना आश्रयने माटे मोटा वृक्षरूप एवा हे जगत्पति! आ विश्वनी रक्षा करो. हे देव ! मुक्तिना बंध थयेला द्वारने उघाडवामां कुंचीरूप तमारी देशना पुण्यवंत प्राणीउनाज सांजळवामां आवे ढे. हे जुवनेश्वर! उज्वल दर्पण जेवा मारा मनमां हमेशां प्रतिबिंबरूपे पमेली तमारी मूर्त्ति मने मुक्तिना सुखना कारणरूप थाउ.

श्री सुमतिनाथजीनी स्तुति.

हे जगवन्! आ अशोक वृक्ष जमराउना गुंजारवथी जाणे गातो होय, चलायमान पत्रोथी जाणे नाचतो होय अने तमारा गुणोमां रक्त थवाथी रक्त थयो होय एवो खुशी थतो देखाय ढे. आ देवताउ जेउनां बंधन (डींटां) नीचां ढे एवां पुष्पोने योजन प्रमाण तमारी देशना जूमि उपर जानु प्रमाण वर्षावे ढे. तमारो मालव कौशीकी प्रमुख ग्राम तथा रागथी पवित्र एवो जे दिव्यध्वनि थाय ढे तेने मृगलाउ पण हर्षवमे उंची ग्रीवा करीने पीए ढे (सांजले ढे). तमारी आगळ रहेली चंद्र जेवी उज्वळ आ चामर श्रेणी जाणे तमारा मुख कमळनी सेवा करवाने आवेली हंसनी पंक्ति होय तेवी शोजे ढे. सिंहासन उपर बिराजी तमे ज्यारे देशना आपोढो त्यारे मृगलांउ सिंहनी सेवा

करवा जाणे आवतां होय तेम ते देशना सांभळवाने आवे छे. ज्योत्स्नाथी व्याप्त एवो चंद्रमा जेम चकोर पक्षीने हर्ष आपे छे तेम कांतिओथी व्याप्त एवा तमे सर्वनी दृष्टिओने परम हर्ष आपो छो. हे विश्वपति! तमारी आगळ आकाशमां ध्वनी करतो दुंदुभि सर्व जगत्‌मां आप्त पुरुषोने विषे तमारा मोटा साम्राज्यने जाणे बतावतो होय तेम जणाय छे. पुण्य समृद्धिओना क्रम जेवा अने त्रणभुवन उपरना तमारा प्रौढ प्रभुपणाने बतावतां आ त्रण छत्रो तमारी उपर शोभी रह्यां छे. हे नाथ! आवी तमारी चमत्कारी प्रातिहार्य लक्ष्मीने जोइने कया मिथ्यादृष्टिओ पण आश्चर्य न पामे?

श्री पद्मप्रभुजीनी स्तुति.

हे देव! आ अपार संसाररूप मरुदेशमां संचार करता प्राणीओने चिरकाळे अमृतनी परब तूल्य तमारुं दर्शन थयेलुं छे. रुपथी अनुपम एवा तमने अश्रांतपणे जोनारा देवताओना नेत्रोनी अनिमेषता कृतार्थ थयेली छे. तमारा जन्म वखते नित्य अंधकारमां उद्योत थयो तेथी नारकीओने पण सुख थयुं माटे तमारुं तीर्थंकरपणुं कोने सुखरूप नथी? हे नाथ! संसारीओना पुण्योथीज तमे धर्मरूपी वृक्षने दयारूप नीकना जलथी सिंचन

करीने वृद्धि पमाडो छो. हे प्रभु! जलना शीतलपणानी जेम त्रणजगतनुं स्वामीपणुं अने त्रण ज्ञाननुं धारण करवापणुं तमारे जन्मथीज सिद्ध थयेलुं छे. पद्मना जेवा वर्णवाला, पद्मना चिन्हवाला, पद्मना सुगंध जेवा मुख पवनने धरनारा, पद्मना जेवा मुखवाला, पद्मा (लक्ष्मी) ए युक्त अने पद्मना गृहरूप एवा हे प्रभु! तमे जय पामो. हे नाथ! अपार अने डुस्तर एवो आ संसाररूपी सागर तमारा प्रसादथी हवे जानुप्रमाण थई जशे. हे स्वामी! हवे हुं कल्पांतरनुं साम्राज्य के अनुत्तर विमाननो निवास पण इच्छतो नथी, फक्त तमारा चरण कमलनी सेवानेज इच्छुं छुं.

श्री पद्मप्रभुजीनी स्तुति.

हे प्रभु! परिसहोनी सेनाने हणता अने उपसर्गोने विदारता पण तमे शमताने पामेला छो. अहा! महान पुरुषोनी केवी विदग्धता. हे नाथ! तमे विरागी छतां मुक्तिने जोगवनारा छो, अने अद्वेषी छतां शत्रुओने हणनारा छो, अहो! महात्माओनो केवो लोकदुर्लभ महिमा छे! हे देव! तमे हमेशां जिगिषा रहित छो अने अपराधथी जय पामो छो तथापि तमे त्रण जगत्ने जितेलुं छे. अहा! मोटा पुरुषोनी केवी चातुरी! हे नाथ!

कोईने तमे कांई आप्युं नथी अने कोईनी पासेथी कांई लीधुं नथी तथापि तमारे प्रभुपणुं छे. अहा! विद्वानोनी केवी विचित्र कळा होय छे. हे प्रभु! जे सुकृत बीजाओए देह त्याग करीने पण मेळव्युं नथी ते सुकृत, सुकृत संपादनमां उदासी एवा तमारा चरण पीठ उपर आलोटे छे, रागादिकमां क्रूर अने सर्व प्राणीओ पर कृपाळु तेथी भयंकर अने मनोहर बंने गुणवाळा एवा तमे सर्व साम्राज्य साध्युं छे, मोटामां मोटा अने महात्माओने पूजवा योग्य एवा तमे अहो! मारी स्तुति गोचर थयेला छो. हे स्वामि! बीजाओमां जे सर्व रीते दोषो छे ते तमारामां गुणरूप छे. आ तमारी स्तुति जो मिथ्या होय तो ते विषे आ सभासदो प्रमाणरूप छे. हे जगत्पति! तमारा चरणनुं मने वारंवार दर्शन थाओ एवीज हुं इच्छा राखुं छुं. ते सिवाय मोक्षनी पण मारे इच्छा नथी.

श्री सुपार्श्वनाथजीनी स्तुति.

हे प्रभु! जेनुं स्वरूप अनिर्ज्ञेय छे एवा तमारे विषे अर्थवाद करवानो आग्रह जे हुं धारुं छुं ते आदित्य मंडळने ग्रहण करवाने कपिए फाळ मार्या जेवुं छे; तथापि हे परमेश्वर! तमारा प्रभावथीज हुं तमारी स्तुति करीश कारण के चंद्रकांत मणि चंद्रनी कां-

च० तिना प्रनावथीज करे ढे. हे प्रनु! तमारा सर्व कल्याणकोने अवसरे तमे नारकीउने स्तु०
पण सुख आपो गो तो तिर्यंच, नर अने, देवताउने सुख आपनारा तमे केम न थाउ?
१२ तमारा जन्मोत्सवने समये त्रण जगतमां जे उद्योत थयो ढे ते नविष्यमां उदय पाम-
नारा केवळज्ञानरूप सूर्यना अरुणोदय ढे एम जणाय ढे. हे परमेश्वर! जाणे तमारा प्र-
सादना संपर्कथी थयेली होय तेम आ सर्व दिशाउ हमणां प्रसन्न थयेली ढे. हे पवित्र
आकृतिवाळा प्रनु! हमणां आ पवनो पण सुखकारी वाय ढे कारण के तमारा जेवा
सुखदायक प्रनु प्रगट थतां जगत्मां प्रतिकुल वर्त्तनार कोण थाय ढे? हे प्रनु! अमारा
प्रमादने धिक्कार ढे के जेने आपना जन्म समयनी खबर न पमी अने आ अमारा आस
नोने धन्य ढे के जेउए चलायमान थइने तमारा जन्म कल्याणकनी अमने खबर जणावी.
हे प्रनु! नियाणुं बांधवुं ए निषिद्ध ढे. तोपण तमारा दर्शननुं फळ मने तमारी नक्ति-
रुपेज निरंतर थाउ, एवुं नियाणुं हुं बांधुं बुं.

श्री सुपार्श्वनाथजीनी स्तुति.

सर्वनुवनकोशरूप कमलमां सूर्यसमान अने प्रथम अर्हंत एवा श्री नगवंत तमने १३

हुं नमस्कार करुं छुं. हे प्रभु! हवे विश्वनुं दुःख गयुं छे अने हर्ष उत्पन्न थयो छे कारण के तीर्थपरावर्त्तनथी आ विश्व जाणे परावृत थयुं होय तेमज जणाय छे. हे धर्मचक्री! प्रकाशवाल एवा तमारा वचनरूप रत्नदंडथी आज निर्वाणरूप वैताढ्यगिरिनुं द्वार उघडशे. हे नाथ! उन्नत एवा मेघनी जेम तमारुं दर्शन सर्व जीव लोकना संतापने छेदवाथी हर्षने माटे थाय छे. अनंत ज्ञानवाळा हे भगवन्! तमारी देशनानां वचनो, दरिद्री घणा काळे द्रव्य पामे तेम अमे चिरकाळे प्राप्त करीशुं. प्रथम तमारा दर्शनथी कृतार्थ थयेला अमे हवे अत्युक्तिवाळा अने मुक्तिना द्वारने प्रकाश करनारा तमारा देशनावचनथी आजे विशेष कृतार्थ थइशुं. अनंतदर्शन, अनंतज्ञान, अनंतवीर्य अने अनंत आनंदमय स्वरूपवाळा तेमज सर्व अतिशयोना पात्ररूप एवा तमने योगी स्वरूपने हुं नमस्कार करुं छुं. हे जगत्पति! आ इंद्रादिक पदवीनी प्राप्ति तो शुं मात्र छे केमके तमारी सेवाथी तो तमारा जेवाज थवाय छे.

श्री चंद्रप्रभुजीनी स्तुति.

हे प्रभु आकाशने आधार आपवानी बुद्धीथी उंचा पग करीने रहेनारा टींटोडा-

पक्षीनी जेम अनंत गुणवाळा एवा तमारी स्तुति करवाने हुं जे प्रवृत थयो छुं ते पंडि-
तोने हास्यना स्थानरुप छुं, तथापि तमारा प्रभावथी व्यापक बुद्धिने प्राप्त थयेलो हुं
तमारी स्तुति करवाने समर्थ थइश; कारण के एक लेश मात्र वादलानो भाग पण पूर्व
दिशाना पवनना संगमथी सर्व दिशाउंमां व्यापी जाय छे. हे प्रभु! भवि प्राणीउए जोवा
मात्रथी अथवा ध्यान करवा मात्रथी तमे तेउंना कर्मरूप पाशने छेदवाने कोइ अपूर्व
शस्त्ररूप थाउ छो. सूर्यथी कमळोनो अभ्युदय थाय तेम विश्वना अंधकारने छेदनारा
एवा अपूर्व सूर्यरूप तमारा जन्मथी आजे जगतमां शुभ कर्मनो उदय थयेलो छे. चंद्रना
किरण मात्र पडवाथी जेम शेफाळिकाना पुष्प खरी पडे छे तेम तमारा दर्शन मात्रथी
मारुं अशुभ पोतानुं फळ आप्या सिवाय गळी जशे. विश्वने अभय आपनारुं तमारुं
दीक्षाधारी स्वरूप तो एक तरफ रह्युं, पण हे भगवन! तमे आ बाल्यावस्थानी मूर्त्तिथी
पण प्राणीउंना दुःखने हरी ल्यो छो. वनना वृक्षोनुं उन्मूलन करवाने जेम उन्मत्त गजेंद्र
आवे तेम तमे संसार छे मूळ जेनुं एवा सर्व कर्मोने छेदवाने माटे अहीं अवतर्या छो.
जेम मुक्ताहारादि मारा हृदयनुं बाह्य आभूषण छे तेम त्रण जगतनापति एवा तमे

मारा हृदयनुं आंतर आजूषण गो.

श्री चंद्रप्रजुजीनी स्तुति.

हे प्रजु ! सुर, असुर अने नरोए मस्तक उपर धारण करेलुं त्रण लोकना चक्रवर्त्ती एवा तमारुं शासन आ जगतमां विजय पामे ठे. हे जगवन् ! प्रथम त्रण ज्ञानने धारण करनारा, पठी मनःपर्यव ज्ञानने धरनारा अने अधुना केवळज्ञानवाळा एवा तमे अमने दिनपरदिन अधिका अधिक जोवामां आव्या गो. हे नाथ ! मार्गना वृक्षनी गयानी जेम विश्वने उपकार करनारुं तमारुं उज्वळ केवळज्ञान जय पामो. हे जगवान् ! ज्यां सुधी सूर्योदय थयो नथी त्यां सुधीज अंधकार रहे ठे, ज्यां सुधी केशरीसिंह आवतो नथी त्यां सुधीज गजेंद्रो मदांध रहे ठे, ज्यां सुधी कल्पवृक्ष प्राप्त थतुं नथी त्यां सुधीज दारिद्र रहे ठे, ज्यांसुधी वृष्टिकारक मेघ थतो नथी त्यां सुधीज जलनी तंगाश रहे ठे, अने ज्यां सुधी पूर्णचंद्र उगतो नथी त्यां सुधीज दिवसनो ताप रहे ठे, तेम ज्यां सुधी तमे जोवामां आवेला नथी त्यां सुधीज आ जगतमां कुबोध रहेलो ठे. जे प्राणीउ नित्य तमने जुए ठे अने सेवे ठे तेउनी हुं हर्षथी सर्व काल अनुमोदना करुं बुं.

हे प्रभु ! हालमां तमारा प्रसादथी तमारा दर्शननुं फल—उत्तम सम्यक्त्व मने यावज्जीवित निश्चलपणे रहेवारूप थाओ.

१५ श्री सुविधिनाथजीनी स्तुति.

धर्मरूपी हवेलीना दृढ स्तंभरूप, सम्यक ज्ञानरूपी अमृतना ऋहरूप अने जगतने आनंद आपवामां मेघरूप एवा हे त्रिभुवनपति! तमे जय पामो. हे जगदीश ! तमारा एक जुदाज प्रकारना अतिशयने अमे शुं कहीए के जे तमारा महात्म्य गुणथी खरीद थयेला आ त्रण लोक तमारा दासपणाने पामेल छे, जेवी रीते तमारा दासपणाथी हुं प्रकाशुं छुं—शोभुं छुं तेवी रीते मारा स्वर्गराजथी पण हुं शोभतो नथी, कारण के चरणना कडामां जडेलुं रत्न जेवुं शोभे छे तेवुं पर्वत उपर पडेलुं शोभतुं नथी. मोक्षे जवानी इच्छावाळा तमे वैजयंत विमान मोक्षस्थाननी नजीक छतां मोक्षने माटे भ्रांतिमां भटकता एवा लोकोने मार्ग बतावबाने माटेज अहीं आवेला छो. आ भरतक्षेत्ररूप गृहना तमे घणा लांबा काळना एक देवता छो तेथी तमारा आववाथी ए गृहमां रहीने धर्म गृहस्थनी जेम आजे निःशंकपणे आनंद पामो. हे विश्वनाथ! सर्व आ देवताओनो

समूह तमारा अतिशायी रूपनी अंदर अवतारपणाने पामी जाय छे, अर्थात् ते सर्वनुं रूप आपना रूपमां समाइ जाय छे. चंद्रनी ज्योत्स्ना जेवी तमारी कांतिना पूरमां स्पृहा सहित लीन थयेलां अमारां लोचनो आजे लांवे काले सारा नसीबने लीधे चकोर पक्षीनुं आचरण करे छे, वासगृहमां के सन्नामां वेसता अने चालता एवा मारे सर्व अर्थनी सिद्धिने आपनारुं तमारा नामरूप मंत्रनुं स्मरण थयां करो.

श्री सुविधिनाथजीनी स्तुति.

हे प्रभु! तमे जो वीतराग छो तो तमारा हाथ पगमां राग केम छे? तसे जो कुटिलताने छोडी दीधी छे तो तमारा केश कुटिल केम छे? तमे प्रजाना गोप छो, तो तमारा हाथमां दंड केम नथी? जो तमे निःसंग छो तो त्रैलोक्यना नाथ केम कहेवाओ छो? जो तमे ममता रहित छो तो सर्व उपर शा माटे दयालु छो? तमे जो अलंकार मात्रनो त्याग कर्यो छे तो तमने त्रण रत्न (ज्ञान, दर्शन, चारित्र) केम प्रीय छे? जो तमे सर्वने अनुकूळ छो तो मिथ्यादृष्टि उपर शा माटे द्वेष करो छो? जो तमे स्वभावे सरल छो तो पूर्वे छद्मस्थपणे केम रह्या हता? जो दयाळु छो तो कामदेवनो केम निग्रह कर्यो? जो

तमे निर्जय हो तो संसारथी केम जय पामो हो? जो तमे उपेक्षा करवामां तत्पर हो तो विश्वना उपकारक केम हो? जो अदीप्त हो तो जामंडलथी दीप्त केम हो? जो तमे शांत स्वजावी हो तो चिरकाळ केम तपो हो? जो रोष रहित हो तो कर्म उपर केम रोष राखो हो? आ प्रमाणे जेनुं स्वरूप जाणी शकातुं नथी जे मोटाथी पण मोटा छे अने जेने अनंत चतुष्टय सिद्ध थयेल छे एवा तमो जगवंतने हुं नमस्कार करुं छुं.

श्री शीतळनाथजीनी स्तुति.

हे प्रजु! इक्ष्वाकु कुलरूपी क्षीर समुद्रमां चंद्ररूप अने आ जगत्‌नी महानिद्रानो नाश करवामां सूर्य समान एवा तमे जयवंत वर्त्तो. हे नाथ! तमने जोवाने, तमारी स्तुति करवाने अने तमारुं पूजन करवाने माटे मारा शरीरमां अनंत नेत्रो, अनंत जिव्हाउ अने अनंत जुजाउ थाय एवी हुं इछा राखुं छुं. दसमा तीर्थंकर प्रजु! तमारा चरणकमलमां में आ पुष्पो स्थापन कर्यां तेथी हवे मने तेनुं फळ संपादन थइ चूक्युं छे. दुःखना तापथी पीडायेला लोकोने अमंद आनंद आपनारा एवा तमे आ मनुष्य लोकमां नवीन मेघनी जेम अवतरेला हो. वसंत ऋतुवडे वृक्षोनी जेम तमारा दर्शनथी

आजे सर्व प्राणीओ नवीन शोभावाळा थयेला छे. जे दिवसो तमारा दर्शनथी पवित्र छे तेज मारे दिवसो छे बाकीना जे दिवसो छे ते तो मारी कृष्ण पक्षनी रात्रि जेवा छे. आत्मानी साथे नित्यपणे परोवायेलां एवां प्राणीओनां कुकर्मो अयस्कांत मणिथी लोढानी जेम तमारा दर्शनादिकथी आजे जुदां पडी जाओ. आ लोकमां, स्वर्गमां के बीजे गमे त्यां रहुं तोपण तमनेज हृदयमां वहन करनारो हुं तमारुं वाहन थाउं एवी इच्छा राखुं छुं.

श्री शीतळनाथजीनी स्तुति.

हे त्रण भुवनोना पति! जे पुरुषो तमारा चरणकमलना नखनी कांतिना जालरूपी जलना प्रवाहमां स्नान करी करीने पोताना आत्माने पवित्र करे छे तेओने धन्य छे. सूर्यथी जेम आकाश, हंसथी जेम सरोवर अने राजाथी जेम नगर तेम तमाराथी आ भारत क्षेत्र शोभे छे. सूर्यनो अस्त अने चंद्रना उदयना अंतरमां अंधकारथी जेम प्रकाश पराभव पामे छे तेम नवमा दशमा बे प्रभुना अंतरमां मिथ्यात्वथी धर्म पराभव पाम्यो छे. विवेकरूपी लोचन वगरनुं आ जगत अंध थइ जाणे दिग्मूढ थयुं होय तेम

सर्व प्रकारे कुमार्गोमां प्रवर्त्ते छे. सर्व लोको भ्रांति पामीने अधर्मने धर्म बुद्धिथी, अदेवने देव बुद्धिथी, अने अगुरुने गुरु बुद्धिथी ग्रहण करे छे. एवी रीते आ जगत् नरकरूप खाडामां पडवाने जेवामां तैयार थयेलुं हतुं तेवामांज तेना पुण्योदयथी स्वाभाविक दयाना समुद्र एवा तमे अवतरेला छो, हे प्रभु! ज्यां सुधी तमारुं वचनरूपी अमृत आ लोकमां प्रसर्युं नथी त्यां सुधीज आ लोकमां मिथ्यात्वरूपी सर्प चिरकाल समर्थ थइ प्रवर्त्ते छे, पण घातिकर्मना क्षयथी जेम तमोने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं छे तेम तमारा उपदेशथी आ जगतने मिथ्यात्वनो नाश थइने समकितनी प्राप्ति थशे.

श्री श्रेयांसनाथ जिन स्तुति.

हे प्रभु! सर्व कल्याणकोमां श्रेष्ट तमारुं जन्म कल्याणक पवित्र भक्तिवाळा एवा मने कल्याणकारी थाओ. हे ईश! तमोने हुं केटलुं स्नात्र करावुं? तमारुं केटलुं पूजन करुं? अने तमारुं हुं केटलुं स्तवन करुं? मने तमारुं आराधन करवामां तृप्तिज थती नथी. हे प्रभु तमारा जेवा रक्षक थतां कुतीर्थकरूपी व्याघ्रथी त्रास पामेलो आ धर्मरूपी वृषभ हवे आ भरत क्षेत्रमां स्वेच्छाथी विचरो. हे देवाधिदेव! आजे सारे भाग्ये मारा हृदयरूपी

मंदिरमां तमे निवास करी तेने सनाथ करेलुं छे. जेवी रीते तमारा चरण नखनां किरणो मारा शिर आगल प्रसरवाथी अने आभुषणरूप थाय छे तेवी रीते आ मुगट विगेरे आभूषणो थतां नथी. हे त्रिजगन्नाथ ! तमारा गुणोनी स्तुति करतां मने जे प्रसन्नता थाय छे तेवी प्रसन्नता चारण भाटो मारी स्तुति करे त्यारे पण नथी. तमारी पासे भूमि उपर वेसतां जेवी मारी उन्नति थाय छे तेवी उन्नति सौधर्मा अंदर सिंहासनपर वेसतां थती नथी. हे प्रभु ! तमारा जेवा स्वामीनी परतंत्रतामां लांबो काल रहेवाने जेम हुं इच्छुं छुं तेवीरीते मारा राज्यनी स्वतंत्रतामां रहेवाने हुं इच्छतो नथी.

श्री श्रेयांसनाथजिन स्तुति.

हे परमेश्वर ! अखंड आनंदना झराने आपनारा अने मोक्षना कारणभूत एवा तमने मोक्षने अर्थे अमारो नमस्कार छे. तमारा दर्शन मात्रथीज प्राणी बीजां कर्मोने भुली जइ आत्मारामी थाय छे तो तमारी देशना सांभळवाथी तो शुं न थाय? आ संसाररूपी मरु देशमां तमारो अवतार थवाथी जाणे क्षीर समुद्र प्रगट्यो होय, कल्प-वृक्ष उग्युं होय के मेघ वरस्यो होय तेम जणाय छे. क्रूरकर्मरूप नगारा महो वडे पीडा

पामता एवा आ विश्वनुं रक्षण करवा माटे तमे अग्यारमा जिनेंद्र ज्योतिषयोना पति (चंद्र) रूपे उदय पाम्या छो, स्वजातथीज निर्मल इक्ष्वाकु राजाउनुं कुल जलवडे स्फाटिकनी जेम तमे विशेष निर्मल करेलुं छे. हे प्रभु! त्रण जगतना सर्व प्रकारना संतापने हरवाथी तमारुं चरणमूल समग्र प्रकारनी छायाउथी पण अधिक थाय छे. हे जिनेश्वर! तमारा चरणकमलमां भ्रमररूपे रहेतां मने एटलो बधो हर्ष प्राप्त थाय छे के जेथी जोगवने माटे के मोक्षने माटे मने स्पृहा रहेती नथी. हे जगन्नाथ! जवोजव तमारा चरणनुं मने शरण थजो एवी हुं प्रार्थना करुंछुं. तमारी सेवाथी शुं साधी शकातुं नथी.

श्री वासुपूज्यजिन स्तुति.

हे नाथ! चक्रवर्त्तीउना चक्रोथी, वासुदेवोना चक्रथी, इशानेंद्रना त्रिशूलथी, मारा वज्रथी, अने वीजा इंद्रोना अस्त्रोथी, पण जे कर्मो क्यारे पण जेदातां नथी ते कर्मो तमारा दर्शन मात्रथी जेदाइ जाय छे. क्षीर समुद्रनी वेलाथी, चंद्रादिकनी कांतिथी, मेघनी धाराउथी, गोशीर्ष चंदनना लेपनथी, अने कदलीउना घाटा उद्यानोथी, जे दुःखोनो परिताप समी जतो नथी ते तमारा दर्शन मात्रथी तत्काल शांतिने पामी जाय

छे, अनेक प्रकारना क्वाथो (उकाळा) थी, जात जातना चूर्णोथी, घणा प्रकारना लेपोथी, अनेक प्रकारनी शस्त्रक्रियाथी तथा बहु रीतना मंत्र प्रयोगोथी, जे रोगो छेदाता नथी ते रोगो तमारा दर्शन मात्रथी, तरत प्रलयने पामी जाय छे. हे प्रभु! वधारे शुं कहेवुं? टुंकामां एटलुं कहेवानुं छे के जे कांई आ जगतमां असाध्य छे ते तमारा दर्शन मात्रथी साध्य थइ जाय छे; माटे हे जगत्पति! आ तमारा दर्शननुं हुं ए फळ इच्छुं छुं के वारंवार मने तमारुं दर्शन थाउ.

श्री वासुपूज्यजिन स्तुति.

हे प्रभु! आ संसाररूपी अति भयंकर समुद्रमां एक तरफ मोहरूपी दुर्दिन प्रसरे छे, एक तरफ आशारूपी नवी नवी वेळाउ क्षणे क्षणे थया करे छे, एक तरफ मोटा मघरना जेवो दुर्वार कामदेव रहेलो छे, एक तरफ प्रचंम अने प्रतिकूळ पवनना जेवा पापरूप विषयो प्रवर्त्ते छे, एक तरफ मोटा मोटा आवर्त्त (भमरी) नी पेठे क्रोधादिक उग्र कषायो रहेला छे, एक तरफ मोटा खमकनी जेवा उत्कट रागद्वेष रहेला छे, एक तरफ मोटा उर्मिउनी पेठे विविध दुःखोनी परंपरा छे, एक तरफ वमवानळनी जेम

च० आर्त्त तथा रौद्रध्यान थयां करे ढे, एक तरफ वेत्रवल्लीना जेवी स्खलना करनारी ममता स्तु०
रहेली ढे, अने एक तरफ उद्धत नक्रोना समूहनी जेम घणा व्याधिउं आव्या करे ढे;
१ए तेथी हे प्रजु! एवा दारुण संसाररूपी सागरनी अंदर पमेला प्राणीउंनो हवे आप उ-
द्धार करो. हे जगत्पति! तमारुं केवळज्ञान अने केवळदर्शन वृक्षना पुष्प अने फळनी
जेम परना उपकारने माटेज ढे. आज मारो जन्म वैजव कृतार्थ थयो ढे, कारण के जेथी
तमारी पूजानो महोत्सव करवानो मने लाज प्राप्त थयो ढे.

श्री विमलनाथजिन स्तुति.

हे जगत्पति! चो तरफ प्रसरता मोहरूपी अंधकारथी अति कोप करनारा जटाधारी, तापसरूपी निशाचरोथी बुद्धिरूप सर्वस्वने हरनारा, चार्वाकरूपी तस्करोथी मायाकपटमां घणा निपुण एवा ब्राह्मणरूपी शियाळोथी मंमळी थईने फरता, कोलाचार्यरूपी नाहरोथी अनेक प्रकारनी चेष्टा करता पाखंमीरूप घुवम पक्षीउंथी, अने विवेकरूप नेत्रने लुप्त करनारा मिथ्यात्वरूपथी तथा सद्भूत पदार्थना सर्व प्रकारना अज्ञानथी आ समय घणा काळथी रात्रिनी जेम आ जरतक्षेत्रमां प्रवर्त्ततो हतो, तेमां आप जेवा १ए

स्वामीरूप सूर्यनो उदय थतां अत्यारे प्रजातकाळ थयेलो छे. नीचा स्थानमां जनारी आ संसाररूपी नदी के जे अत्यारसुधी नीचजनोए उल्लंघन करी शकाणी नथी ते हवे तमारा चरणरूप सेतुने प्राप्त करी सुखे उल्लंघन करवा योग्य थई छे. हुं धारुं छुं के जे नव्यजनो तमारा शासनरूपी निश्रेणी उपर चड्या छे ते थोडा काळमां उंचा लोकाग्र उपर पण पनी चुक्याज छे, ग्रीष्मऋतुना तापथी तपेला वटेमार्गुउने जेम वर्षाद प्राप्त थाय तेम स्वामी वगरना एवा अमोने चीरकाळे तमे एक उत्तम स्वामी प्राप्त थयेला छो.

श्री विमलनाथजिन स्तुति.

हे देव! वर्षाकाळना जळथी पृथ्वीना कादवनी जेम तमारा दर्शनथी आ जगतना प्राणीउनुं सांसारिक दुःख नाश पाम्युं छे. हे स्वामी! तमारा दर्शनना कारणरूप आजनो दिवस घणो पवित्र छे के जेमां दुष्कर्मथी मलिन एवा अमे निर्मळ थइशुं. अमारी दृष्टिउए शरीरना सर्व अंगोमां राजापणुं प्राप्त करेलुं हतुं, तेउए आज तमारुं दर्शन प्राप्त करी पोतानी बराबर शुद्धि करेली छे, तमारा चरणना संपर्कथी आ जरतक्षेत्रनी जूमि पवित्र थइ गइ छे तो तमारा दर्शन तेउना पापने नाश करे तेमां शुं कहेवुं? हे

प्रभु! घूवड पक्षीओनी जेम मिथ्यादृष्टि पुरुषोने तमारुं दर्शन केवळज्ञानरूप सूर्यना प्रकाशना अभावनुंज कारण थशे. तमारा दर्शनरूप अमृतपानवडे जेमनां शरीर उल्लास पामेलां छे एवा प्राणीओनां कर्मबंध आजे अवश्य तुटी जशे. विवेकरूपी दर्पणने साफ करवामां तत्पर अने कल्याण वृक्षना बीज जेवा तमारा चरणना रजकणो अमोने पवित्र करो. हे स्वामी! अमृतना गंडूष जेवां तमारां देशनावचनो संसाररूप मरुदेशमां मग्न थयेला अमोने स्वस्थ करवाने माटे थाओ.

श्री अनंतनाथजिन स्तुति.

हे नाथ! जेओ तमारी आगळ भूमिपर आळोटी पृथ्वीनी रजथी व्याप्त थाय छे तेओने गोशीर्ष चंदननो अंगराग दुर्लभ नथी. जेओ भक्तिवडे एक पुष्प पण तमारा मस्तकपर चढावे छे तेओ मस्तकपर छत्र धारण करीने निरंतर विचरे छे, तमारा अंग उपर जेओए एकवार पण अंगराग कर्यो होय तो तेओ देवदूष्य वस्त्रने धारण करनारा थाय तेमां कांइ पण शंका नथी. जेओ तमारा कंठ उपर एकवार पण पुष्पमाळा धरे छे तेओना कंठ उपर देवतानी स्त्रीओनी भुजलताओ वींटाइ वळे छे. जेओ तमारा अति निर्मळ गुणोनुं

एकवार पण वर्णन करे तेउ लोकमां अतिशयवान थइ देवताउनी स्त्रीउथी गवाय छे, जेउ चारु चतुराइथी तमारी आगळ नृत्यादिक चेष्टा करे छे तेउने ऐरावत हाथीना स्कंध उपर आसन मळवुं दुर्लभ नथी. हे देव! जेउ रात्रि दिवस तमारा परमात्म स्वरूपनुं ध्यान करे छे तेउ हमेशां आ लोकमां सर्वने ध्यान करवा योग्य थाय छे. हे प्रभु! तमने स्नात्र, अंगराग, नेपथ्य, ने आभूषण विगेरे धारण कराववामां तमारा प्रसादथी हमेशां मारो अधिकार रहो.

श्री अनंतनाथजिन स्तुति.

हे प्रभु! ज्यां सुधी तमे अधीश्वर थया नथी त्यां सुधीज प्राणीउना मनरूपी धनने विषयरूप तस्करो चोरी शके छे, लोकोनी दृष्टिने अंध करनारुं अने विस्तार पामतुं कोपरूपी अंधारुं तमारा दर्शनरूप अमृतांजनथी दूर नाशी जाय छे, ज्यां सुधी अज्ञ प्राणीउ तमारा वचनरूप मंत्रने सांभळता नथी त्यां सुधीज तेमने मानरूपी भूत वळग्या करे छे, तमारा प्रसादथी मायारूप वेलीने तोडी सरलतारूप वाहनमां बेसनारा प्राणीउने मुक्ति कांइ पण दूर नथी, जेम जेम प्राणीउ निःस्पृहताथी तमारी उपासना

२० करे ठे तेम तेम तमे तेमने उत्कृष्ट फळ आपो गो, ए मोटुं आश्चर्य ठे. आ संसार-
रूपी सरिताना राग अने द्वेष ए वे प्रवाह ठे, तेनी मध्यमां द्वीपनी जेवा मध्यस्थप-
२१ णामां तमारा शासनथी रहेवाय ठे. मोक्षद्वारमां प्रवेश करवाने उत्सुक मनवाळा प्राणी-
उने मोहरूपी अंधकारमां तमे जे दीपकपणुं धारण करो गो तेवुं बीजो कोइ धारण करतो
नथी, माटे हे परमेश्वर! अमारा उपर प्रसन्न थाउ के जेथी अमे विषय, कषाय, राग
द्वेष अने मोहादिकथी अजित थइए.

श्री धर्मनाथजिन स्तुति.

परम ध्यान करवा योग्य स्वरूपवाळा अने परम ध्यान करनारा एवा पन्नरमा ती-
र्थंकरने मारो नमस्कार ठे. हे प्रभु! देव अने दानवथी हुं मनुष्योनी मोटी महत्ता मानुं
छुं, कारण के त्रण लोकने वंदन करवा योग्य एवा तमे मनुष्यपणामां प्रगट थयेला गो.
हे नाथ! मोक्षरूप साधनने साधी लेवा माटे तमारुं शिष्यपणुं ग्रहण करवानी इच्छावाळा
एवा मने हमणांज आ दक्षिण भारतवर्षमां मनुष्यपणुं प्राप्त थाउ. जे प्रमादीउने तमारा
चरणनुं दर्शन थतुं नथी तेवा स्वर्गीउ सुखी ठतां पण तेमनामां अने नारकी जीवोमां

कांइ पण भेद नथी. हे प्रभु! ज्यां सुधी सूर्यनो जेम तमारो उदय थयो नहतो त्यां सुधीज घुवड पक्षीनी जेम कुतीर्थीउ बोली शकता हता, हवे वरसादथी सरोवरनी जेम तमारी धर्मदेशनारूप जलवडे आ भरतार्द्ध थोडाकाळमां पूर्ण भराइ जशे. हे परमेश्वर! राजा जेम शत्रुना देशने मुक्त करी तेनुं राज्य तेने आपे तेम तमे अनंत प्राणीउने मुक्त करीने अचळ सुख आपशो. हे भगवन्! देवलोकमां पण भ्रमरानी पेठे तमारा चरण कमळमां लीन थयेला चित्तवडे मारा दिवसो निर्गमन थाउ.

श्री धर्मनाथजिन स्तुति.

जगतना नेत्ररूप, चकोर पक्षीने आनंद आपवामां चंद्ररूप अने मिथ्यात्वरूप अंधकारने दूर करवामां सूर्यरूप एवा हे जगत्पति धर्मनाथ! तमे विजय पामो. हे नाथ! तमे छद्मस्थपणे चिरकाळ रह्या ते छतां छद्म (कपट) रहित छो अने अनंतदर्शन छतां अन्य दर्शनने बाध करनारा छो. तमारी देशनारूप जळना पूरथी जेमनो आत्मा प्लावित थयेलो छे ते प्राणीउनी कर्मनी मलीनता तत्काळ धोवाइ जाय छे. जेवी रीते तमारा चरण मूळनी छायाथी प्राणीउना संताप शमी जाय छे तेवी रीते मेघ अने वृ-

क्नो छायामां पण संताप शमतो नथी. हे प्रभु! तमारा दर्शन करवाथी थयेला निःस्पंद शरीरवाळां प्राणीओ जाणे कोतरेली पुतळीओ होय तेवां जणाय छे. हे जगत्बंधु! आ त्रण जगत स्वभावादिनी केटलीक विरुद्धताथी जुदुं जुदुं छे पण आजे तमारा प्रभावथी एकत्र मळी जइने बंधुरूपे थइ गयेलुं छे. आ त्रिखंड भरतक्षेत्रना मूळस्थानना देवतारूप हे प्रभु! जेमने बीजुं कोइ शरण नथी एवा अमारी तमे रक्षा करो. हे जगत्पति! अमे तमने वारंवार प्रार्थीए छीए के हमेशां तमारा चरणकमळमां अमारुं मन भ्रमरनी चेष्टा करो.

श्री शांतिनाथजीनी स्तुति.

हे भगवन्! विश्वजनना हितकारी, अद्भुत समृद्धिवाळा अने आ संसाररूप मरुदेशना मार्गमां छायावाळा वृक्ष जेवा तमोने नमस्कार छे. हे परमेश्वर! आजे सारे भाग्ये तमारुं दर्शन थवाथी मारे पूर्वसंचित पापरूप रात्रिनो प्रभात समय थयो छे. हे जगत्पति! जेनावडे तमारां दर्शन थयां ते नेत्रने धन्य छे अने जेनावडे तमारो स्पर्श थयो ते हाथने ते करतां विशेष धन्य छे. हे प्रभु! कोइवार तमे विद्याधरोना मोटी

ऋद्धिवाळा चक्रवर्ती थया छो, कोइवार उत्कृष्ट बळवाळा बळदेव थया छो, कोइवार अच्युतेंद्र थया छो, कोइवार महाज्ञानी चक्रवर्ती थया छो, कोइवार ग्रैवेयकना आभुषण भूत अहमिंद्र थया छो, कोइवार महासत्ववान् अने अवधिज्ञानी थया छो, अने कोइ वार सर्वार्थसिद्ध विमानना अलंकाररूप अहमिंद्र थया छो, हे परमेश्वर! कया कया जन्ममां तमे उत्कृष्ट नथी थया. छेवटे आजे तिर्थंकरना जन्मथी तमारा वर्णननी वाणी परिपूर्ण थइ गइ छे. तमारा गुणनुं वर्णन करवाने हुं समर्थ नथी तेथी मात्र हुं मारोज स्वार्थ कही बतावुं छुं के हे नाथ! प्रत्येक भवने विषे तमारा चरण कमळमां मारी पूर्ण भक्ति हजो.

श्री शांतिनाथजीनी स्तुति.

हे जगत्पति! दिनना उत्सवने करनार ज्ञान सूर्यरूप तमारा उदयथी आजे जगतनो कल्याणदशामां प्रवेश थयो छे. हे जगद्गुरु अमारा जेवाने पूर्व पुण्यना योगथीज कल्याण प्राप्तिना चिंतामणीरूप तमारा कल्याणकना उत्सवो प्राप्त थाय छे. हे जगन्नाथ! तमारा दर्शनरूप जलना तरंगो सर्व प्राणीओना कषायादि मळथी भरेला

मनने धोइ नांखे छे. कर्मने छेदवाने मोटो यत्न करी तने जे पूर्वे तिर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं तेज तमारुं निःस्वार्थ परोपकारीपणुं छे. आ जगतमां घोर संसारथी जय पामेला प्राणीओने तमारुं आ समोसरण मोटा किल्लानी पेठे शरणरूप छे. हे प्रभु! तमो सर्व जीवोना सर्वभाव जाणो छो अने सदा हितकारी छो तेथी तमारी पासे कांइ पण प्रार्थना करवानी जरुर नथी. तथापि एटली प्रार्थना करुं छुं के जेम तमे पृथ्वीमां विहार करी गाम, आकर, अने नगर विगेरेने क्षणे क्षणे छोडी घोओ तेम कोइ वखत पण मारा हृदयने छोडशो नहि. अने हे भगवन्! तमारा प्रसादथी निरंतर तमारा चरण कमळमां मारुं चित्त भ्रमररूप थयेलुं रहे एवी रीते मारो सर्व काळ निर्गमन थजो.

श्री कुंथुनाथजीनी स्तुति.

हे जगत्पति! आजे क्षीरसागर प्रमुख जळाशयोनां जळ, पद्म विगेरे द्रहोनां जळ अने कमळो, क्षुद्र हिमालय विगेरे पर्वतोनी औषधीओ, भद्रशाळ प्रमुख वनना पुष्पो अने मलयाचलनी आसपासनी भूमिनां चंदन ए सर्वे तमारा स्नात्रमां उपयोगी थवाथी कृतार्थ थयां छे. अने हे देव! तमारा जन्म कल्याणकनो महोत्सव करवाथी आ

वधा देवताओनुं ऐश्वर्य पण कृतार्थ थयुं छे, तमारा स्नात्रथी अलंकृत थयेलो आ मेरु-
गिरि आजे तमारा प्रासादनी जेम सर्व पर्वतोमां उत्कृष्ट अने तीर्थरूप थयेलो छे. हे भुव-
नेश्वर! तमारा दर्शनथी अने स्पर्शथी आजे नेत्र अने हाथ खरेखरा नेत्र अने हाथ
थया छे. हे नाथ! आजे मारुं स्वाभाविक अवधिज्ञान पण सफळ थयेलुं छे के जेनावडे
हे प्रभु! तमारो जन्म जाणीने अमे जन्मोत्सव कर्यो छे. हे प्रभु! जेम हमणां स्नात्रकाळे
तमे मारा हृदयपर रह्या हता तेम हृदयनी अंदर पण चिरकाळ रहो.

श्री कुंथुनाथजीनी स्तुति.

चतुर्विध धर्मनो उपदेश करनार, चार शरीरवाळा, चार मुखवाळा अने चोथा
पुरुषार्थ (मोक्ष) ना स्वामि एवा तमारी अमे स्तुति करीए छीए. हे जगदीश्वर! तमे
निःसंगपणाथी चौद महारत्नोनो त्याग करी त्रण निर्दोष रत्नोने धारण करो छो. हे नाथ!
तमे आखा विश्वना मनने हरो छो ते छतां तमे मनरहित छो, अने उत्तम सुवर्णना जेवा
वर्णवाळा छतां चंद्रना जेवुं शीतळ तमारा स्वरुपनुं ध्यान थाय छे. हे प्रभु! तमे निःसंग
छतां मोटी ऋद्धिवाळा छो, ध्यान करवा योग्य छतां ध्याता छो, कोटि देवोथी वींटायला

छतां कैवल्यनेज जजो छो, पोते वितराग छतां विश्वनो तमारापर राग वधारो छो अने अकिंचन छतां जगत्ने परम समृद्धिने माटे थाओ छो. हे अर्हन! जेनो प्रभाव जाणी शकातो नथी अने जेनुं रुप कळवामां आवतुं नथी एवा आप दयाळु सत्तरमा भगवंतने अमारो नमस्कार छे. हे विभु! तमने प्रणाम करवो ते पण मनुष्योने अचिंत्य चिंतामणी रूप थाय छे तो तमारुं मनथी, ध्यानथी अने, वचनथी स्तवन करतां शुं न थाय? हे प्रभु! तमारा स्तवनमां, प्रणाममां, ध्यानमां, अने तमाराज विषयमां मारी प्रवृत्ति सदा रहो. बीजा मनोहर पदार्थोनी अमारे कांई जरुर नथी.

श्री अरनाथजीनी स्तुति.

अढार दोषरहित अने अढार प्रकारना ब्रह्मचर्यने धारण करनारा पुरुषोने ध्यान करवा योग्य एवा अढारमा तीर्थंकरने मारो नमस्कार थाओ. हे तीर्थनाथ! जेवी रीते तमे गर्भमांथीज त्रण ज्ञान धारण करो छो, तेवी रीतेज आ त्रण जगत्ने पण धारण करो छो. हे स्वामि! राग द्वेषादि तस्करो—मोहरूप अवस्वापिनी निद्रा मुकीने आ त्रण जगतने लांबा वखतथी लुंटी ले छे माटे हवे सत्वर तेनी रक्षा करो. हे नाथ! जेम श्रांत

थइ गयेलाउं रथने, तृष्णातुरी नदीने, तापथी तपेलाउं वृक्षनी छायाने, डुबी जताउं वाहाणने, रोगीउं ओषधने, अंधकारथी अंध थयेलाउं दीपकने, हिमथी पीडित थयेलाउं सूर्यने, मार्ग जूली गयेलाउं जोमीआने, अने व्याघ्रथी जय पामेलाउं अग्निने प्राप्त करे तेम अनाथपणाने लीधे घणा काळथी विधुर थइ गयेला अमोए अत्यारे तमारा जेवा तीर्थपति नाथने प्राप्त करेला छे. तमारा जेवा स्वामीने प्राप्त करी आ सुर, असुर अने मनुष्यो हर्षथी न समाता होय तेम पोत पोताना स्थानथी अहीं आवे छे. हे नाथ! हुं तमारी पासे बीजुं कांइ पण मागतो नथी मात्र एटलुंज मागुं छुं के तमे जवो जव मारा नाथ थजो.

श्री अरनाथजीनी स्तुति.

त्रण जुवनना अधीश, सर्व विश्वपर वात्सल्य जावना धरनार, करुणाना सागर अने अतिशयोथी शोजित एवा हे प्रजु! जय पामो. हे नाथ! जेम निष्कारण जगतना उपकारने माटे सूर्य पोताना सकळ कीरणोथी विश्वने प्रकाश करे छे, जेम चंद्र पोतानी ज्योत्स्नाथी विश्वनो संताप हरे छे, जेम वर्षाऋतु मेघना जलथी जगतने जीवन आपे

छे, जेम वायु पोतानी निरंतरनी गतिथी जगतने आश्वासन करे छे, तेवी रीते निःकारण त्रण लोकना उपकारने माटेज तमारी प्रवृत्ति जय पामे छे. हे स्वामि! जे आ जगत अत्यार सुधी अंधकारमय अने अंध थइ रह्युं हतुं, ते तमाराथी हवे प्रकाशमय अने नेत्रवाळुं थयेलुं छे. हे नाथ! हवेथी नरकनो मार्ग खीलाइ जशे, तिर्यंच योनिमां पण थोडी गति प्रवर्त्तशे, स्वर्गलोक एक सीमाडाना बीजा गामडा जेवुं थशे, अने मुक्ति जे घणी दूर छे ते पण नजीक थशे. हे प्रभो! विश्वना उपकारने माटे तमे विहार करता प्राणीओने असंभवित कल्याण पण शुं शुं प्राप्त नहीं थाय? अर्थात् सर्व कल्याण प्राप्त थशे.

श्री मल्लिनाथजिन स्तुति.

त्रण ज्ञानना निधि अने त्रण जगतमां प्रधान एवा ओगणीसमा तीर्थंकरने हुं नमस्कार करुं छुं. हे नाथ! मारे भाग्ये तमारा दर्शनथी हुं चिरकाळे पण अनुग्रहीत थयो छुं, केमके साधारण पुण्यथी अर्हंतप्रभुनुं साक्षात् दर्शन थतुं नथी. हे देव! आजे तमारा जन्मोत्सवना दर्शनथी देवताओनुं देवत्व सफळ थयुं छे. एक तरफ अच्युत इंद्रनी

उपर अने बीजी तरफ अन्य प्राणीउनी उपर समान अनुग्रह करवानी बुद्धिवाळा हे प्रभु! संसारमां पमता एवा अमारुं रक्षण करो. पृथ्वीना सुवर्ण मुगट जेवा आ तमे इंद्र नीलमणिनी जेम अतिशय शोभो छो. इच्छा कर्या वगर मात्र स्मरण करवाथी पण तमे मोक्षने माटे थाउ छो तो दर्शन अने स्तुति करीने तमारी पासे तेथी अधिक फळ शुं मागीए? एक तरफ बधा धर्मकार्यो अने एक तरफ तमारुं दर्शन ते बन्नेनी फळ प्राप्ति तरफ जोतां, तमारुं दर्शन अधिक फळ प्राप्तिना साधनरूप जणाय छे. तमारा चरणकमळमां आलोटतां जेवुं सुख मने थाय छे तेवुं सुख इंद्रपणामां, अहमिंद्रपणामां के मोक्षमां पण मने थतुं नथी, एम हुं मानुं छुं.

श्री मल्लिनाथजीनी स्तुति.

हे अर्हन! जेउ सारे भाग्ये तमारा चरणमां नमे छे तेउना ललाट उपर जे तमारा चरण नखनां कीरणो पमे छे, ते आ भयंकर भवथी भय पामेला प्राणीउने रक्षाना तिलक जेवां थाय छे. हे प्रभु! तमे जन्मथी ब्रह्मचारी होवाथी तमारे दीक्षा पण जन्मथीज छे अने तेथी तमारो बधो जन्म व्रतपर्यायमांज छे, एम हुं मानुं छुं. हे नाथ! ज्यां त-

मारुं दर्शन नथी ते घर श्या कामनुं छे, अने तमारा दर्शनथी पवित्र एवुं आ वधुं नूमितळ कल्याणरूप छे. हे प्रज्ञु! आ संसाररूप शत्रुथी जय पामेला मनुष्य, देव अने तिर्यंच प्राणीओने तमारुं समोसरण एक शरण आपनार किल्लाजूत छे तमारा चरणमां प्रणाम कर्या सिवायना बीजा जे कांइ कर्मो छे ते सर्व कुकर्मो छे, जेओ आ संसारनी स्थितिना कारण एवां कर्मोने प्रसव्यांज करे छे. तमारा ध्यान विना जे बीजां ध्यान छे ते सर्व डुर्ध्यान छे, जेनाथी पोताना तंतुथी करोळीयानी जेम पोतानो आत्माज बंधाय छे, तमारा गुणनी कथा विना जे कथा छे ते सर्व डुष्ट कथा छे, जेनाथी वाणीवमे तित्तर पक्षीनी जेम प्राणी विपत्तिने पामे छे. हे जगद्गुरु! तमारा चरणकमळनी सेवाना प्रजावथी आ संसारनो उछेद थाओ अथवा जवे जवे तमारी जक्ति थया करो.

श्री मुनिसुव्रतनाथजीनी स्तुति.

हे प्रज्ञु! भ्रमररूपी अमोए आजे आ अवसर्पिणी काळरूप सरोवरमां कमळ जेवा तमोने सारा जाग्ये घणे काळे प्राप्त कर्या छे. हे देव! अत्यारे तमारा स्तोत्रथी, ध्यानथी, अने पूजादिकथी अमारां वाणी, मन, अने शरीरे कल्याणकारी फळ मेळव्युं छे. हे

नाथ ! जेम जेम तमारे विषे मारी भक्ति विशेष विशेष थाय छे तेम तेम मारां पूर्वकर्मो लघु लघु थतां जाय छे. हे स्वामि ! महा पुण्यनुं कारण एवुं तमारुं दर्शन जो अमने न थयुं होत तो अमो के जे अविरत छीए तेमनो जन्म अधो निरर्थक थइ जात. हे प्रभु ! तमारा अंगना स्पर्शथी, तमारी स्तुति करवाथी, निर्माल्य सुंघवाथी, तमारा दर्शनथी, अने तमारा गुणगान सांभळवाथी, अमारी पांचे इंद्रियो कृतार्थ थइ गइ छे. वर्षाऋतुना मेघनी जेम नेत्रने आनंद आपनार अने नीलरत्न जेवी कांतिवाळा तमारावडे आ मेरु-गिरिनुं शिखर शोभे छे. जो के तमे मात्र भारतवर्षमां रह्या छो ते छतां सर्व ठेकाणे व्याप्त थयेला जणाओ छो, केमके सर्व स्थानके रहेला प्राणीओना भवनी पीडानो तमे नाश करो छो. अहींथी च्यवनकाळे पण मने तमारा चरणनुं स्मरण थजो कारण के, पूर्व जन्मना संस्कारथी भवांतरमां पण ते (स्मरण) ज मने थयां करे.

श्री मुनिसुव्रतनाथजीनी स्तुति.

हे जगत्पति ! जे तमारा गुणोनुं वर्णन करवाने अमारा जेवा पण तैयार थाय छे ते तमारा चरण दर्शननोज प्रभाव छे. हे परमेश्वर ! देशना समयमां शास्त्ररूप वत्सने प्र-

च० सव आपनारी तमारी वाणीरूप गायने अमे वंदन करीए छीए. जेम चीकणा पदार्थना
योगथी पात्र पण चीकणुं थाय छे तेम तमारा गुणने ग्रहण करवाथी माणस पण तत्काळ स्तु०
२१ गुणी थइ जाय छे. जेउ अन्य कर्मनो त्याग करी तमारी देशना सांभळे छे तेउ क्षण-
वारमां पूर्वकर्मोने पण त्याग करे छे. हे देव! तमारा नामरूप रक्षा मंत्रथी संवर्मित
थएला आ जगतने हवे पछी पापरूप पिशाच वळगी शकशे नहीं. हे नाथ! विश्वने अ-
भय आपनार एवा तमे विद्यमान छतां हवे कोईने कांइ पण भय नथी, पण ज्यारे अमे
अमारा स्थानमां जइशुं त्यारे तमारो वियोग थशे ते अमने भय छे. हे स्वामि! तमारी
पासे साश्वत वैरथी अंध थयेला बहिरंग शत्रुउज मात्र शमी जाय छे एम नहीं पण
अंतरंग शत्रुउ जे काम क्रोधादि छे ते पण शमी जाय छे. हे प्रभु! तमारा नामनी स्मृति
के जे आ लोक अने परलोकना वांछित मनोरथने आपवामां कामधेनु तुल्य छे ते हुं गमे
त्यां रहुं तोपण मने प्राप्त थया करजो.

श्री नमिनाथजिन स्तुति.

हे परमेश्वर! मोक्ष मार्गना कहेनार, सर्व कर्मनो संहार करनार, अनेक कपायो २३

ने प्रहार करनार, एवा तमे जय पामो. हे जगद्गुरु! कुमतने टाळनार, जगतने दोरनार (नायक) अने सद्बोधने प्रवर्त्तावनार एवा तमने नमस्कार करुं छुं. सर्व विश्वने ऐश्वर्य ने आपनार, विश्वना पापनो तिरस्कार करनार, अविकारी अने उपकारी एवा तमाराथी आ वधुं जगत सनाथ छे, धर्मना बीजने वावनार, अतिशय संपत्तिने धरनार अने श्रुत स्कंधना रचनार एवा तमने नमस्कार छे. कुमार्गथी निवृत्त करनार, मुक्ति मार्गने बतावनार, अने सर्वने उपदेश करनार, एवा तमाराथी हवे धर्मनी उत्पत्ति थशे. नवीन तीर्थनी प्रतिष्ठा करनार, तप संपत्तिने आचरनार, अने जगतना अधिष्ठाता एवा तमारा अमे किंकर छीए. हे त्रैलोक्यशरण प्रभु! मोक्ष सुखने आपनार अने विश्वने अभय देनार एवा तमारे शरणे हुं प्राप्त थयो छुं. हे जगत्पति! जेम तमे आ भवमां मारा स्वामि थया छो, तेवी रीते भवांतरमां पण मारा स्वामि थाओ. ए सिवाय बीजो कांइ मनोरथ नथी.

श्री नमिनाथजिन स्तुति.

हे प्रभु! तमे केवळज्ञानरूप नेत्रथी आ वधा जगतने जुओ छो जेथी त्रण नेत्रवाळा

तमने नमस्कार छे. पांत्रीश अतिशय सहित वचनवाळा अने चोत्रीश अतिशयवाळा परमेष्टि स्वरूप तमने नमस्कार छे. हे नाथ! मालव कौशिकी छे मुख्य जेमां एवा ग्राम अने रागथी मनोहर अने सर्व भाषाने अनुसरनारी तमारी वाणीनी अमे उपासना करीए छीए. गरुडना दर्शनथी जेम दृढ एवा पण नागपाश तुटी जाय तेम तमारा दर्शनथी प्राणीओना दृढ कर्मपाश पण तुटी जाय छे. तमारा दर्शनथी प्राणीओ जाणे मोक्षनी निःश्रेणी होय तेवी गुणठाणानी श्रेणीपर शनैः शनैः चडे छे. हे स्वामि! सांभळेला, संभारेला, स्तुति करेला, ध्यान करेला, जोयेला, स्पर्शेला, अने नमस्कार करेला, तमे जे ते प्रकारे सुखने माटेज थाओ छो. हे स्वामि! अमारा पुर्वना पुण्यानुबंधी पुण्यज छे के जेथी असाधारण सुख आपनारा तमे आजे दृष्टिगोचर थया छो. हे नाथ! अमारा स्वर्ग राज्य विगेरे सुखनुं गमे तेम थवो थाओ पण तमारी देशनानी वाणी कदी पण अमारा हृदयमांथी जशो नहि.

श्री नेमिनाथजिन स्तुति.

हे मोक्षगामी अने शिवादेवीनी कुक्षिरूप शुक्तिमां मुक्तामणि समान प्रभु! तमे

कल्याणना एक स्थानरूप अने कल्याणना करनारा छो. जेमनो समिपेज मोक्ष रहेलुं छे एवा, समस्त वस्तुओ जेमने प्रगट थयेल छे एवा अने विविध प्रकारना ऋद्धिना निधानरूप बावीसमा तीर्थंकर! तमने नमस्कार थाओ. तमे चरम देहधारी जगद्गुरु छो, तमारा जन्मथी हरिवंश अने आ भरतक्षेत्रनी भूमि पण पवित्र थइ छे. हे त्रिजगद्गुरु! तमेज कृपाना एक आधार छो, ब्रह्म स्वरूपना एक स्थान छो, अने ऐश्वर्यना अद्वितीय आश्रय छो. हे जगत्पति! तमारा दर्शने करीनेज अति महिमावडे प्राणीओना मोहनो विध्वंस थवाथी आपनुं देशना कर्म सिद्ध थाय छे. हरिवंशमां अपूर्व मुक्ताफळ समान हे प्रभु! तमे कारण विना त्राता, हेतु विना वत्सल अने निमित्त विना भर्ता छो. अत्यारे अपराजित विमान करतां पण भरतक्षेत्र उत्तम छे, कारण के तेमां लोकोना सुखने माटे बोधिना आपनार एवा आप अवतर्या छो. हे भगवंत! तमारा चरण निरंतर मारा मानसने विषे हंसपणाने भजो अने मारी वाणी तमारा गुणनी स्तवना करवा वडे चरितार्थ (सफळ) थाओ.

श्री नेमिनाथजिन स्तुति.

हे जगन्नाथ! सर्व विश्वना उपकारी, जन्मथी ब्रह्मचारी, दयावीर अने रक्षक एवा

तमने अमारो नमस्कार छे. हे स्वामि! चोपन दिवसे शुक्लध्यानथी तमे घातीकर्मनो घात कर्यो ते जाग्य योगे घणुंज सारुं थयुं छे. हे नाथ! तमे केवळ यदु कुळनेज शोजाव्युं छे एम नथी पण केवळज्ञानना आलोकथी सूर्यरूप एवा तमे त्रैलोक्यने पण शोजाव्युं छे. हे प्रजु! आ संसारसागर के जे अपार अने अथाग छे ते तमारा प्रसादथी गोठण मात्र ऊंडो अने गायनां पगलां मात्रज विस्तारवाळो थइ जाय छे. हे नाथ! सर्वनुं हृदय ललनाउनां ललित चरित्रथी जेदाय छे पण आ जगत्मां तमे एकज तेनाथी अजेद्य अने वज्रना जेवा हृदयवाळा गो, बीजुं कोइ तेवुं नथी. हे प्रजु! तमने व्रत लेवामां निषेध करनारी जे बंधुउनी वाणी थइ हती ते अत्यारे तमारी आ समृद्धि जोवाथी पश्चातापने माटे थाय छे, ते वखते डुराग्रही बंधु वर्गथी अमारा जाग्यबळेज तमे स्खलित थया नहि ते बहु सारुं थयुं, हवे जगत्ना पुण्यथी जेने अस्खलित केवळज्ञान उत्पन्न थयेलुं छे एवा तमे अमारी रक्षा करो. हे देव! ज्यां त्यां रहेता अने जेम तेम करता एवा पण मारा हृदयमां तमे रहेजो. बीजानी मारे कांइ जरुर नथी.

श्री पार्श्वनाथजिन स्तुति.

प्रीयंगु वृक्षनी जेवा नील वर्णवाळा, जगत्ना विघ्नना हेतुभूत अने दुस्तर संसाररूप सागरमां सेतुरूप एवा तमने हुं नमस्कार करुं छुं. ज्ञानरूपी रत्नना कोश (भंडाररूप) विकसित कमळ जेवी कांतिवाळा अने भव्य प्राणीरूप कमळमां सूर्य जेवा हे भगवंत! हुं आपने नमस्कार करुं छुं. फळदायक एवा एक हजारने आठ नर लक्षणने धारण करनारा अने कर्मरूप अंधकारनो नाश करवामां चंद्र जेवा तमने मारो नमस्कार छे. त्रण जगत्मां पवित्र, ज्ञानादि रत्नत्रय धारण करनार, कर्मरूप स्थळने खोदवामां खनित्र समान अने श्रेष्ठ चरीत्रना धारक एवा तमने मारो नमस्कार छे. सर्व अतिशयना पात्र अति दयावान अने सर्व संपत्तिना कारणभूत एवा हे परमात्मा तमने मारो नमस्कार छे. कषायने दूर करनार, करुणाना क्षीरसागर अने राग द्वेषथी विमुक्त एवा हे मोक्षगामी प्रभु! तमने मारो नमस्कार छे. हे प्रभु! जो तमारा चरणनी सेवानुं फळ होय तो ते फळवडे तमारी उपर भवेभवमां मने भक्तिभाव प्राप्त थजो.

श्री पार्श्वनाथजिन स्तुति.

हे प्रभु! सर्वत्र भूत, भविष्य अने वर्त्तमानकाळना भावने प्रकाश करनारुं तमारुं आ केवळज्ञान जय पामे छे. आ अपार संसाररूप समुद्रमां प्राणीओने वहाणरूप तमे छो अने निर्यामक पण तमेज छो. हे जगत्पति! आजनो दिवस अमारे सर्व दिवसोमां राजा जेवो छे, कारण के जेमां अमारे तमारा चरण दर्शननो महोत्सव प्राप्त थयेल छे, आ अज्ञानरूप अंधकार के जे मनुष्योनी विवेक द्रष्टिने लुंटनारुं छे ते तमारा दर्शनरूप औषधीना रस विना निवृत्त थतुं नथी, आ महोत्सव नदीना नवा आरानी जेम प्राणीओने आ संसारमांथी पार उतरवाने एक नवा तीर्थ (आरा) रूप छे, अनंत चतुष्टयने—सिद्ध करनारा, सर्व अतिशयोथी शोभनारा, उदासीपणामां रहेनारा, अने सदा प्रसन्न एवा तमने नमस्कार छे. प्रत्येक जन्ममां अत्यंत उपद्रव करनार एवा दुरात्मा मेघमाळी उपर तमे करुणा करी हती माटे तमारी करुणा क्यां नथी? (अर्थात् सर्वत्र छे) हे प्रभु! ज्यां त्यां रहेता अने गमे त्यां जता एवा मने हमेशां आपत्तिने निवारनार एवुं तमारा चरणकमळनुं स्मरण हजो.

श्री महावीरजिन स्तुति.

अर्हंत भगवंत, स्वयंबुद्ध, विधाता, अने पुरुषोमां उत्तम एवा आदिकार तीर्थंकर रूप तमने हुं नमस्कार करुं छुं. लोकमां प्रदीपरूप, लोकने प्रद्योतना करनारा, लोकमां उत्तम लोकना अधीश अने लोकना हितकारी एवा तमने हुं नमुं छुं. पुरुषोमां श्रेष्ठ पुंडरीक कमळरूप सुखना आपवावाळा, पुरुषोमां सिंह समान अने पुरुषोमां मदगंधी गजेंद्ररूप एवा तमने नमस्कार थाओ. चक्षुने अने अभयने आपनारा बोधिदायक, मार्गदेशक, धर्मदायक, धर्मदेशक अने शरणदायक एवा तमने हुं नमुं छुं. धर्मना सारथि, धर्मना नेता, धर्मना चक्रवर्ती, छद्मस्थपणाने निवृत करनार अने सम्यक् ज्ञानदर्शन धारी एवा तमने नमस्कार थाओ. जिन अने जापक, तरेला अने तारनार, कर्मथी मुक्त अने मुकावनार तथा बुद्ध अने बोध करनार एवा तमने हुं नमुं छुं. सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, सर्व अतिशयना पात्र अने आठ कर्मनो नाश करनार एवा हे स्वामी ! तमने नमस्कार थाओ. क्षेत्र, पात्र, तीर्थ, परमात्मा, स्याद्वादवादी, वीतराग अने मुनि एवा तमने नमस्कार थाओ. पूज्योना पण पूज्य, मोहोटाथी पण मोटा, आचार्योना पण आचार्य अने ज्येष्ठना पण

ज्येष्ठ एवा तमने नमस्कार थाओ. विश्वने उत्पन्न करनार, योगीओना नाथ अने योगी, पवित्र करनार अने पवित्र, अनुत्तर अने उत्तर एवा तमने नमस्कार थाओ, पापनुं प्रक्षालन करनार, योगाचार्य जेनाथी कोइ बीजुं विशेष उत्तम नथी एवा अग्र, वाचस्पति अने मंगळरूप तमने नमस्कार थाओ. सर्व तरफथी उदित थयेला एक वीर सूर्यरूप अने ॐ भूर्भुवःस्वः ए वाणीथी स्तुति करवा योग्य एवा तमने नमस्कार थाओ. सर्व जनना हितकारी, सर्व अर्थना साधनार, अमृतरूप ब्रह्मचर्यने उदित करनार, आप्त अने पारंगत एवा तमने नमस्कार थाओ. दक्षिणीय, निर्विकार, दयाळु अने वज्रऋषभ नाराच शरीरना धारण करनार एवा तमने नमस्कार थाओ. त्रिकाळना जाणनार, जिनेंद्र, स्वयंभू, ज्ञान, बळ, वीर्य, तेज, शक्ति, अने ऐश्वर्यमय एवा तमने नमस्कार थाओ. आदि पुरुष, परमेष्टी, महेश अने ज्योतिस्तत्वरूप एवा तमने नमस्कार थाओ. सिद्धार्थ राजाना कुळरूपी क्षीरसागरमां चंद्र जेवा महावीर, धीर, अने त्रण जगतना स्वामी एवा तमने नमस्कार थाओ.

श्री महावीरजिन स्तुति.

हे प्रभु! लावण्यथी पवित्र शरीरवाळा अने नेत्रने अमृतांजनरूप एवा तमारे

विषे मध्यस्थपणुं राखवुं ते पण दोषने माटे छे तो द्वेष राखवानी तो वार्ताज शी करवी? कोपादिकथी उपद्रव पामेलाओ ते पण तमारा प्रतिपक्षी छे एवी लोकवार्त्ता शुं विवेकी लोको करे छे? अर्थात् नथी करता. तमे विरक्त छो तेथी जो रागवान तमारा विपक्षी होय तो ते विपक्षज नथी, केमके सूर्यनो विपक्षी शुं खजुओ होइ शके? लवसत्तम (अनुत्तरवासी) देवताओ पण तमारा योगने इच्छता छता तेने पामता नथी तो योगमुद्रा विनाना बीजाओनी वार्त्ताज शी करवी? हे स्वामि! अमे तमारा जेवा नाथना शरणनेज अंगीकार करीए छीए, तमने स्तवीए छीए अने तमारीज उपासना करीए छीए, तमारा सिवाय बीजो कोइ त्राता नथी तेथी क्यां जइने कहीए अने शुं करीए? पोताना आचार वडेज मलीन अने परने छेतरवामांज तत्पर एवा बीजा देवोथी आ जगत ठगाय छे. अहो! तेनो पोकार कोनी आगळ करीए? नित्य मुक्त रहेनारा छतां आ जगतुनी उत्पत्ति, स्थिति, अने लय करवामां उद्यत थनारा अने तेथीज वंध्यास्त्रीना बाळक जेवा देवोनो कयो सचेत पुरुष आश्रय करे? हे देव! बीजा केटलाक मूढ पुरुषो उदरपूर्त्तिना करनारा अने विषयेंद्रियोना दुराचार करनारा देवताओथी तमारा जेवा देवाधिदेवना

निन्हव थाय छे ते केवा खेदनी वात? अहो! केटलाक घरमां रहीने गर्जना करनारा मी-
थ्यात्वीओ आ वधुं आकाश पुष्पवत् छे एवी उत्प्रेक्षा करीने अने तेनुं कांइक प्रमाण
३१ कल्पीने देह अने गेहमां आनंद मानता रहे छे. कामराग अने स्नेहरागनुं निवारण करवुं
तेतो सहेजे बनी शके तेवुं छे, पण दृष्टिराग तो एवो अति पापी छे के जे सत् पुरुषोने
पण उछेदन करवो मुश्केल पडे छे. हे नाथ! प्रसन्न मुख, मध्यस्थ दृष्टि अने लोकने
प्रीति उपजावनारुं वचन—ए वधुं तमारामां अत्यंत प्रीतिना स्थानरूप छतां मूढ लोको
वृथा तमाराथी उदास रहे छे, कदी वायु स्थीर रहे, पर्वत द्रवे अने जळ ज्वाजल्यमान
थाय, तथापि रागादिकवडे ग्रस्त थयेला पुरुषो कदी पण आप्त थवाने योग्य नथी.

श्री रिखवदेव स्तुति.

त्रण जगतमां एकज अद्वितियनाथ हे प्रभु! तमो सर्वोत्कर्षे प्रवर्तो. त्रण जग-
तना लोकोने उपकार करवाने समर्थ छतां पण अनंतातिशयनी शोभाथी सनाथ छो,
नाभिराजाना विपुल कुळरूप कमळने प्रफुल्लीत करवा तथा त्रणे भुवनना लोकने स्तववा ३१

योग्य मनोहर श्री मरुदेवा माताना कुक्षीरूप सरोवरने शोभावनार राजहंस छो. त्रण जगत्ना घणा घणा लोकोना मनने शोक रहित करवा सूर्यसमान छो. वळी सर्व देवताना गर्वने सकळ प्रकारे दूर करवाने समर्थ एवी निर्मळ, घणी, अने अद्वितिय महिमारूप लक्ष्मीने विलास करवाने कमळाकर (सरोवर) सरीखा हे प्रभु! तमे जयवंता वर्तो. आस्तिक्य स्वभावथी उत्पन्न थएला, भक्तिरसमां लीन बनी गएला अने देदीप्यमान, सेवाना काममां एक एकथी अग्रेसर थइने नमस्कार करवामां तत्पर एवा अमर अने नरसमुहना मस्तके रहेला मुकुटना माणिक्यनी कांतिरूप पाणीनी लेहेरोथी पखाळ्यां छे चरणार्विंद जेनां एवा हे प्रभु! जयवंता वर्तो. नाश कर्या छे सर्व राग, द्वेष, मत्सर, काम, क्रोधादिक दोषरूप मल जेणे एवा, अपार संसाररूप समुद्रमां डुबता प्राणीओने पंचमगतिरूप तीरपर पहोंचाडवाने जहाज समान एवा हे प्रभु! तमे जयवंता वर्तो. सुंदर सिद्धिरूप वधुना हे प्रभु! तमे भरतार छो. अजर, अमर, अचळ, अरूप, अभय, अपरंपर, परमेश्वर, योगीश्वर हे श्री युगादि जिनेश्वर! तमने नमस्कार थाओ.

श्री जिनेश्वर स्तुति.

जय भगवन् त्रैलोक्य तारण, अशरण शरण परमात्मा, परमेश्वर, जगत्रयाधार, कृपावतार, महिमानिधान, ज्ञापित सकळ विधान, समग्र जंतुना करुणाबंधु, भव्यजीवोने धर्म पमाडता, भवसिंधुमां अनाथ नाथ, शिवपुर साथ, परमदयाळ, वचनरसाळ, जगदुपकारी, वंदे नरनारी, तथा जे सुधासंयमी, निर्ग्रंथ पंथ पाळता, चारित्र दूषण टाळता, सर्व जीवने हितकर्त्ता, भव्याने उद्धरता, एवा अनेक साधुए परवर्या, अलंकर्या, क्रोडो गमे देवताए सेवीत, अनंत ज्ञानमय, अनंत दर्शनमय, अनंत चारित्रमय, अनंत तपोमय, अनंत दानमय, अनंत वीर्यमय, अनंत लाभमय, अनंत भोगमय, अनंत उपभोगमय, क्रोध रहित, मान रहित, माया रहित, लोभ रहित, हास्य रहित, रति रहित, अरति रहित, भय रहित, शोक रहित, दुगंछा रहित, राग रहित, द्वेष रहित, मोह रहित, मिथ्यात्व रहित, निद्रा रहित, काम रहित, अज्ञान रहित, कंदर्प रहित, रोग रहित, निरालंबी, निरासी, निरुपाधि, निर्विकारी, अनंत चतुष्टयी, अक्षय, अचळ, अकळ, अमळ, अगम, अनामी, अकर्मी, अबंधक, अनुदय, अभेदी, अवेदी,

अछेदी, अखेदी, असखायी, अलेशी, अनवगाही, अव्यापी, अनाश्रयी, अकंप, अस्खलीत, अविरोध, अनाशिव, अलख, अशोक, अलोक, लोकालोक ज्ञायक, शुद्ध बुद्ध, स्वभावरमणी, सहजानंदी, एक, असंख्य, अनंतगुणे करी विराजमान एवा अनंत सुखना भोगी, त्रैलोक्यना राजा, त्रैलोक्यना पति, त्रैलोक्यना स्वामी, त्रैलोक्यनाथ, त्रैलोक्य तिलक, त्रैलोक्यने विषे मुकुटमुद्रा समान, त्रैलोक्यने विषे छत्र समान, त्रैलोक्यने विषे सूर्य समान उद्योतना करनार, मिथ्यात्व स्वरूप अंधकारना टाळनार, चंद्रमानी पेरे शीतळताना करनार, विषय कषायरूप बळतराना टाळनार, भक्तवत्सल, जगत्त्रयना हितकारी, जगत्त्रयना प्रीतिकारी, जगत्त्रयना उपकारी, करुणासागर, भवसमुद्रथी पार उतारनार, तथा आठ प्रातिहार्यनी संपदाये करी बिराजमान तथा पूजातिशय, वचनातिशय, ज्ञानातिशय अने अपायापगमातिशय ए चार अतिशय साथे मेळवतां चार थाय ते चार गुणे करी शोभित, तेमज चार अतिशय सहजना जन्म थकी होय अने कर्म क्षय थया थकी अगीआर तथा देवताना करेला ओगणीस मळीने चोत्रीस अतिशये करी विराजमान थका एवा श्री वितराग देव, ते भव्य प्राणीओने हितो-

पदेश करता मिथ्यात्वरूप अंधकारने चूरता थका विचरता हता त्यारे हर्ष नक्तिए नाविक थका जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषि, अने वैमानिक, ए चार निकायना देवताए मळीने रूप, सुवर्ण तथा रत्नमय त्रण गढनी रचना करी ते मध्यमां रत्नजमीत सिंहासनने विषे पोते बेठा. मस्तके त्रण छत्र शोने छे, चार चामर विंजाय छे, सुर, असुर, मनुष्य, विद्याधर, किन्नर, गंधर्व इत्यादिकनी पर्षदाने देशना देनार वीतराग नगवानने अमारो परम श्रद्धापूर्वक नमस्कार थाउ.

इति चतुर्विंशति जिन स्तुति समाप्त.

श्री देशना संग्रह.

श्री रिखवदेव भगवाननी देशना.

आधि, व्याधि, जरा अने मृत्युरूपी सेंकडो ज्वाळाओथी आकुळ एवो आ संसार सर्व प्राणीओने देदीप्यमान अग्नि जेवो छे; तेथी तेमां विद्वानोए लेशमात्र पण प्रमाद करवो युक्त नथी; केमके रात्रिए उल्लंघन करवाने योग्य एवा मरुदेशमां अज्ञानी एवो पण कोण प्रमाद करे? अनेक जीवायोनीरूप आवर्तवडे आकुळ एवा संसार समुद्रमां अटन करता जंतुओने उत्तम रत्ननी पेठे आ मनुष्यजन्म प्राप्त थवो दुर्लभ छे. दोहद पुरवाथी जेम वृक्ष फळयुक्त थाय तेम परलोकनुं साधन करवाथी प्राणीओनो मनुष्य जन्म सफळ थाय छे. आ संसारमां शठ लोकोनी वाणीनी पेठे प्रथम मधुर अने परिणामे अति दारूण एवा विषयो, विश्वने ठगनारा छे. घणी उंचाइनो अंत जेम पडवामां छे, तेम संसारनी अंदर वर्तता सर्व पदार्थोना संयोगनो अंत वियोगमां छे. जाणे परस्पर स्प-

धीथी होय तेम आ संसारमां प्राणीओने आयुष, धन अने यौवन—ए सर्वे नाशवंत अने जवानी त्वरावाळां छे. मरुदेशमां जेम स्वादिष्ट जळ न होय तेम संसारनी चारे गतिमां
३५ कदापि सुखनो लेश पण नथी; क्षेत्र दोषथी दुःख पामता अने परमाधार्मिकोए क्लेश पमाडेला नारकीओने तो क्यांथीज सुख होय? शीत, वात, आतप अने जळथी तेमज वध, बंधन अने क्षुधा विगेरेथी विविध प्रकारे पीडा पामता तिर्यंचोने पण शुं सुख छे? गर्भवास, व्याधि, जरा, दारिद्र अने मृत्युथी थता दुःखवडे आलिंगित थएला मनुष्योने पण क्यां सुख छे? परस्पर मत्सर, अमर्ष, कलह, तथा च्यवन विगेरे दुःखोथी देवताओने पण सुखनो लेश नथी; तथापि जळ जेम नीची जमीन तरफ जाय छे तेम प्राणीओ अज्ञानथी वारंवार आ संसारनी तरफज चाले छे. माटे हे चेतन (ज्ञान) वाळा भविजनो! दुधवडे सर्पनुं पोषण करवानी जेम तमे पोताना मनुष्य जन्मवडे संसारनुं पोषण करशो नहि. हे विवेकीओ! आ संसार निवासथी उत्पन्न थता अनेक दुःखो विचारीने सर्व प्रकारे मोक्षने माटे यत्न करो. नर्कना दुःख जेवुं गर्भवासनुं दुःख संसारनी पेठे क्यारे पण मोक्षमां प्राप्त थतुं नथी. कुंभीना मध्यमांथी आकर्षण कराता ना- ३५

रकीना जीवोनी पीडा जेवी प्रसववेदना मोक्षमां क्यारे पण प्राप्त थती नथी; बहार अने अंदर नांखेला शल्य जेवा अने पीडाना कारणरूप एवा आधि व्याधीज त्यां नथी; यमराजनी अग्रदूती सर्व प्रकारना तेजने चोरनारी तथा पराधीनपणाने उत्पन्न करनारी जरा पण सर्वथा त्यां नथी; अने नारकी, तिर्यंच, मनुष्य तथा देवताओनी पेठे फरीथी भव भ्रमणनुं कारणरूप एवुं मरण पण मोक्षमां नथी; त्यां तो महा आनंद, अद्वैत अने अव्ययसुख, शाश्वतरूप अने केवळज्ञानरूप सूर्यवत् अखंड ज्योति छे; हमेशां ज्ञान, दर्शन, अने चारित्ररूपी त्रण उज्वळ रत्नोनुं पालन करनारा पुरुषोज ए मोक्षने मेळवी शके छे. तेमां जीवादि तत्वोनो संक्षेपथी अथवा विस्तारथी यथार्थ अवबोध ते सम्यक् ज्ञान जाणवुं. मति, श्रुत, अवधि, ने मनपर्यव अने केवळ एवा अन्वय सहित भेदोथी ते ज्ञान पांच प्रकारनुं छे. तेमां अवग्रहादिक भेदोवाळुं तथा बीजा बहुग्राही अबहुग्राही भेदोवाळुं अने जे इंद्रिय अनिंद्रियथी उत्पन्न थाय ते मतिज्ञान जाणवुं. पूर्व, अंग, उपांग, अने प्रकीर्णक सूत्रो—ग्रंथोथी बहु प्रकारे विस्तार पामेलुं अने स्यात् शब्दवडे लांछित एवुं श्रुतज्ञान अनेक प्रकारे जाणवुं. देवता अने नारकी जीवोने जे

भव संबंधी उत्पन्न थाय छे ते अवधीज्ञान कहेवाय छे. ए क्षय उपशम लक्षणवालुं छे अने मनुष्य तिर्यंच आश्रि तेना मुख्य छ भेद छे. मनःपर्यायज्ञान ऋजुमती अने विपुलमती एवा बे प्रकारनुं छे, तेमां विपुलमतीनुं विशुद्धि अने अप्रतिपातपणावडे विशेषपणुं जाणी लेवुं. समस्त द्रव्यपर्यायना विषयवालुं विश्वलोचन समान, अनंत, एक अने इंद्रियोना विषय विनानुं ज्ञान ते केवळज्ञान कहेवाय छे.

शास्त्रोक्त तत्वमां रुचि ते सम्यक्श्रद्धा कहेवाय छे. ते श्रद्धा (समकित) स्वभावथी अने गुरुनां उपदेशथी प्राप्त थाय छे. आ अनादि अनंत संसारना आवर्तमां वर्तता प्राणीओने ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनी अने अंतराय नामनां कर्मोनी उत्कृष्ट स्थिति त्रीस कोटानुं कोटी सागरोपमनी छे; गोत्र अने नामकर्मनी स्थिति वीश सागरोपम कोटानुंकोटी छे अने मोहनीय कर्मनी स्थिति सित्तेर कोटानुंकोटी सागरोपमनी छे. अनुक्रमे फळना अनुभवथी ते सर्व कर्मो पर्वतमांथी नदीमां अथडातो अथडातो पत्थर गोळ थइ जाय ते न्यायवत् पोतानी मेळे क्षय पामे छे. ए प्रमाणे क्षय थता कर्मनी अनुक्रमे ओगणत्रीस, ओगणीस, अने अगणोतेर कोटानुंकोटी सागरोपम सुधीनी

स्थिति क्षय पामे अने देशे ऊणी (कांइक ऊणी) एक कोटानुंकोटी सागरोपमनी स्थिति बाकी रहे त्यारे प्राणी यथाप्रवृत्तिकरणवडे ग्रंथीदेशने प्राप्त थाय छे. राग द्वेषना दुःखे भेदी शकाय एवा परिणाम ते ग्रंथी कहेवाय छे, ते काष्टनी गांठ जेवी दुरुछेद्य अने घणीज दृढ होय छे. कीनारा समीपे आवेलुं वायुप्रेरित वहाण जेम समुद्रमां पाछुं जतुं रहे तेम रागादिके प्रेरेला केटलाएक जीवो ग्रंथीने भेद्या विनाज ग्रंथी समीपथीज पाछा फरे छे. केटलाएक प्राणीउ मार्गमां स्खलना पामेला सरितानां जळनी पेठे कोइ प्रकारनां परिणाम विशेषथी त्यांज विराम पामे छे. कोइ प्राणीउ जेमनुं भविष्यमां भद्र थवानुं होय छे तेउ अपूर्वकरणवडे पोतानुं वीर्य प्रगट करीने म्होटा मार्गने उल्लंघन करनारा पांथ लोको जेम घाटनी भूमिनुं उल्लंघन करे तेम ते दुर्लंध्य ग्रंथीने तत्काळ भेदी नाखे छे. केटलाएक चार गतिवाळा प्राणीउ अनिवृत्तिकरणवडे अंतरकरण करीने मिथ्यात्वने विरल करी अंतर्मुहूर्त मात्र सम्यक्दर्शनने पामे छे. ते नैसर्गीक (स्वाभाविक) सम्यक्श्रद्धान कहेवाय छे. गुरुना उपदेशना आलंबनथी भव्य प्राणीउने जे समकित उत्पन्न थाय छे ते गुरुना अधिगमथी थएलुं समकित कहेवाय छे.

१

दे० समकितना औपशमिक, सास्वादन, क्षायोपशमिक, वेदक अने क्षायिक एवा सं०
पांच प्रकार ठे. जेनी कर्मग्रंथी न्नेद पामेली ठे एवा प्राणीने जे समकितनो लाज्ञ प्रथम
३१ अंतर्मुहूर्त मात्र थाय ठे ते औपशमिकसमकित कहेवाय ठे, तेमज उपशम श्रेणीना
योगथी जेनो मोह शांत थयो होय एवा देहीने मोहना उपशमथी उत्पन्न थाय ते पण
औपशमिकसमकित कहेवाय ठे. सम्यक्न्नावनो त्याग करीने मिथ्यात्वनी सन्मुख
थएला प्राणीने अनंतानुबंधी कषायनो उदय थतां उत्कर्षथी ठ आवळी पर्यंत अने ज-
घन्यथी एक समय समकितनो परिणाम रहे ते सास्वादनसमकित कहेवाय ठे. मिथ्या-
त्व मोहनीयनो क्षय अने उपशम थवाथी उत्पन्न थएलुं त्रीजुं क्षयोपशमिक समकित
कहेवाय ठे; ते समकित मोहनीना उदय परिणामवाळा प्राणीने थाय ठे. वेदक नामनुं
चोथुं समकित क्षपक न्नावने प्राप्त थएला, अनंतानुबंधी कषायनी चोकडी क्षय थएला,
क्षायक समकितनी सन्मुख थयेला, मिथ्यात्व मोहनी अने मिश्र मोहनी सम्यक् प्रकारे
जेमनी क्षय पामी ठे एवा अने समकित मोहनीना ठेल्ला अंशने न्नोगवनारा प्राणीने
प्राप्त थाय ठे. साते प्रकृतिने क्षीण करनारा अने शुद्ध न्नाववाळा प्राणीने क्षायिक ना- ३१
मनुं पांचमुं समकित प्राप्त थाय ठे.

समकित दर्शन गुणथी रोचक, दीपक, अने कारक एवा नामथी त्रण प्रकारनुं छे. तेमां शास्त्रोक्त तत्त्वमां हेतु अने उदाहरण विना जे दृढ प्रतीति उत्पन्न थाय ते रोचक समकित, जे बीजाओना समकितने प्रदीप्त करे ते दीपक समकित अने जे संयम तथा तप विगेरेने उत्पन्न करे ते कारक समकित कहेवाय छे. ते समकित शम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा अने आस्तिक्य ए पांच लक्षणोथी सारी रीते ओळखाय छे. अनंतानुबंधी कषायनो उदय न थाय ते शम कहेवाय छे अथवा सम्यक् प्रकृतिथी कषायना परिणामने जोवुं ते पण शम कहेवाय छे. कर्मना परिणाम अने संसारनी असारताने चिंतवता पुरुषने विषयोमां जे वैराग्य थाय ते संवेग कहेवाय छे. संवेगवाळा पुरुषने संसारवास कारागृह छे, अने स्वजन छे ते बंधन छे, एवो जे विचार थया करे ते निर्वेद कहेवाय छे एकेंद्रिय विगेरे सर्व प्राणीओने संसार सागरमां डुबवाथी थता क्लेशने जोइ हृदयमां आर्द्रता, तेमनां दुःखथी दुःखीपणुं अने ते दुःख निवारणना उपायमां यथाशक्ति प्रवृत्ति करवी ते अनुकंपा कहेवाय छे. बीजां तत्त्वो सांभळतां छतां पण आर्हत् तत्त्वमां आकांक्षारहित प्रतिपत्ति रहेवी ते आस्तिक्य कहेवाय छे. एवी रीते सम्यक्

दे० दर्शन वर्णवेलुं छे. तेनी क्षणवार पण प्राप्ति थतां पूर्वेनुं जे मति अज्ञान होय छे ते परा- सं०
भव पामीने मतिज्ञानपणाने पामे छे, श्रुतअज्ञान पराभव पामीने श्रुतज्ञानपणुं पामे छे,
३८ अने विभंगज्ञान पराभव पामीने अवधिज्ञानना भावने पामे छे.

सर्व सावद्य योगनो त्याग ते चारित्र कहेवाय छे. ते अहिंसादिक व्रतना भेदथी पांच प्रकारे कहेलुं छे. अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य अने अपरिग्रह ए पांच व्रतो पांच पांच भावनाए युक्त थवाथी मोक्षने अर्थे थाय छे. प्रमादना योगथी त्रस अने स्थावर जीवोना जीवितनो नाश न करवो ते अहिंसाव्रत कहेवाय छे. प्रीय, हितकारी अने सत्य वचन बोलवुं ते सुनृत (सत्य) व्रत कहेवाय छे. अप्रीय अने अहितकारी सत्य वचन पण असत्य समान जाणवुं. अदत्त वस्तुनुं ग्रहण न करवुं ते अस्तेयव्रत कहेवाय छे; केमके द्रव्य ए माणसना बहिर प्राण छे, तेथी ते हरण करनार पुरुष तेना प्राणने हरण करे छे एम जाणवुं. दिव्य (वैक्रिय) अने औदारिक शरिरवडे अब्रह्मचर्य सेवननो–मन, वचन, अने कायाथी करवुं, करावुं अने अनुमोदवुं ए त्रण प्रकारे त्याग
करवो तेने ब्रह्मचर्यव्रत कह्युं छे; तेना अढार भेद थाय छे. सर्व पदार्थो उपर मोह (मूर्छा) ३८

नो त्याग करवो ते अपरिग्रहव्रत कहेवाय ठे; केमके मोहथी अठती वस्तुमां पण चित्तनो विप्लव थाय ठे. यतिधर्ममां अनुरक्त एवा यतींद्रोने आ प्रमाणे सर्वथी चारित्र कह्युं ठे अने गृहस्थोने देशथी चारित्र कह्युं ठे.

समकित मूळ पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत, अने चार शिक्षाव्रत ए प्रमाणे गृहस्थोनां बार व्रत ठे. बुद्धिवंत पुरुषे पंगु, कुष्टि, अने कुणित्व विगेरे हिंसानां फळ जोइ निरपराधी त्रस जीवोनी हिंसा संकल्पथी ठोमी देवी. मन्मनपणुं, काहलपणुं, मुंगापणुं अने मुखरोग—ए असत्यनां फळ जोइ, कन्या अलिक विगेरे पांच मोटां असत्य ठोमी देवां; कन्या, गाय अने भूमि संबंधी असत्य, थापण उळववी अने खोटी साक्षी पूरवी ए पांच स्थूल (मोटां) असत्य कहेवाय ठे. दुर्भाग्य, कासीदुं, दासत्व, अंगनो ठेद अने दरिद्रता ए अदत्तादान (चोरी) नां फळ जाणी स्थूलचौर्यनो त्याग करवो; नपुंसकपणुं, अने इंद्रियनो ठेद ए अब्रह्मचर्यनां फळ जाणी सद्बुद्धिवंत पुरुषे स्वस्त्रीमां संतुष्ट थइ परस्त्रीनो त्याग करवो. असंतोष, अविश्वास, आरंभ अने दुःख—ए सर्व परिग्रहनी मूर्छानां फळ जाणी परिग्रहनुं प्रमाण करवुं. (ए पांच अणुव्रत कहेवाय ठे.)

दे०
३९

दशे दिशामां निर्णय करेली सीमानुं उल्लंघन न करवुं ते दिग्विरति नामे प्रथम गुणव्रत कहेवाय छे. जेमां शक्तिपूर्वक भोग उपभोगनी संख्या कराय ते भोगोपभोग प्रमाण नामे बीजुं गुणव्रत कहेवाय छे. आर्त्त, रौद्र–ए बे अपध्यान, पाप कर्मनो उपदेश, हिंसक अधिकरणोनुं आपवुं तथा प्रमादाचरण–ए चार प्रकारे अनर्थदंड कहेवाय छे; शरीरादि अर्थदंडना प्रतिपक्षिपणे रहेल अनर्थदंडनो त्याग करवो ते त्रीजुं गुणव्रत कहेवाय छे. आर्त्त अने रौद्रध्याननो त्याग करीने तथा सावद्य कर्मने छोडी देइ मुहूर्त (बे घडी) सुधी समता धारण करवी ते सामायिकव्रत कहेवाय छे. दिवस अने रात्रि संबंधी दिग्व्रतमां परिमाण करेलुं होय, तेनुं संक्षेपण करवुं ते देशावकाशिक व्रत कहेवाय छे. चार पर्वणीने दिवसे उपवास विगेरे तप करवो, कुव्यापारनो त्याग करवो, ब्रह्मचर्य पाळवुं अने बीजी स्नानादिक क्रियानो त्याग करवो ते पौषधव्रत कहेवाय छे. अतिथि (मुनि) ने चतुर्विध आहार, पात्र, वस्त्र अने स्थान (उपाश्रय) नुं दान करवुं ते अतिथि संविभाग नामे व्रत कहेवाय छे.

मोक्षनी प्राप्तिने माटे यति अने श्रावकोए सम्यक् एवा आ त्रण रत्नोनी हमेशां उपासना करवी.

सं०
३९

श्री अजितनाथजीनी देशना.

अहो! मुग्ध बुद्धिवाळा प्राणीओ वैडूर्य मणिनी बुद्धिथी काचने ग्रहण करे तेम आ असार संसारने सारवाळो जाणे छे, दरेक क्षणे बंधातां विविध प्रकारनां कर्मोथी प्राणीओने आ संसार दोहदोथी वृक्षनी जेम वृद्धि पामे छे, कर्मना अभावथी संसारनो अभाव थाय छे तेथी विद्वानोए कर्मनो नाश करवाने माटे सदा प्रयत्न करवो. कर्मनो नाश शुभध्यानथी थाय छे. ते ध्यान आज्ञा, अपाय, विपाक अने संस्थानना चिंतवनथी चार प्रकारनुं छे तेमां जे आप्त पुरुषोनुं वचन ते आज्ञा कहेवाय छे ते बे प्रकारनी छे. तेमां पहेली आगम आज्ञा अने बीजी हेतुवाद आज्ञा. जे शब्दथीज पदार्थोने प्रतिपादन करे छे ते आगम कहेवाय छे अने बीजा प्रमाणोना संवादथी पदार्थोने प्रतिपादन करे छे ते हेतुवाद कहेवाय छे. आ बन्नेनुं तुल्य प्रमाण मेळवीने जे दोषरहित कारणोथी आरब्ध थाय ते लक्षणथी प्रमाण कहेवाय छे. राग द्वेष अने मोह ए दोष कहेवाय छे ते अर्हंतने उत्पन्न थता नथी माटे दोषरहित कारणथी उत्पन्न थयेलुं एवुं ए अर्हंतोनुं वचन प्रमाण छे ते (वचन) नय अने प्रमाणथी सिद्ध, पूर्वापर

विरोध विनानुं बीजा बलिष्ट शासनोथी पण अप्रतिहत अंग उपांग प्रकीर्ण वि- गेरे बहु शास्त्ररूपी नदीओना समुद्ररूप अनेक अतिशयोनी साम्राज्य लक्ष्मीथी शोभित दूरभव्यपुरुषोनुं दुर्लभ भव्यपुरुषोने सुलभ गणिपिटक पणे रहेलुं तेमज मनुष्य अने देवताए नित्य स्तुति करवाने योग्य छे एवा आगम वचनोनी आज्ञानुं आलंबन करीने स्याद्वाद न्यायना योगथी द्रव्यपर्यायरूपे नित्यानित्य वस्तुओमां तेमज स्वरूप अने पररूपथी सत् असत्पणे रहेला पदार्थोमां जे स्थिर प्रतीति करवी ते " आज्ञा विचयध्यान " कहेवाय छे. जेओए जिनमार्गनो स्पर्श कर्यो नथी, जेओए परमात्माने जाण्या नथी अने जेओए पोताना आगामी काळनो विचार कर्यो नथी तेवा पुरुषोने हजारो अपाय (विघ्नो) थाय छे. माया मोहरूपी अंधकारथी जेनुं चित्त परवश थयेलुं छे एवो प्राणी शुं शुं पाप करतो नथी अने तेथी ते कया अपाय (कष्ट) ने पामतो नथी? एवो प्राणी विचार करे के--नारकी, तिर्यंच अने मनुष्योमां जे जे दुःख में भोग- व्यां छे ते चित्तरहित एवा मारा प्रमाद वडेज छे, परम बोधि बीजने मेळव्या छतां पण मन, वचन अने कायावडे करेली दुष्ट चेष्टाओथी मेंज मारा पोताना मस्तक

उपर अग्नि प्रज्वलित कर्यो छे. मुक्तिमार्ग मारे स्वाधीन छतां कुमार्गने शोधी ते मार्गे चालीने मेंज मारा आत्माने अपायो (कष्टो) मां नांख्यो छे. जेम सारुं राज्य प्राप्त थया छतां पण मूर्ख माणस भिक्षाने माटे परिभ्रमण करे, तेम मोक्ष साम्राज्य मारे स्वाधीन छतां पण मारा आत्माने हुं संसारमां भ्रमण करावुं छुं. आ प्रमाणे राग द्वेष अने मोहथी उत्पन्न थता अपायोने चिंतववामां आवे तेनुं नाम "अपायविचय" नामे ध्यान कहेवाय छे.

कर्मनुं जे फळ ते विपाक कहेवाय छे. ते विपाक शुभ अने अशुभ एम बे प्रकारनो छे, अने द्रव्य क्षेत्रादिकनी सामग्रीवडे ते विचित्ररूपे अनुभववामां आवे छे; तेमां स्त्री, पुष्पोनी माळा, अने खाद्य द्रव्य विगेरेना उपभोगथी शुभ विपाक कहेवाय छे अने सर्प, शस्त्र, अग्नि अने झेर विगेरेथी जे अनुभव कराय ते अशुभ विपाक कहेवाय छे, (द्रव्यविपाक). महेल, विमान तथा उपवनादिकमां निवास करवाथी शुभ विपाक कहेवाय छे अने श्मशान, जंगल तथा अरण्य विगेरेमां रहेवाथी अशुभ विपाक कहेवाय छे, (क्षेत्र विपाक). टाढ अने तडका रहित एवी वसंतादिक ऋतुमां भ्रमण कर-

वाथी शुज्ञ विपाक कहेवाय ठे अने तम्का तथा टाढवाळी ग्रीष्म अने हेमंतऋतु विगेरेमां ज्रमण करवाथी अशुज्ञ विपाक कहेवाय ठे, (काळ विपाक). मननी प्रसन्नता अने संतोष विगेरेमां शुज्ञ विपाक थाय ठे अने क्रोध, अहंकार तथा रौद्रपणा विगेरेमां अशुज्ञ विपाक थाय ठे, (जाव विपाक). देवपणामां अने जोग जूमि संबंधी मनुष्यादि जवमां शुज्ञ विपाक थाय ठे अने कुमनुष्यपणामां तिर्यंचपणामां अने नरक विगेरेना जवमां अशुज्ञ विपाक थाय ठे, (जव विपाक). कह्युं ठे के द्रव्य, क्षेत्र, काळ, जाव अने जवने पामीने कर्मोनो उदय, क्षय, क्षयोपशम, अने उपशम थाय ठे. एवी रीते द्रव्यादि सामग्रीना योगथी प्राणीउने तेमनां कर्मो पोत पोतानुं फळ आपे ठे, ते कर्मना मुख्य आठ जेद ठे. ते आ प्रमाणेः--वस्त्रना पाटाथी नेत्रनी जेम जे कर्मना उदयथी सर्वज्ञ स्वरूपवाळा जंतुनुं ज्ञान हमेशां रुंधाइ जाय ते ज्ञानावरणीय कर्म कहेवाय ठे; मति श्रुत, अवधि, मनःपर्याय अने केवळ ए पांच ज्ञानना जेद ठे, ए पांचने आवरण करवाथी ए ज्ञानावरणीयना ए प्रमाणेज पांच जेद ठे. पांच निद्रा अने चार दर्शनोनी जे आवृत्ति (आवरण) ते दर्शनावरणीय कर्म कहेवाय ठे. जेम पोताना स्वामीने जोवाने

इच्छतो पुरुष प्रतिहारना निरोधथी जोइ शके नहि तेम जेना उदयथी आत्मा पण जोइ शकाय नहि ते दर्शनावरणीय कहेवाय छे. मधथी लिप्त करेली खड्गनी धाराना अग्रभागनो आस्वाद लेवा जेवुं वेदनीकर्म कहेवाय छे, ते सुखना अने दुःखना अनुभवरूप स्वभाववाळुं होवाथी बे प्रकारनुं छे. प्राज्ञ पुरुषोए मोहनीयकर्मने मदिरापान तुल्य कहेलुं छे, कारण के ते कर्मना उदयथी मोह पामेलो आत्मा कृत्याकृत्यने समजी शकतो नथी; तेमां मिथ्यादृष्टिपणाना विपाकने करनारुं दर्शनमोहनीय नामे कर्म कहेवाय छे, अने विरतिने प्रतिबंध करनारुं ते चारित्र मोहनीयकर्म कहेवाय छे. मनुष्य, तिर्यंच, नारकी अने देवताना भेदथी आयुष्यकर्म चार प्रकारनुं छे, ते प्राणीओने पोतपोताना भवने विषे बंदीखानानी पेठे रोकी राखनारुं छे. गति, जाति, विगेरे विचित्रताने करनारुं नामकर्म चित्रकारना जेवुं छे, एनो विपाक प्राणीओने शरीरमां प्राप्त थाय छे. उच्च अने नीच एम बे प्रकारनुं गोत्रकर्म उंचा निचा गोत्रने प्राप्त करावनारुं छे ते क्षीरपात्र अने मदिरापात्रना भेदने करनारा कुंभारना जेवुं छे. जेनाथी बाधित थयेली दानादिक लब्धिओ फळीभूत थती नथी, ते अंतरायकर्म भंडारीना

दे० जेवुं छे. एवी रीते मूल प्रकृतिउना ते ते प्रकारना विपाकने चिंतववुं ते " विपाक विचय" धर्मध्यान. सं०

४२ स्थिति अने उत्पत्ति अने लयरूप आ आदि अंतरहित लोकनी आकृति जेमां चिंतववामां आवे ते संस्थानविचयध्यान. आ लोक कटी उपर हाथ मुकेला अने पग पहोळा करीने रहेला पुरुषनी आकृतिनी जेवो छे अने ते स्थिति उत्पत्ति अने नाशरूप पर्यायोवाळा द्रव्योथी पूराइ रहेलो छे. ए नीचेथी वेत्रासननी जेवो छे, मध्यमां झाल-रनी जेवो छे अने उपर मृदंगनी जेवी आकृतिवाळो छे. ए लोक त्रण जगत्थी व्याप्त छे एमां महा बळवान घनांबोधि, घनवात अने तनुवातथी निचेनी सात पृथ्वीउ वींटाइ रहेली छे. अधोलोक, तिर्यग्लोक अने उर्ध्वलोकना भेदथी त्रण जगत् कहेवाय छे, ते त्रणे लोकना विभाग रुचक प्रदेशनी अपेक्षाथी पडे छे. मेरुपर्वतनी अंदर मध्यमां गा-यना स्तनने आकारे चार आकाशप्रदेशने रोकनारा चार नीचे अने चार आकाश प्रदेशने रोकनारा चार उपर ए प्रमाणे आठ रुचक प्रदेश छे, ते रुचक प्रदेशनी उपर अने नीचे नवसो नवसो योजन सुधी तिर्यग्लोक कहेवाय छे. ते तिर्यग्लोकनी नीचे ४१

अधोलोक रहेलो छे, ते नवसो योजने न्यून सात राज प्रमाण छे, अधोलोकमां एक एकनी नीचे अनुक्रमे सात भूमिउ रहेली छे, जे भूमिमां नपुंसकवेदी नारकीउनो भयंकर निवासो छे. ते सात पृथ्वीना रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा अने महातमप्रभा एवा सात नाम छे, ते पृथ्वीउ जाडाइमां अनुक्रमे रत्नप्रभाथी मांडीने नीचे नीचे एक लाख अंशीहजार, एक लाख बत्रीशहजार, एक लाख अठ्याविशहजार, एक लाख विशहजार, एक लाख अंढारहजार, एक लाख शोलहजार अने एक लाख आठहजार योजनना विस्तारवाळी छे, तेमां रत्नप्रभा नामनी पहेली पृथ्वीमां त्रीसलाख नरकावासा छे, बीजी नरकभूमिमां पचवीशलाख नरकावासा छे, त्रीजी नरकभूमिमां पन्नरलाख नरकावासा छे, चोथी नरकभूमिमां दशलाख नरकावासा छे, पांचमी नरकभूमिमां त्रणलाख नरकावासा छे, छठी नरकभूमिमां पांचे उंगा एकलाख नरकावासा छे अने सातमी नरकभूमिमां पांच नरकावासा छे; ए रत्नप्रभादि साते भूमिउनी दरेकनी नीचे मध्यमां विशहजार योजन जाडाइमां घनोदधि आवेलो छे.

घनोदधिनी नीचे मध्यमां असंख्य योजन सुधी घनवात आवेलो छे, घनवातनी

नीचे असंख्य योजन सुधी तनुवात रहेलो छे अने तनुवातथी असंख्य योजन सुधी आकाश रहेलुं छे, ए मध्यनी जाडाइथी अनुक्रमे ओछा थता थता घनाब्धि विगेरे प्रांते कंकणना आकारने धारण करी रहेला छे. रत्नप्रभा भूमिना प्रांतभागमां परिधिनी पेठे फरता वलयाकारे रहेला घनाब्धिनो विस्तार छ योजननो छे, तेनी फरतुं महावातनुं मंडळ साडाचार योजन छे अने तेनी फरतुं तनुवातनुं मंडळ दोढ योजन छे, ए प्रमाणेना रत्नप्रभानी फरता मंडळना माननी उपरांत शर्कराप्रभा भूमिनी फरतो घनाब्धिमां योजननो त्रीजो भाग वधारे छे. घनवातमां एक गाउ वधारे छे अने एक गाउनो त्रीजो भाग तनुवातमां वधारे छे, शर्कराप्रभाना वलयना माननी उपरांत त्रीजी भूमिनी फरता मंडळमां पण एज प्रमाणे वधारो थाय छे, एवी रीते पूर्वना वलयना मानथी पछीना वलयोना प्रमाणमां सातमी भूमिना वलयसुधी वधारो थाय छे. ए घनाब्धि, महावात अने तनुवातना मंडळो उंचाइमां पोत पोतानी पृथ्वीनी उंचाइना जेटलाज छे. एवी रीते ए सात पृथ्वी घनाब्धि विगेरेए धारण करेली छे, अने तेमांज पाप कर्मने भोगववाना स्थानकरूप नरकावासाओ आवेला छे. ए नरकभूमिमां जेम जेम नीचे जइए तेम तेम या-

तना, रोग, शरीर, आयुष्य, लेश्या, दुःख अने जयादिक अनुक्रमे वधता वधता छे एम निश्चय समजवुं.

रत्नप्रभा भूमि एक लाखने एंशीहजार योजन जाडाइमां रहेली छे, तेमांथी एक एक हजार योजन उंचे अने नीचे छोडी देतां बाकी रहेला भागनी अंदर भवनपतिओनां भुवनो रहेलां छे. ते भवनपतिओ दक्षिण अने उत्तरदिशामां जेम राजमार्गमां मकानोनी पंक्तिओ होय तेम पंक्तिबंध रहेला भुवनोमां रहे छे. तेओमां मुगटमणिना चिन्हवाळा असुरकुमार भवनपति छे, फणाना चिन्हवाळा नागकुमार छे, वज्रना चिन्हवाळा विद्युतकुमार छे, गरुडना चिन्हवाळा सुवर्णकुमार छे, घटना चिन्हवाळा अग्निकुमार छे, अश्वना चिन्हवाळा वायुकुमार छे, वर्द्धमानना चिन्हवाळा स्तनितकुमार छे, मकरना चिन्हवाळा उदधिकुमार छें, केशरीसिंहना लांछनवाळा द्वीपकुमार छे, अने हाथीना चिन्हवाळा दिशीकुमार छे. तेमां असुरकुमारना चमर अने बळिनामे वे इंद्रो छे, नागकुमारना धरण अने भूतानंद नामे वे इंद्रो छे, हरि अने हरिसह नामे विद्युत्कुमारना वे इंद्रो छे, सुवर्णकुमारना वेणुंदेव अने वेणुदाली नामना वे इंद्रो छे, अग्निकुमारना अ-

ग्निशिख अने अग्निमाणव नामना बे इंद्रो छे, वायुकुमारना वेलंब अने प्रभंजन नामना बे इंद्रो छे, स्तनित कुमारना सुघोष अने महाघोष नामना बे इंद्रो छे, अग्निकुमारना जलकांत अने जलप्रभ नामना बे इंद्रो छे, द्वीपकुमारना पूर्ण अने अवशिष्ट नामना बे इंद्रो छे, अने दिक्कुमारना अमित अने अमितवाहन नामना बे इंद्रो छे.

रत्नप्रभा भूमिना उपर मुकी दीधेला हजार योजनमांथी उपर अने नीचे सो सो योजन छोडी देतां मध्यना आठसो योजनमां दक्षिणोत्तर श्रेणीनी अंदर आठ प्रकारना व्यंतरोनो निकाय वसे छे, तेमां पिशाच व्यंतरो कदंबवृक्षना चिन्हवाळा छे, भूत व्यंतरो सुलसवृक्षना चिन्हवाळा छे, यक्ष व्यंतरो वटवृक्षना चिन्हवाळा छे, राक्षस व्यंतरो खट्वांगना चिन्हवाळा छे, किन्नर व्यंतरो अशोकवृक्षना चिन्हवाळा छे, किंपुरुष व्यंतरो चंपकवृक्षना चिन्हवाळा छे, महोरग व्यंतरो नागवृक्षना चिन्हवाळा छे, अने गंधर्व व्यंतरो तुंबरुवृक्षना चिन्हवाळा छे, तेमां पिशाच व्यंतरोना काळने महाकाळ नामना इंद्रो छे, भूत व्यंतरोना सुरूप अने प्रतिरूप नामना इंद्रो छे, यक्ष व्यंतरोना पूर्णभद्र अने माणिभद्र नामे इंद्रो छे, राक्षस व्यंतरोना भीम अने महाभीम नामे इंद्रो छे,

किन्नर व्यंतरोना किन्नर अने किंपुरुन नामे इंद्रो छे, किंपुरुष व्यंतरोना सत्पुरुष अने महापुरुष नामे इंद्रो छे, महोरग व्यंतरोना अतिकाय अने महाकाय नामे इंद्रो छे, अने गंधर्व व्यंतरोना गीतरति अने गीतयशा नामे इंद्रो छे, आवी रीते व्यंतरोना सोळ इंद्रो छे.

रत्नप्रभा भूमिना मूकी दीधेला सो योजनमांथी उपर अने नीचे दश दश योजन छोडी देतां बाकी रहेला मध्यना एंशी योजनमां व्यंतरोनी बीजी आठ निकायो रहेली छे, तेमना अप्रज्ञप्ति, पंचप्रज्ञप्ति, ऋषिवादित, भूतवादित, कंदित, महाक्रंदित, कुष्मांड अने पचक ए आठ नामो छे, ते दरेकना बे बे इंद्रो छे, तेमना संनिहित ने समान, धातृ ने विधातृक, ऋषि ने ऋषिपाळ, ईश्वर ने महेश्वर, सुवत्सक ने विशाळ, हास ने हासरति, श्वेत ने महाश्वेत, पचन अने पचकाधिप एवां नाम छे.

रत्नप्रभाना तळनी उपर दशे न्यून आठसो योजन जइए त्यारे ज्योतिष्क मंडळ आवे छे, प्रथम ताराउ छे, तेनी उपर दश योजने सूर्य छे. सूर्यनी उपर एंशी योजने चंद्र छे, तेनी उपर विश योजनमां ग्रहो रहेला छे, ए प्रमाणे जाडाइमां एकसो दश

योजनमां ज्योतिर्लोक रहेलो छे. जंबुद्वीपना मध्यमां मेरुपर्वतथी अग्यारसोने एकविश योजन छेटुं मेरुने नहीं स्पर्श करतुं मंडळाकारे रही सर्व दिशामां व्याप्त थइ रहेलुं ज्योतिष्चक्र भम्या करे छे, फक्त एक ध्रुवनो तारो निश्चळ छे. ते ज्योतिष्चक्र लोकना अंत भागथी अग्यारसोने अग्यार योजन अंदर रहीने लोकांतने नहीं स्पर्श करतुं मंडळाकारे रहेलुं छे. नक्षत्रोमां सर्वनी उपर स्वाति नक्षत्र छे, अने सर्वनी नीचे भरणी नक्षत्र छे. सर्वथी दक्षिणमां मूल नक्षत्र छे अने सर्वथी उत्तरमां अभिजित् नक्षत्र छे. आ जंबुद्वीपमां बे चंद्र अने बे सूर्य छे, लवणोदधिमां चार चंद्र अने चार सूर्य छे, धातकीखंडमां बार चंद्र अने बार सूर्य छे, काळोदधिमां बेंताळिश चंद्र अने बेंताळिश सूर्य छे, पुष्करार्द्धमां बोंतेर चंद्र अने बोंतेर सूर्य छे, एवी रीते अढीद्वीपमां एकसोने बत्रीस चंद्र अने एकसो बत्रीस सूर्य रहेला छे. तेमांना एक एक चंद्रने अठ्यासी ग्रहो, अठ्याविश नक्षत्रो अने छासठ हजार नवसोने पंचोतेर कोटाकोटी ताराओनो परिवार छे. चंद्रनुं विमान विस्तारमां अने लंबाइमां एक योजनना एकसठ भाग करीए तेवा छपन्न भागनुं छे, सूर्यनुं विमान तेवा अडताळीश अंशोनुं लांबुं पहोळुं छे, ग्रहोनां विमान अर्द्ध

योजननां छे, अने नक्षत्रोनां विमान एक एक गाउनां छे. सर्वथी उत्कृष्ट आयुष्यवाळा तारानुं विमान अर्द्धा कोशनुं छे अने सर्वथी जघन्य आयुष्यवाळा तारानुं विमान पांचसो धनुषनुं छे. ते विमानो उंचाइमां मर्त्यक्षेत्रनी उपरना भागमां पिशताळीस लाख योजनमां सर्वत्र लंबाइ करतां अरधा प्रमाणमां छे. ते सर्व विमानोनी नीचे पूर्व तरफ सिंहो छे, दक्षिण तरफ हाथीउ छे, पश्चिम तरफ वृषभो छे, अने उत्तर तरफ अश्वो छे. तेउ चंद्रादिकना विमानोना वाहनो छे. तेमां चंद्रना वाहनभूत सोळहजार आभियोगिक देवताउ छे, ग्रहना आठ हजार छे, नक्षत्रना चार हजार छे, अने ताराउंना बे हजार आभियोगिक देवता छे. पोताना रसथीज गति करनारा चंद्रादिकना विमाननी नीचे तेउ आभियोग्य कर्मवके करीने निरंतर वाहनरूप थइने रहे छे.

मानुषोत्तर पर्वतनी बहार पचास पचास हजार योजने परस्पर अंतरित थयेला सूर्य अने चंद्र स्थिरपणे रहेला छे, तेमनां विमान मनुष्य क्षेत्र संबंधी चंद्र सूर्यना मानथी अरधा प्रमाणवाळां छे. अनुक्रमे द्वीपोनी परिधिनी वृद्धिथी तेमनी संख्या वधती जाय छे. सारी लेश्यावाळा अने ग्रह नक्षत्र तथा ताराउथी परिवारित थयेला संख्यारहित (अ·

संख्य) एवा सूर्यने चंद्रो घंटाने आकारे मनोहर लागे तेवी रीते रहेला छे, अने तेउ स्वयंजूरमण समुद्रनी अवधि करीने लक्षलक्ष योजनवडे अंतरित थयेला पोत पोतानी पंक्तिउवडे हमेशां स्थिर रहेला छे.

मध्यलोकमां जंबुद्वीप अने लवण समुद्र विगेरे सारा सारा नामोवाळा असंख्य द्वीपो अने समुद्रो एक बीजाथी बमणा बमणा विस्तारमां रहेला छे. पूर्वला पूर्वला द्वीपोने समुद्रो वींटीने रहेला होवाथी तेउ वलयना आकारवाळा छे, तेमां स्वयंजु नामे महोदधि छेल्लो छे. जंबूद्वीपनी मध्यमां सुवर्णना स्थाळनी जेवो गोळाकारे मेरुपर्वत रहेलो छे, ते पृथ्वीतलनी नीचे एक हजार योजन जुमिमां उंमो रहेलो छे अने नवाणुं हजार योजन उंचो छे, दश हजार योजन पृथ्वीने तळे विस्तारवाळो छे अने उपर एक हजार योजन विस्तारवाळो छे, त्रण लोकथी अने त्रण कांडथी ते पर्वत विजक्त थयेलो छे. सुमेरु पर्वतनो पहेलो कांम शुद्ध पृथ्वी, पाषाण, हीरा अने शर्कराथी जरपूर छे, तेनुं एक हजार योजन प्रमाण छे. ते पछी तेनो बीजो कांम त्रेसठ हजार योजन सुधी जातवंत रुपुं, स्फाटिक, अंकरत्न, अने सुवर्णवमे जरपूर छे. मेरुनो त्रीजो कांम छत्रीश हजार

योजननो छे, ते सुवर्ण शिलामय छे, अने वैडूर्यरत्ननी तेनी उपर सुंदर चूलिका उंचाइमां चालीस योजन छे. मूलमां तेनो विस्तार बार योजन छे, मध्यमां आठ योजन छे अने उपर चार योजन छे. मेरुपर्वतना तळमां भद्रशाळ नामे वन वलयाकारे रहेलुं छे. भद्रशाळ वनथी पांचसो योजन उंचा जइए त्यारे मेरुपर्वतनी पहेली मेखळा उपर पांचसो योजनना फरता विस्तारवाळुं बीजुं नंदन नामे वन छे, ते पछी साडीबासठ हजार योजन जइए त्यारे बीजी मेखळा उपर तेटलाज प्रमाणनुं त्रीजुं सौमनस नामे वन रहेलुं छे, ए सौमनस वनथी छत्रीश हजार योजन जइए त्यारे त्रीजी मेखळा उपर मेरुने माथे पांडुक नामे चोथुं सुंदर वन आवेलुं छे, चूलिकानी फरतुं ते चारसोने चोराणुं योजनना फरता विस्तारवाळुं वलयाकारे छे.

आ जंबूद्वीपमां सात खंडो छे. तेमनां भरत, हैमवंत, हरिवर्ष, महाविदेह, रम्यक, हैरण्यवत अने ऐरवत, एवां नाम छे. दक्षिणमां अने उत्तरमां ए क्षेत्रोना जुदा करनारा वर्षधर पर्वतो छे. तेमनां हिमवान, महाहिमवान्. निषध, नीलवंत, रुक्मी अने शिखरी एवां नाम छे. ते पर्वतो मूळमां अने टोचे तुल्य विस्तारथी शोभे छे. तेमां प्रथम

६० पृथ्वीनी अंदर पचवीश योजन ऊंडो सुवर्णमय हिमवंत नामे पर्वत छे, ते सो योजन सं८
ऊंचो छे. बीजो महाहिमवान् पर्वत ऊंडाइमां अने ऊंचाइमां तेथी बमणो छे अने ते अ-
४७ र्जुन जातिना सुवर्णनो छे. तेनाथी बमणा प्रमाणवाळो त्रीजो निषध पर्वत छे, ते सुवर्ण जेवा वर्णनो छे. चोथो नीलवंत पर्वत प्रमाणमां निषध तुल्य छे अने ते वैडूर्यमणिनो छे. पांचमो रुक्मी पर्वत रूप्यमय छे अने प्रमाणमां महाहिमवंत तुल्य छे. छठो शिखरी पर्वत सुवर्णमय छे अने प्रमाणमां हिमवंत तुल्य छे. ते सर्वे पर्वतो पार्श्व भागोमां विचित्र प्रकारना मणिओथी शोभे छे. क्षुद्र हिमवंत पर्वतनी उपर एक हजार योजन लांबो अने पांचसो योजन विस्तारवाळो पद्म नामे एक मोटो द्रह छे. महा हिमवंत पर्वत उपर महापद्म नामे द्रह छे ते पद्मद्रहथी लंबाइमां अने विस्तारमां बमणो छे. तेनाथी बमणो तिगिंछि नामे द्रह निषध पर्वत उपर रहेलो छे. तेना जेवोज केसरी नामनो एक द्रह नीलवंत गिरि उपर आवेलो छे. महापद्म द्रहनी तुल्य महापुंडरीक द्रह रुक्मि पर्वत उपर छे, अने पद्मद्रहनी तुल्य पुंडरीकद्रह शिखरी पर्वत उपर रहेलो छे. ए पद्मादिक द्रहोमां जळनी अंदर दश योजन ऊंडां गयेलां एवां विकस्वर कमळो ४७

रहेलां छे, ए छए द्रहोमां श्री. ह्री, धृति, कीर्त्ति, बुद्धि अने लक्ष्मी ए छ देवीउ अनुक्रमे पल्योपम आयुष्यवाळी रहे छे. ते देवीउ सामानिक देवो, त्रण पर्षदाना देवो, आत्म रक्षको अने सैन्य सहित छे.

भरतक्षेत्रनी अंदर गंगा अने सिंधु नामे मोटी बे नदीउ छे, हैमवंत क्षेत्रमां रोहिता अने रोहिताशा नामनी बे नदीउ छे, हरिवर्ष क्षेत्रमां हरिसलीला अने हरिकांता नामे बे नदीउ छे, महाविदेह क्षेत्रमां सीता अने सीतोदा नामे बे मोटी नदीउ छे, रम्यक क्षेत्रमां नरकांता अने नारीकांता नामनी बे नदीउ छे, हैरण्यवंत क्षेत्रमां स्वर्णकूला अने रुप्यकूला नामनी बे नदीउ छे, अने ऐरवत क्षेत्रमां रक्ता अने रक्तावती नामनी बे नदीउ छे. तेउमां पहेली नदीउ पूर्व समुद्रमां जइने मळे छे, अने बीजी नदीउ पश्चिम समुद्रमां जइने मळे छे. तेमां गंगा अने सिंधु नदी चौद हजार नदीउए परवरेली छे, सीता अने सीतोदा नदीउ विना दरेक बबे नदीउ तेथी बमणी बमणी नदीउना परिवारवाळी छे, उत्तरनी नदीउ दक्षिणनी नदीउ जेटलाज परिवारवाळी छे, सीता अने सीतोदा नदी पांच लाख अने बत्रीस हजार नदीउना परिवारवाळी छे.

भरतक्षेत्रनी पहोळाइ पांचसो छविस योजन अने योजनना ओगणीश भाग करीए तेवा ७ भाग (७ कळा) नी छे. अनुक्रमे बमणा बमणा विस्तारवाळा पर्वतो अने क्षेत्रो महाविदेह क्षेत्र सुधी छे. उत्तर बाजुना वर्षधर पर्वतो अने क्षेत्रो दक्षिणना वर्षधर पर्वतो अने क्षेत्रोनी जेटलाज प्रमाणवाळा छे. ए प्रमाणे बधा वर्षधर पर्वतोनुं अने खंडोनुं प्रमाण समजवुं. निषधाद्रीथी उत्तर तरफ अने मेरुथी दक्षिण तरफ विद्युत्प्रभ अने सौमनस नामे पूर्व पश्चिममां बे पर्वतो छे, तेमनी हाथीना दांतनी जेवी आकृति छे अने छेवटे मेरु पर्वतथी जरा स्पर्श कर्या विना छेटे रहेला छे. ए बन्नेनी मध्यमां देवकुरु नामनुं युगलिआनुं क्षेत्र छे, तेनो विष्कंभ (उत्तर दक्षिण पहोळाइ) अग्यारहजार आठशोने बेताळीश योजन छे, ते देवकुरु क्षेत्रमां सीतोदा नदीथी भेदायला पांच द्रहो छे. ते पांचे द्रहनी बन्ने बाजु दश दश सुवर्णना पर्वतो छे. तेनी एकत्र गणत्री करवाथी सो स्वर्णगिरि थाय छे. ते देवकुरुमां सीतोदा नदीना पूर्व अने पश्चिम तट उपर चित्रकूट अने विचित्रकूट नामे बे पर्वतो छे. ते उंचा एक हजार योजन छे, भूमि उपर पहोळा पण तेटलाज छे अने उपर विस्तार तेथी अर्धो (५००) योजन छे. मेरुथी उत्तरमां अने

नीलवंत गिरिथी दक्षिणमां गंधमादन अने माल्यवान् नामे बे पर्वतो हाथीदांतने आकारे रहेला छे, ते बे पर्वतोनी अंदर सीता नदीथी भिन्न थयेला पांच द्रहो छे, तेनी पण बन्ने बाजु दश दश होवाथी एकंदर सो सुवर्णना पर्वतो आवेला छे तेथी उत्तर कुरु क्षेत्र घणुं रमणिक लागे छे. ते सीता नदीना बन्ने तट उपर यमक नामना सुवर्णना बे पर्वतो रहेला छे, ते विचित्रकूट अने चित्रकूटनी जेटलाज प्रमाणवाळा छे. देवकुरु ने उत्तरकुरुनी पूर्वमां पूर्वविदेह आवेल छे अने पश्चिममां अपरविदेह आवेल छे, ते परस्पर क्षेत्रांतरनी जेम रहेला छे. ते बन्ने विभागमां परस्पर, संचार रहित अने नदीओ तथा पर्वतोथी विभाग पामेला, चक्रवर्तीने विजय करवा योग्य सोळ सोळ विजयो छे. तेमां कच्छ, महाकच्छ, सुकच्छ, कच्छवान, आवर्त्त, मंगळावर्त्त, पुष्कळ अने पुष्कळावती ए आठ विजय पूर्व महाविदेहमां उत्तर तरफ छे. वत्स, सुवत्स, महावत्स, रम्यवान्, रम्य, रम्यक, रमणीय अने मंगळावती ए आठ विजय दक्षिण तरफ छे. पद्म, सुपद्म, महापद्म पद्मावती, शंख, कुमुद, नलिन अने नलिनावती ए आठ विजय पश्चिम महाविदेहमां दक्षिण तरफ छे; अने वप्र, सुवप्र, महावप्र, वप्रावती, वल्गु, सुवल्गु, गंधिला अने गं-

धिलावती ए आठ विजयो उत्तर तरफ छे.

भरतखंडनी मध्यमां दक्षिणार्द्ध अने उत्तरार्द्धने जुदो पाडनारो वैताढ्य पर्वत आवेलो छे, ते पर्वत पूर्व अने पश्चिमे समुद्रपर्यंत विस्तारमां छे, छ योजन अने एक कोश पृथ्वीमां ऊंडो छे, पचास योजन विस्तारमां अने पचवीश योजन ऊंचो छे. पृथ्वीथी दश योजन उपर जइए त्यारे तेनी उपर दक्षिण अने उत्तरमां दश दश योजन विस्तारवाळी विद्याधरोनी बे श्रेणीओ छे. तेमां दक्षिण श्रेणीमां विद्याधरोना राष्ट्र सहित पचास नगरो छे अने उत्तर श्रेणीमां साठ नगरो छे. ते विद्याधरोनी श्रेणीनी उपर दश योजन जइए त्यारे तेटलाज विस्तारवाळी व्यंतरोना निवासथी शोभित एवी बंने बाजु मळीने बे श्रेणीओ छे. ते व्यंतरोनी श्रेणीओनी उपर पांच योजन जइए त्यारे तेनी उपरना नव कूट आवेला छे. एवीज रीते ऐरवत क्षेत्रमां पण वैताढ्य रहेलो छे.

जंबूद्वीपनी फरती किल्लारुप वज्रमय जगती आठ योजन ऊंची छे, ते जगती मूळमां बार योजन पहोळी छे, मध्य भागमां आठ योजन छे अने उपर चार योजन छे. तेनी उपर जाळकटक छे ते बे गाउ ऊंचो छे. ते विद्याधरोनुं अद्वितीय मनोहर क्रीडा

स्थान छे. ते जाळकटकनी पण उपर देवताउंनी जोग जूमिरुप 'पद्मवरा' नामे एक सुंदर वेदिका छे, ते जगतिने पूर्वादि दिशाउमां अनुक्रमे विजय, वैजयंत, जयंत अने अपराजित नामे चार द्वार छे.

क्षुद्र हिमवान् अने महा हिमवान् पर्वतनी मध्यमां (हिमवंत क्षेत्रमां) शब्दापाती नामे वृतवैताढय पर्वत छे, शिखरी अने रुक्मी पर्वतनी वचमां विकटापाती नामे वृतवैताढय पर्वत छे, महा हिमवान् अने निषध पर्वतनी मध्यमां गंधापाती नामे वृत वैताढय पर्वत छे, अने नीलवंत तथा रुकमी पर्वतनी वचमां माल्यवान् नामे वृतवैताढय पर्वत छे. ते सर्व वैताढय पर्वतो पालाना जेवी आकृतिवाळा छे अने एक हजार योजन उंचा छे. जंबुद्वीपनी फरतो लवण समुद्र छे, ते विस्तारमां जंबद्वीपथी बमणो छे. मध्यमां एक हजार योजन उंडो छे. बंने तरफनी जगतीथी अनुक्रमे उतरता उतरता पंचाणु हजार योजन जइए त्यां सुधी उंडाइमां अने उंचाइमां तेनुं जल वधतुं छे. मध्यमां दशहजार योजनमां सोळहजार योजन उंची ए लवण समुद्रनी पाणिनी शिखा छे. तेनी उपर बे गाउ सुधी उंची जलनी वेल एक दिवसमां बे वखत चढे छे. ते लवण स-

दे० ५०

सं०

मुद्रनी मध्यमां पूर्वादि दिशाना क्रमथी वडवामुख, केयूप, यूप अने इश्वर ए नामना मोटा माटलानी जेवी आकृतीवाळा चार पाताल कलशा छे. तें मध्यमां पेटाले एक लाख योजन पोहोला छे अने लाख योजन उंचा छे. एक हजार योजन जाडी वज्ररत्ननी तेमनी ठींकरी छे. नीचे अने उपर दश हजार योजन पहोळा छे, तेमां वायु त्रीजे अंशे रहेल छे, बाकीना बे जागमां जळ रहेलुं छे अने ते कांठा विनाना मोटा माटलाना जेवा आकारना छे. ते कलशामां काळ, महाकाळ, वेलंब अने प्रजंजन नामना देवता अनुक्रमे पोतपोताना क्रीडा आवासमां रहे छे. ते चार पाताल कलशाना आंतरामां सातहजार आठसोने चोराशी न्हाना कलशा छे, ते एक हजार योजन जूमिमां उंचा तथा पेटाले पहोळा छे. तेमनी दश योजननी ठींकरी जाडी छे अने उपर तथा नीचे एकसो योजन पोहोळा छे अने वायु रुके तेना मध्यजागनुं वायु मिश्रजळ उछळे छे. ए समुद्रनी वेलने अंदरथी धारण करनारा बेंताळीश हजार नागकुमार देवता हमेशां रक्षकनी पेठे रहेला छे. वहारथी वेलने धारण करनारा बोंतेरहजार देवता छे अने मध्यमां उछती शिखा उपरनी बे गाउपर्यंत वेलने रोकनारा सातहजार देवो छे. ते लवण समुद्रमां गोस्तूप, ५०

उदकावास, शंख अने उदकसीम ए नामना अनुक्रमे सुवर्ण, अंकरत्न, रौप्य अने स्फाटिकना चार वेलंधर पर्वतो छे. गोस्तूप, शिवक, शंख अने मनोह्रद नामना चार देवताउनो तेमां आश्रय छे. ते बेंताळीश हजार योजन समुद्रमां जइए त्यारे चारे दिशाए चार आवेला छे तथा चार विदिशाउमां कर्कोटक, कार्दमक, कैलाश अने अरुणप्रज्ञ नामे चार सर्व रत्नमय एवा सुंदर अनुवेलंधर पर्वतो छे. ते पर्वतो उपर कर्कोटक, विद्युज्जिव्ह, कैलाश अने अरुणप्रज्ञ नामे तेना स्वामि देवो निरंतर वसे छे. ते सर्व पर्वतो एक हजार सातसोने एकत्रीश योजन उंचा छे, एक हजारने बावीश योजन मूळमां पहोळा छे अने चारसोने चोवीश योजन शिखर उपर पहोळा छे. ते सर्व पर्वतोनी उपर तेना स्वामी देवताउना शोज्ञनिक प्रासादो छे. वळी बार हजार योजन समुद्र तरफ जइए त्यारे पूर्व दिशा संबंधी बे विदिशामां बे चंद्र द्वीप छे, ते विस्तारमां अने पहोळाइमां पूर्व प्रमाणे छे. अने तेटलाज प्रमाणवाळा बे सूर्य द्वीपो पश्चिम दिशा संबंधी बे विदिशामां छे अने सुस्थित देवताना आश्रयजूत गौतमद्वीप ते बेनी वचमां छे. उपरांत लवण समुद्र संबंधी शिखानी आ बाजु अने बहारनी बाजु चालनारा चंद्रो अने सू-

दे० थोना आश्रयरूप द्वीपो बे, तथा तेनी उपर तेमना प्रासादो रहेला बे. ते लवण समुद्र सं०
लवण रसवाळो बे.

५१ लवण समुद्रनी फरतो तेनाथी बमणो पहोळो धातकीखंड नामे बीजो द्वीप बे. जंबुद्वीपमां मेरुपर्वत क्षेत्रो अने वर्षधर पर्वतो जेटला कहेला बे तेथी बमणा तेज नामना धातकीखंडमां बे. वधारामां उत्तर अने दक्षिणमां धातकीखंडनी पहोळाइ प्रमाणे बे इषुकार पर्वतो आवेला बे, तेनावडे विभाग पामेला पूर्वार्ध अने पश्चिमार्द्धमां जंबुद्वीपनी जेटली संख्यावाळा क्षेत्रो अने पर्वतो बे. ते धातकीखंडमां चक्रना आरा जेवा आकारवाळा अने निषध पर्वत जेटला उंचा तथा काळोदधि अने लवण समुद्रने फरशीने रहेला वर्षधर पर्वतो तथा इषुकार पर्वत बे अने आराना आंतरानी जेवां क्षेत्रो बे. धातकीखंड द्वीपनी फरतो कालोदधि नामे समुद्र आवेलो बे, ते आठ लाख योजनना विस्तारवाळो बे. तेनी फरतो पुष्करवर द्वीपार्द्ध तेटलोज प्रमाणवाळो बे. धातकीखंडमां इषुकार पर्वत सहित मेरु विगेरेनी संख्या संबंधी जे नियम कहेलो बे, तेज नियम पुष्करार्द्धमां पण बे, अने पुष्करार्द्धमां क्षेत्रादिकना प्रमाणनो नियम ५१

धातकीखंडना क्षेत्रादिकना विजागथी वमणो ठे. धातकीखंड अने पुष्करार्द्धमां मळीने चार नाना मेरु पर्वतो ठे. ते जंबुद्वीपना मेरुथी पंदरहजार योजन ठंडा ऊंचा अने ठसो योजन ठंडा विस्तारवाळा ठे. तेनो प्रथम कांड महामेरु जेटलोज ठे. बीजो कांड सात हजार योजन ठंडो अने त्रीजो कांड आठ हजार योजन ठंडो ठे. तेमां जद्रशाल अने नंदनवन मुख्य मेरुनी प्रमाणेज ठे. नंदनवनथी साडीपंचावन हजार योजन जइए त्यारे पांचसो योजन विशाळ एवुं सौमनस नामे वन ठे, एना उपर अठ्याविस हजार योजन जतां पांडुक वन ठे, ते मध्येनी चुलिका फरतुं चारसोने चोराणुं योजन विस्तारमां ठे. तेनो उपर अने नीचे महामेरुना जेटलोज विष्कंज ठे अने तेटलीज अवगाहना ठे तथा मुख्य मेरुनी जेटलाज प्रमाणवाळी तेनी चूलिका ठे. एवी रीते मानुषक्षेत्रमां अढीद्वीप, बे समुद्र पांत्रीस क्षेत्रो, पांच मेरु, त्रीस वर्षधर पर्वतो, पांच देवकुरु, पांच उत्तरकुरु अने एकसोने साठ विजयो ठे. पुष्करार्द्ध द्वीपनी फरतो मानुषोत्तर नामे पर्वत ठे, ते मनुष्य लोकनी बहार शहेरना किल्लानी जेम वर्तुलाकारे रहेलो ठे. ते सुवर्णनो ठे अने वाकीना पुष्क-

राऊमां सत्तरसोने एकविस योजन उंचो छे, चारसोने त्रीस योजन पृथ्वीमां रहेलो छे, एक हजारने बाविस योजन नीचे विस्तारमां छे, सातसोने त्रेवीस योजन मध्यभागे विस्तारमां छे अने चारसोने चोविस योजन उपर विस्तारमां छे. ते मानुष्योत्तर पर्वतनी बहार मनुष्योनुं जन्म मरण थतुं नथी. तेनी बहार गयेला चारणमुनि आदिक पण बहार मरण पामता नथी तेथी एनुं नाम मानुषोत्तर छे. एनी बहारनी भूमिपर बादराग्नि, मेघ, विद्युत, नदी अने काळ विगेरे नथी. ते मानुष्योत्तर पर्वतनी अंदरनी बाजुए (५६) अंतरद्वीपो अने पांत्रीस क्षेत्रो छे, तेमांज मनुष्यो उत्पन्न थाय छे; परंतु कोइए संहरण करवाथी, विद्याना बळथी, तथा लब्धिना योगथी मेरुपर्वत विगेरेना शिखरो उपर अढी द्वीपमां अने बंने समुद्रमां सर्वत्र मनुष्यो लाभे छे. तेमना भरत संबंधी, जंबुद्वीप संबंधी अने लवणसमुद्र संबंधी एम सर्व क्षेत्र, द्वीप, अने समुद्र संबंधी संज्ञाभेदे करीने जुदा जुदा विभाग कहेवाय छे.

मनुष्योना आर्य अने म्लेच्छ एवा बे भेद छे. आर्यो क्षेत्र, जाति, कुल, कर्म, शिल्प अने भाषाना भेदथी छ प्रकारना छे. क्षेत्रार्यो पंदर कर्मभूमिमां उत्पन्न थाय छे, तेमां

आ जरतक्षेत्रमां साडीपचवीश देशमां उत्पन्न थयेला आर्य कहेवाय छे. ए आर्यदेश पोताना नगरोथी आवी रीते उळखाय छे. राजगृही नगरीथी मगधदेश, चंपा नगरीथी अंगदेश, ताम्रलिप्तीथी वंगदेश, वाराणसीथी काशीदेश, कांचनपुरीथी कलिंगदेश, साकेत (अयोध्या) पुरीथी कोशळदेश, हस्तिनापुरथी कुरुदेश, शौर्यपुरथी कुशार्त्तदेश, कांपिल्यपुरथी पंचालदेश, अहिछत्रापुरीथी जंगलदेश, मिथिलापुरीथी विदेहदेश, द्वारावती (द्वारका) पुरीथी सौराष्ट्र (सोरठ) देश, कौशांबीपुरीथी वत्सदेश, जद्दिलपुरथी मलयदेश, नांदिपुरथी संदर्नदेश, पुनरुछापुरीथी वरुणदेश, वैराटनगरीथी मत्स्यदेश, शुक्तिमतीपुरीथी चेदीदेश, मृतिकावतीथी दशार्णदेश, वीतजयपुरथी सिंधुदेश, मथुरापुरीथी सौवीरदेश, अपापापुरीथी सूरसेनदेश, जंगीपुरीथी मासपुरी वर्त्तदेश, श्रावस्तीपुरीथी कुणाळदेश, कोटीवर्षपुरथी लाटदेश अने श्वेतंबीपुरीथी केतकार्द्धदेश, एम साडीपचवीश आर्यदेशो आ नगरोथी उळखाय छे. तीर्थंकर, चक्रवर्त्ति, वासुदेव अने बळजद्रोना ते देशोमांज जन्म थाय छे. इक्ष्वाकुवंश, ज्ञातवंश, विदेहवंश, कुरुवंश, उग्रवंश, जोजवंश अने राजन्यवंश, ए विगेरे वंशोमां उत्पन्न थयेला

मनुष्यो जाति आर्य कहेवाय छे. तथा कुलगर, चक्रवर्त्ती, वासुदेव अने बलभद्र तथा तेमनी त्रीजी पांचमी के सातमी पेढीथी चालेला शुद्धवंशमां उत्पन्न थयेला होय ते कुल आर्य कहेवाय छे. पूजन करवुं ने कराववुं, शास्त्र जणवां ने जणाववां, तेथी अने बीजा शुभ प्रयोगथी जेओ आजीविका चलावे ते कर्मार्य कहेवाय छे. थोडा पाप व्यापार वाळा, वस्त्र वणनारा, वस्त्र तूणनारा, कुंभार, नापित अने देवळ (पूजारा) विगेरे शिल्पार्य कहेवाय छे. जे उंची भाषाना नियमवाळा वर्णोथी पूर्वोक्त पांचे प्रकारना आर्योना व्यवहारने कहे छे, ते भाषार्य कहेवाय छे. म्लेच्छोमां शाक, यवन, शबर, बार्बर, काया, मुरुं, उडू, गोडू, पत्कणक, अरपाक, हूण, रोमक, पारसी, खस, खासिक, कांबिलिक, लकुश, भिल्ल, अंध्र, बुक्कस, पुलिंद, क्रौंचक, भ्रमरत, कुंच, चीन, वंक, मालव, द्रविड, कुलक्ष, किरात, कैकय, हयमुखा, हाथीमुखा, अश्वमुखा, अजमुखा, अश्वकर्णा, गजकर्णा, अने बीजा पण अनार्यो के जेओ धर्म एवा अक्षरोने पण जाणता नथी, तेमज धर्म तथा अधर्मने पृथक् समजता नथी तेओ म्लेच्छ कहेवाय छे. बीजा अंतरद्वीपोमां मनुष्यो छे तेओ पण युगलिआ होवाथी धर्म अधर्मने जाणता नथी. ए अंतरद्वीप छपन्न छे, तेमां

अठ्यावीस द्वीपो क्षुद्र हिमालय पर्वतने पूर्व अने पश्चिम बाजुने छेडे इशानकूण विगेरे चार विदिशामां लवण समुद्रमां नीकळेला दाढाउनी उपर रहेला छे. तेमां इशानकूणमां जंबुद्विपनी जगतिथी त्रणसो योजन लवण समुद्रमां जइए त्यां तेटलोज लांबो अने पहोळो एवो प्रथम "एकोरुक" नामे अंतरद्वीप छे. ए द्वीपमां ते द्वीपना नामथी उळखाता सर्व अंग उपांगमां सुंदर एवा मनुष्यो रहे छे फक्त एकोरुक द्वीपमांज नहि, पण बीजा बधा अंतरद्वीपोमां ते द्वीपना नामथी उळखाता मनुष्योज रहे छे एम जाणवुं. अग्निकूण विगेरे बाकीनी त्रण विदिशाउमां तेटलीज उंचाइए तेटलाज लांबा अने पहोळा आभासिक, लांगुलिक, अने वैषाणिक ए नामना अनुक्रमे द्वीपो रहेला छे. त्यार पछी जगतिथी चारसो योजन लवण समुद्रमां जइए त्यां तेटलीज लंबाइ अने तेटलाज विष्कंभवाळा इशान विगेरे विदिशाउमां हयकर्ण, गजकर्ण, गोकर्ण अने शुष्कलिकर्ण ए नामना अनुक्रमे अंतरद्वीपो छे. ते पछी जगतिथी पांचसो योजन दूर तेटलीज लंबाइ अने विष्कंभवाळा चार अंतरद्वीपो इशान विगेरे विदिशाउमां आदर्शमुख, मेषमुख, हयमुख अने गजमुख नामना अनुक्रमे आवेला छे. पछी छसें योजन दूर तेटलीज

लंबाइ अने विस्तारवाळा अश्वमुख, हस्तिमुख, सिंहमुख, अने व्याघ्रमुख नामना अंतरद्वीपो आवेला छे. पछी सातसो योजन दूर तेटलीज लंबाइ अने विस्तारवाळा अश्वकर्ण, सिंहकर्ण, हस्तिकर्ण अने कर्णप्रावरण नामे अंतरद्वीपो आवेला छे. ते पछी आठसो योजन दूर तेटलीज लंबाइए अने तेटलाज विष्कंभवाळा उल्कामुख, विद्युजिव्ह, मेषमुख अने विद्युद्दंत ए नामना चार द्वीपो इशान विगेरे दिशाउमां अनुक्रमे रहेलाछे. ते पछी जगतिथी लवणोदधिमां नवसो योजन जतां तेटलाज विष्कंभ अने लंबाइथी शोभता गूढदंत, घनदंत, श्रेष्टदंत अने शुद्धदंत नामे चार अंतरद्वीपो इशान विगेरे दिशाना क्रमथी रहेला छे. एज प्रमाणे शिखरी पर्वत उपर पण अठ्याविस द्वीप छे. एवी रीते सर्वे मळीने छपन्न अंतरद्वीपो छे.

मानुषोत्तर पर्वतनी पछी बीजुं पुष्करार्द्ध छे, ते पुष्करार्द्धनी फरतो ते आखा द्वीपथी बमणो पुष्करोदक समुद्र आवेलो छे. ते पछी वारुणीवर नामे द्वीप अने समुद्र आवेला छे. ते पछी क्षीरवर नामे द्वीप ने समुद्र छे, ते पछी घृतवर नामे द्वीप ने समुद्र छे. ते पछी इक्षुवर नामे द्वीप ने समुद्र छे. ते पछी आठमो नंदीश्वर नामे स्वर्गना जेवो द्वीप

आवेलो छे. ए वलयविष्कंभमां एकसोने त्रेसठ करोड तथा चोराशी लाख योजन छे. ए द्वीप विविध जातिना उद्यानवाळो अने देवताउने उपभोगनी भूमिरूप छे; तेमज प्रभुनी पूजामां आसक्त थयेला देवताउना आवागमनथी सुंदर छे. एना मध्य प्रदेशमां पूर्वादि दिशाउमां अनुक्रमे अंजन सरखा वर्णवाळा चार अंजन पर्वतो रहेला छे. ते पर्वतो तळीए दशहजार योजनथी कांइक अधिक विस्तारमां छे, अने उपर एकहजार योजन विस्तारवाळा छे. तेमज क्षुद्रमेरुना जेटला (८५००० योजन) उंचा छे. तेमां पूर्वमां देवरमण नामे, दक्षिणमां नित्योद्योत नामे, पश्चिममां स्वयंप्रभ नामे अने उत्तरमां रमणीय नामे अंजनाचल छे. ते चार पर्वतोनी उपर सो योजन लांबा, तेथी अर्द्ध विस्तारवाळा अने बोंतेर योजन उंचां अर्हत् भगवानना चैत्यो छे. ते दरेक चैत्यने चार चार द्वार छे. ते सोल योजन उंचां छे, प्रवेशमां आठ योजन अने विस्तारमां पण आठ योजन छे. ते द्वारो वैमानिक, असुरकुमार, नागकुमार अने सुवर्णकुमारना आश्रयरूप छे. अने तेउना नामथीज ते प्रख्यात छे. ते चार द्वारनी मध्यमां सोल योजन लंबाइवाळी, तेटलाज विस्तारवाळी अने आठ योजन उंची एक मणिपीठिका छे. ते पीठिका उपर

दे०

५५

सर्व रत्नमय देवछंदक छे. ते पीठिकाथी विस्तारमां अने उंचाइमां अधिक छे. दरेक देवछंदकनी उपर ऋषभ, वर्द्धमान, चंद्रानन अने वारिषेण ए चार नामवाळी पर्यंकआसने बेठेली, पोताना परिवारे सहित, रत्नमय शाश्वत अर्हंतनी एकसोने आठ आठ सुंदर प्रतिमाउ छे. दरेक प्रतिमानी साथे परिवारभूत, बे बे नाग, यक्ष, भूत अने कुंडधारी देवोनी प्रतिमाउ छे. बे बाजु बे चामरधार प्रतिमाउ छे, अने दरेक प्रतिमाना पृष्ठ भागे एक एक छत्रधार प्रतिमा छे. दरेक प्रतिमानी समीपे धुपघटी माळा, घंटा, अष्टमंगळिक, ध्वज, छत्र, तोरण, चंगेरी, नाना पुष्प पात्रो (पटलो) आसनो अने सोलपूर्ण कळश तथा बीजा अलंकारो छे. त्यांनी तळीआनी भूमिउमां सुवर्णनी सुंदर रजवाळी वालुका छे. ते देवायतन प्रमाणेज तेनी आगळ सुंदर मुखमंडपो, पेक्षार्थमंडपो, अक्षवाटिका अने मणिपीठिका छे. त्यां रमणिक स्तूप प्रतिमा छे, सुंदर चैत्यवृक्षो छे, इंद्रध्वजो छे, अने अनुक्रमे दिव्य वापिकाउ छे. प्रत्येक अंजनादिकनी चारे दिशाउए लाख लाख योजनना प्रमाणवाळी वापिकाउ छे. एटले कुल सोळ वापिका छे. तेमना नंदिषेणा, अमोघा, गोस्तूपा, सुदर्शना, नंदोत्तरा, नंदा, सुनंदा, नंदिवर्द्धना, भद्रा,

सं०

५५

विशाळा, कुमुदा, पुंडरिकिणीका, विजया, वैजयंती, जयंती अने अपराजिता एवां नामो ठे. ते प्रत्येक वापिकाउथी पांचसो योजन पछी अशोक, सप्तछद, चंपक अने आम्र ए नामवाळां मोटा उद्यानो रहेलां ठे. ते पांचसो योजन विस्तारमां ठे अने लाख योजन लांबां ठे. ते दरेक वापिकाउनी मध्यमां स्फाटिकमणिना, पालाना आकारना अने सुंदर वेदिका तथा उद्यानोवाळा सुशोभित दधिमुख पर्वतो ठे. ते चोसठ हजार योजन उंचा, एक हजार योजन ऊंडा अने उपर तथा नीचे दशहजार योजनना विस्तारवाळा ठे. वापिकाउना आंतरामां बे बे रतिकर पर्वतो ठे, एटले एकंदर बत्रीश रतिकर पर्वतो ठे. दधिमुख पर्वतो तथा रतिकर पर्वतो उपर अंजनगीरीनी जेम शाश्वत अर्हंतोनां चैत्यो ठे. ते द्वीपनी विदिशाउमां बीजा चार रतिकर पर्वतो ठे, ते दशहजार योजन लांबा तथा पहोळा अने एकहजार योजन उंचा, शोभायमान, सर्व रत्नमय, दिव्य अने झल्लरीना आकारवाळा ठे. तेमां दक्षिणमां रहेला सौधर्मेंद्रना बे रतिकर पर्वतो अने उत्तरमां रहेला इशानेंद्रना बे रतिकर पर्वतोनी आठे दिशाउमां तेमनी आठ आठ महादेवीउनी आठ आठ राजधानीउ छे, एटले कुल बत्रीश राजधानीउ ठे. ते रतिकरथी

एक लाख योजन दूर अने एक लाख योजनना प्रमाणवाळी (लांबी पहोळी) तथा जिनालयोथी विभूषित छे. तेना सुजाता, सौमनसा, अर्चिमाली, प्रभाकरा, पद्मा, शिवा, शुची, व्यंजना, भूता, भूतवंतसिका, गोस्तूपा, सुदर्शना, अमला, अप्सरा, रोहिणी, नवमी, रत्ना, रत्नोच्चया, सर्वरत्ना, रत्नसंचया, वसु, वसुमित्रिका, वसुभागा, वसुंधरा, नंदोत्तरा, नंदा, उत्तरकुरु, देवकुरु, कृष्णा, कृष्णराजी, रामा अने रामरक्षिता एवां नाम छे. ते नामो पूर्व दिशाना क्रमथी जाणवां. आ नंदीश्वरद्वीपमां रहेलां जिनचैत्योमां सर्वे ऋद्धिवाळा देवताओ परिवारसहित श्रीमत् अर्हंतोनी कल्याणक तिथिओए अष्टान्हिक उत्सव करे छे.

ते नंदीश्वरद्वीपनी फरतो नंदीश्वर समुद्र छे, ते पछी अरुणद्वीप छे, अने तेनी फरतो अरुणोदधि नामे समुद्र छे, ते पछी अरुण वरद्वीप अने अरुणवर समुद्र छे, पछी अरुणाभासद्वीप अने अरुणाभास समुद्र छे, ते पछी कुंडळद्वीप अने कुंडळोदधि नामे समुद्र छे, अने ते पछी रुचक नामे द्वीप अने रुचक नामे समुद्र छे. एवी रीते प्रशस्त नामवाळा अने एक एकथी बमणा बमणा प्रमाणवाळा द्वीपो अने समुद्रो अनुक्रमे

रहेला छे. ते सर्वनी अंते स्वयंभूरमण नामे छेल्लो समुद्र छे.

पूर्वोक्त अढीद्वीपमां देवकुरु अने उत्तरकुरु जेटला भागविना पांच महाविदेह, पांच भरत, अने पांच ऐरवत ए पंदर कर्मभूमिओ छे. कालोदधि, पुष्करोदधि अने स्वयंभूरमण ए त्रण समुद्र मीठा पाणीवाळा छे. लवण समुद्र खारा पाणीनो छे, तथा वारुणोदधिनां पाणी विचित्र प्रकारनी मनोहर मदिरा जेवां छे. क्षीरोदधि खांड मिश्रित घीनो चोथो भाग जेमां छे एवा गायना दुधना जेवा पाणीवाळो छे. घृतवर समुद्र उकाळेला गायना घीना जेवो छे, अने बीजा समुद्रो तज, एलाइची, केसर ने मरीना चूर्ण मिश्रित चोथा भागवाळा इक्षुरसना जेवा छे. लवणोदधि, कालोदधि अने स्वयंभूरमण ए त्रण समुद्र माछला, काचबा विगेरेथी संकीर्ण छे. ए सिवायना बीजा समुद्रो मत्स्य अने कूर्मादिथी संकीर्ण नथी (तेमां थोडा अने नाना मच्छादि छे).

जंबुद्वीपमां जघन्ये तीर्थंकरो, चक्रीओ, वासुदेवो अने बळदेवो चार चार होय छे; अने उत्कर्षथी चोत्रीस जिन अने त्रीस पार्थिवो (चक्रवर्ती के वासुदेव) थाय छे. धातकीखंड अने पुष्करार्द्ध खंडमां एथी बमणा थाय छे.

ए तिर्यग् लोकनी उपर नवसो योजन न्यून सातराज प्रमाणवाळो मोटी ऋद्धिवाळो उर्ध्वलोक छे. तेमां सौधम, इशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लांतक, शुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण अने अच्यूत ए नामना बार कल्पो (देवलोक) छे, अने नवग्रैवेयक छे. ते ग्रैवेयकना सुदर्शन, सुप्रबद्ध, मनोरम, सर्वभद्र, सुविशाळ, सुमन, सौमनस, प्रीतिकर अने आदित्य एवां नाम छे. ते पछी पांच अनुत्तर विमानो छे. तेनां विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित अने सर्वार्थसिद्ध एवां नाम छे. तेमां प्रथमना चार पूर्व दिशाना क्रमथी चार दिशाए रह्या छे, अने सर्वार्थसिद्ध विमान सर्वनी मध्यमां छे. त्यारबाद बार योजन उंचे सिद्धशिला छे. ते पिस्ताळिश लाख योजन लंबाइमां अने विस्तारमां छे, तेनी उपर त्रण गाउ पछी अनंतर चोथा गाउना छठे अंशे लोकाग्र सुधी सिद्धना जीवो छे, आ संभूतला पृथ्वीथी सौधर्म अने इशान कल्प सुधी दोढ राजलोक छे. सनत्कुमार अने माहेंद्रलोक सुधी अढी राजलोक छे, सहस्रार देवलोक सुधी पांचमुं राजलोक छे, अच्युत देवलोक सुधी छठ्ठुं राजलोक छे, अने लोकांत सुधी सातमुं राजलोक छे. सौधर्मकल्प अने इशानकल्प चंद्रमंडळना

जेवां वर्त्तुल छे, तेमां दक्षिणार्द्धमां सौधर्मकल्प अने उत्तरार्द्धमां इशानकल्प छे. सनत्कुमार अने माहेंद्र ए बन्ने देवलोक पण तेमनी तुल्य आकृतिवाळां छे, तेमां दक्षिणार्द्धमां सनत्कुमार देवलोक छे अने उत्तरार्द्धमां माहेंद्र देवलोक छे. लोकपुरुषनी कोणीवाळा भागमां अने लोकना मध्यभागमां ब्रह्म देवलोक छे, तेनो स्वामि ब्रह्मेंद्र छे. ते देवलोकना प्रांतभागमां सारस्वत, आदित्य, अग्नि, अरुण, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध, मरुत अने रिष्ट, ए नव जातिना लोकांतिक देवताउ छे. तेनी उपर लांतक कल्प छे त्यां तेज नामनो इंद्र छे. तेनी उपर महाशुक्र देवलोक छे त्यां पण तेज नामनो इंद्र छे. तेनी उपर सहस्रार देवलोक छे त्यां पण ते नामनोज इंद्र छे. तेनी उपर सौधर्म अने इशान देवलोक जेवी आकृतिवाळा आनत अने प्राणत देवलोक छे. तेमां प्राणतकल्पमां रहेनार प्राणत नामे इंद्र ते बन्ने देवलोकनो स्वामी छे. तेनी उपर तेवीज आकृतिवाळा आरण अने अच्युत नामे बे देवलोक छे. अच्युत देवलोकमां रहेनार अच्युत नामे इंद्र ते बन्ने देवलोकनो स्वामि छे. ग्रैवेयकमां अने अनुत्तरोमां अहमिंद्र देवताउ छे. पहेला बे कल्पो घनोदधिने आधारे रहेला छे, अने ते पछीना

त्रण कल्पो वायुने आधारे स्थिति करीने रहेलां छे. ते पछीना त्रण देवलोक घनोदधि अने घनवातने आधारे रहेलां छे, अने तेनी उपर सर्व देवलोक आकाशने आधारे छे. तेमां इंद्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश, पार्षद्य, अंगरक्षक, लोकपाल, अनीक, प्रकीर्ण, आभियोगिक, अने किल्बिषिक ए दश प्रकारना देवताओ रहेला छे. सामानिक वगेरे सर्व देवताओना जे अधिपति ते इंद्र कहेवाय छे. इंद्रनी जेवी ऋद्धिवाळा पण इंद्रपणे वर्जित ए सामानिक देवता कहेवाय छे. जे इंद्रना मंत्री अने पुरोहित जेवा छे ते त्रायत्रिंश देवता कहेवाय छे. जे इंद्रना मित्र सरखा छे ते पार्षद्य देवता कहेवाय छे. इंद्रना आत्मानी रक्षा करवावाळा ते आत्मरक्षक देवता कहेवाय छे. देवलोकनी रक्षा करवाने अर्थे रक्षको थइने फरनारा ते लोकपाल कहेवाय छे. सेना समान ते अनीक देवता कहेवाय छे. प्रजावर्गनी जेवा ते प्रकीर्ण देवता कहेवाय छे. सेवक सरखा छे ते अभियोग्य देवता कहेवाय छे. अने चंडाळजातिनी जेवा छे ते किल्विष देवता कहेवाय छे. ज्योतिष्क अने व्यंतर देवोमां त्रायत्रिंश देवो अने लोकपाल नथी.

सौधर्मकल्पमां बत्रीस लाख विमान छे, इशान देवलोकमां अठ्याविस लाख छे,

सनत्कुमारमां बार लाख छे, महेंद्रमां आठ लाख छे, ब्रह्मदेवलोकमां चार लाख छे, लांतकदेवलोकमां पचास हजार छे, शुक्रदेवलोकमां चाळीस हजार छे, सहस्रार देवलोकमां छ हजार छे, नवमा, दशमा देवलोकमां मळीने चारसो अने आरण तथा अच्युत देवलोकमां त्रणसो विमान छे, आद्य त्रण ग्रैवेयकमां एकसो अग्यार विमान छे, मध्यना त्रण ग्रैवेयकमां एकसो सात विमानो छे अने छेल्ला त्रण ग्रैवेयकमां एकसो विमानो छे, अनुत्तर विमानो पांचज छे. एवी रीते एकंदर चोराशी लाख सत्ताणुं हजार ने त्रेवीस विमानो छे. अनुत्तर विमानो मांहेना चार विजयादिक विमानोमां द्विचरिम देवता छे अने पांचमा सर्वार्थसिद्ध विमानमां एकचरिम देवता छे. सौधर्मकल्पथी मांडीने सर्वार्थसिद्धि विमान सुधीना देवताओ स्थिति, कांति, प्रभाव, लेश्यानी विशुद्धि, सुख, इंद्रियोना विषय अने अवधिज्ञानमां पूर्व पूर्वथी उत्तर उत्तर अधिक अधिक छे अने परिग्रह (परिवारादि) अभिमान, शरीर अने गमनक्रियामां अनुक्रमे ओछा ओछा छे. सर्वथी जघन्य स्थितिवाळा देवताओने सात स्तोकने अंतरे उच्छ्वास अने चोथभक्त (एक अहोरात्र) ने अंतरे आहार छे, पल्योपम स्थितिवाळा देवताओने दिवसने आंतरे

उश्वास अने पृथक दिवसे (बेथी नव दिवसे) आहार छे, त्यार पछी जे देवतानी जेटला सागरोपमनी स्थिति छे ते देवताने तेटला पक्षे उश्वास अने तेटला हजार वर्षे आहार छे. एटले तेत्रीस सागरोपम आयुष्यवाळा सर्वार्थसिद्धना देवताउने तेत्रीस पखवाडीए श्वासोश्वास अने तेत्रीस हजार वर्षे आहार छे, घणुं करीने देवताउ सद्वेदनावाळाज होय छे, कदी असद्वेदनावाळा थाय छे तो तेनी स्थिति अंतर्मुहूर्त्त जेटली ज छे. मुहूर्त्त उपरांत असद्वेदना थती नथी. देवीउनी उत्पत्ति इशान देवलोक सुधी छे, अच्युत देवलोक सुधीना देवताउं गमनागमन करे छे, ज्योतिष्क देवता सुधी तापसो उत्पन्न थाय छे, ब्रह्मदेवलोक सुधी चरक अने परिव्राजकोनी उत्पत्ति छे, सहस्रार देवलोक सुधी तिर्यंचोनी उत्पत्ति छे, श्रावकोनी उत्पत्ति अच्युत देवलोक सुधी छे, जैन लिंग धारण करेलुं छतां मिथ्यादृष्टि—अजव्यादि, समाचारी यथार्थ पालनाराउनी छेल्ला ग्रैवेयक सुधी उत्पत्ति छे, पूर्ण चौद पूर्वी मुनिनी ब्रह्मलोकथी मांडीने सर्वार्थसिद्ध विमान सुधी उत्पत्ति छे तथा सद्व्रतवाळा साधु अने श्रावकोनी जघन्यपणे पण सौधर्म देवलोकमां उत्पत्ति छे.

ज़ुवमपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने इशान देवलोक सुधीना देवोने पोताना ज़ुवनमां वसनारी देवीजनी साथे विषय संबंधी अंग सेवा छे, तेउ संक्लिष्ट कर्मवाळा अने तीव्र अनुरागवाळा होवाथी मनुष्योनी जेम कामज़ोगमां लीन थाय छे अने देवांगनाना सर्व अंग संबंधी प्रीतिने मेळवे छे, त्यार पछी बे देवलोकना देवो स्पर्श मात्रथी, बे देवलोकना देवो रुप जोवाथी, बे देवलोकना देवो शब्द श्रवणथी, अने आनत विगेरे चार देवलोकना देवो मात्र मनवडे चिंतववाथी विषयने धारण करनारा छे. ए प्रमाणे विषयरसमां प्रविचारवाळा देवताउथी अनंतसुखवाळा देवताउ ग्रैवेयकादिसां छे के जेउ विषय संबंधी वीलकुल प्रविचार रहित छे.

एवी रीते अधोलोक, तिर्यक्लोक, अने उर्ध्वलोकथी ज़ेद पामेला समग्र लोकना मध्यज़ागमां चौद राजलोक प्रमाण उर्ध अधो लांबी त्रसनाडी छे अने पहोळाइमां ज़े विस्तारमां एक राजलोक प्रमाण छे. ए त्रसनाडीनी अंदर थावर अने त्रस बने छे अने एनी बहार मात्र स्थावरज छे. कुल विस्तार नीचे सात राजलोक प्रमाण मध्यमां तिर्यक् लोके एक राजलोक प्रमाण, ब्रह्म देवलोके पांच राजलोक प्रमाण अने प-

दे० यंते सिद्धसिला ए एक राजलोक प्रमाण छे. सारी रीते प्रतिष्टित थयेलो आकृति- सं०
वाळो आ लोक कोइए कर्यो नथी अने कोइए धारण कर्यो नथी, ते स्वयंसिद्ध निराधार
६० पणे आकाशमां रहेलो छे.

अशुन्नध्यानना प्रतिषेधनुं कारणजूत एवुं आ समग्रलोकनुं अथवा तेना जुदा जुदा विज्ञागनुं जे बुद्धिमान चिंतवन करे छे, तेने धर्मध्यान संबंधी क्षायोपशमादिक ज्ञावनी प्राप्ति थाय छे अने पीतलेश्या, पद्मलेश्या, तथा शुक्ललेश्या अनुक्रमे शुद्ध शुद्ध थाय छे. घणा वैराग्यना संगथी तरंगित थयेला धर्मध्यानवडे प्राणीउने पोतेज जाणी शके तेवुं (स्वसंवेद्य) अतींद्रिय सुख उत्पन्न थाय छे. जे योगीउ निसंःग थइ धर्मध्यान वडे आ शरीरने छोडे छे, तेउ ग्रैवेयकादि स्वर्गोमां उत्तम देवता थाय छे, त्यां तेउ महिमावाळा सौज्ञाग्ययुक्त, शरदऋतुना चंद्र जेवी प्रज्ञाववाळा अने पुष्पमाळा तथा वस्त्रालंकारथी विजूषित एवा शरीरने प्राप्त करे छे, विशिष्ट वीर्यने रोकनार, कामार्तिरूप ज्वर विनाना अने अंतरायरहित अतुल्य सुखने चिरकाळ सेवे छे अने मनइछित मळेला सर्व अर्थोए मनोहर एवा सुखरूप अमृतने निर्विघ्ने जोगवता पोताना चाल्या ६०

जता जन्मने जाणता पण नथी; एवा दिव्यजोगने अवसाने त्यांथी चवीने तेउ उत्तम शरीर बांधी मनुष्यलोकमां अवतरे छे, मनुष्यपणामां पण दिव्य वंशमां उत्पन्न थइ अखंडित मनोरथवाळा तेउ नित्य उत्सवथी मनने आनंद आपनारा विविध प्रकारना जोग जोगवे छे. पछी विवेकनो आश्रय करी सर्व जोगथी विराम पामी ध्यानवडे सर्व कर्मनो नाश करीने अव्ययपद प्रत्ये पामे छे.

श्री संजवनाथजीनी देशना.

आ संसारमां वस्तुताए सर्व वस्तु अनित्य छे, तथापि प्रथम लागती सहजमात्र मीठाशना सुखने माटे प्राणीउने तेमां मुर्छा रह्यां करे छे. पोताथी, बीजाउथी अने वधी तरफथी जेउने आपत्ति हम्मेशां आव्यां करे छे एवा प्राणीउ यमराजना दांतरूप यंत्रमां रहीने पण अहा! केवा कष्टथी जीवे छे! अनित्यता, वज्र जेवा देहोने पण सपडावे छे, तो आ कदलीना गर्ज जेवा प्राणीउनी तो शी वात करवी? जो कदि आ असार शरीरने स्थिर करवाने कोइ इछे तो ते जुना अने सडेला घासना बनावेला चाडी-

दे० आना पुरुषनेज स्थिर करवाने इछेछे एम समजवुं. मरणरूपी वाघनी मुख गुफामां सं०
वसनारा प्राणीउनुं रक्षण करवाने माटे मंत्र, तंत्र अने चिकित्सा सर्वे नकामा छे. जेम
६१ जेम पुरुष वयमां वधतो जाय छे तेम तेम प्रथम तेने जरावस्था ग्रस्त करती जाय छे
अने पछी तेने माटे यमराज त्वरा करे छे. अहा! प्राणीउना जन्मने धिक्कार छे! 'आ
शरीर यमराजाने वश रहेलुं छे' एम जो खरेखरुं जाणवामां आवे तो पछी कोइ पण
प्राणी अन्नना ग्रासने ग्रहण करी शके नहि तो पापकर्मनी तो वातज शी करवी? जेम
पाणीमां परपोटा उत्पन्न थइ थइने विलय पामी जाय छे तेम प्राणीउनां शरीर क्षण क्ष-
णमां उत्पन्न थइने विलय पामे छे. समदृष्टिवाळो काळ, धनाढ्य के निर्धन, राजा के रांक,
समजु के मूर्ख, अने सज्जन के दुर्जन, सर्वनो सरखी रीते संहार करवाने प्रवर्त्ते छे. ए का-
ळने गुणमां दाक्षिण्यता नथी अने दोषोमां द्वेष नथी, पण ते तो मोटा अरण्यने दावा-
नळनी जेम सर्व प्राणीउनो संहारज कर्या करे छे. कुशास्त्रथी मोह पामेला पुरुषोए कोइ
पण उपायथी आ काया निरपाय थाय एवी शंका पण करवी नहीं. जेउ मेरुपर्वतनो दंड
अने पृथ्वीनुं छत्र करवाने समर्थ होय छे तेउ पण पोताने वा बीजाने मृत्युथी बचाववाने ६१

समर्थ थता नथी. कीडाथी मांडीने इंद्र सुधी ते यमराजनुं शासन समर्थ रीते प्रवर्ते छे, तेमांथी कोइ रीते काळने वंचना करवानी वात डाह्यो माणस तो बोलेज नहीं. कदि कोइए पोताना पूर्वजोमांथी कोइने पण जो जीवतो रहेलो जोयो होय तो ते काळने वंचना करवानी वात न्यायमार्गथी उलटी रीते पण संभवे खरी! पण तेवुं तो जणातुं नथी. 'बळ अने रुपने हरण करनारी वृद्धावस्थाथी शीथील थवाय छे' ए वातना अनुभवथी विद्वान पुरुषोने तो यौवनवय अनित्य छे एवी खात्री थवीज जोइए कामीनीउ कामदेवनी लीलाथी यौवनवयमां जेमनी इच्छा करती हती तेज पुरुषोने वृद्धावस्थामां तेउ थुंकी थुंकीने तजी दे छे. धनवान पुरुषोए जे धन घणा क्लेशथी मेळवी उपभोग कर्यावगर रक्षण करीने एकठुं करी राख्युं होयछे ते पण क्षणवारमां विनाश पामी जाय छे, जोता जोतामां अवश्य नाश पामी जता एवा धनवानना धनने फीण, परपोटा अने विजळीनी उपमा केम न आपी शकाय? पोतानो वा बीजानो गमे त्यां न्यास करो, तेमज विचार के अपकार करो पण आ संसारमां मित्र के बंधुजनोना जे समागम छे ते छेवटे विनाश पामनारा छे. जेउ हमेशां अनित्यतानुं ध्यान करे छे तेउ

पोतानो पुत्र मृत्यु पामी जाय तोपण तेनो शोक करता नथी, अने जे मूढ नित्यतानो आग्रह राखे छे ते पोतानी एक दिवाल पडी जाय त्यारे पण रुदन करे छे. शरीर, यौवन, धन अने बंधु विगेरेज फक्त अनित्य छे एम नथी पण आ सघळुं सचराचर जगतज अनित्यपणे रहेलुं छे. आवी रीते आ सर्वने अनित्य जाणीने प्राणीओए परिग्रहनो त्याग करी नित्य सुखवाळुं शाश्वतपद (मोक्ष) मेळववाने माटे प्रयत्न करवो."

श्री अभिनंदनजीनी देशना.

आ संसार एक विपत्तिनी खाणरूप छे, एमां पडता मनुष्यने पिता, माता, मित्र, बंधु के बीजा कोइपण शरणरूप थता नथी, इंद्र अने उपेंद्रादि जेवा पण जे मृत्युना सपाटामां आवे छे ते मृत्युने पण पीडा करनार एवो कयो पुरुष शरणेच्छु जनोने शरण करवा लायक छे? अहा! आ संसारमां पिता, माता, ब्हेन, भाइ अने पुत्रो जोइ रहे छे अने रक्षण वगरना आ जीवने तेनां कर्मो यमराजना गृहमां दोरीने लइ जाय छे. मूढ बुद्धिवाळा पुरुषो पोताना कर्मोथी मृत्युने पामता एवा स्वजनने जोइ शोक करे छे, पण तेओ 'पोताना आत्माने पण कर्मो तेवीज रीते लइ जशे' एम शोक करता नथी.

मोटा भयंकर जंगलमां मृगना बच्चांनी जेम दुःखरूपी दावानळनी प्रज्वलित ज्वाळाओथी विकाळ एवा आ संसारमां प्राणीने कोइ पण शरणभूत नथी. अष्टांग आयुर्वेदथी संजीवनी ओषधिओथी अने मृत्युंजयादिक मंत्रोवडे पण मृत्युथी रक्षण थतुं नथी. खड्गना पांजराना मध्य भागमां रहेला अने चतुरंग सेनाथी विंटायेला मोटा राजाने पण यमराजना किंकरो रांकनी पेठे हठथी खेंची जाय छे. जेम पशुओ मृत्युथी बचवानो उपाय जाणतां नथी तेम विद्वानो पण जाणता नथी ए केवी मूढता कहेवाय? जेओ खड्ग मात्रना साधनथी पृथ्वीने निष्कंटक करे छे तेओ यमराजनी भृकुटीथी भय पामीने मुखमां आंगळीओ घाले छे, ए केवी विचित्र वार्त्ता! पाप रहित मुनीओनां खड्गनी धारा जेवां व्रतो पण मृत्युनो उपाय करी शकतां नथी. अहा! शरण विनानुं, राजा विनानुं, नायक विनानुं अने उपाय वगरनुं आ जगत् यमराजरूपी राक्षसथी गळी जवाय छे!! जे धर्मरूप उपाय छे तेपण मृत्युनी सामे चालतो नथी, पण ते उपाय शुभ गतिने आपनारो गणाय छे; तेथी प्रव्रज्यारूप उपायने ग्रहण करीने जेमां अक्षय सुख छे एवा मोक्षने माटे प्रयत्न करवो.

श्री सुमतिनाथजीनी देशना.

आ जगत्मां कार्याकार्यना ज्ञानती योग्यताने पामेला प्राणीए पोताना कर्त्तव्यमां मूढ रहेवुं न जोइए. पुत्र, मित्र तथा स्त्री विगेरेनी अने पोताना शरीरनी पण जे सत्क्रिया करवामां आवे छे ते सर्व परकार्य छे, तेमां कांइ पण स्वकार्य नथी. प्राणी एकलोज उत्पन्न थाय छे, एकलोज मृत्यु पामे छे, अने भवांतरे संचित करेल कर्मोने एकलोज अनुभवे छे. एके चोरीथी उपार्जन करेलुं धन वधा मळीने खाइ जाय छे अने ते चोरी करनारने एकलानेज नरकमां पोताना कर्मथी दुःख भोगववां पडे छे. दुःखरूप दावानलथी भयंकर अने विस्तारवाळा आ भवरूप अरण्यमां कर्मने वश थयेलो प्राणी एकलोज भटक्या करे छे. आ जीवने बांधव विगेरे कोइपण सहायकारी थता नथी. जो शरीर सहायकारी छे एम कहीए तो ते शरीर तो उलटुं सुख दुःखना अनुभवने आपनारुं छे. सुख दुःखना अनुभवने आपनारुं शरीर सहायकारी छे एम जो कहीए तो ते पूर्वभवमांथी साथे आवतुं नथी अने आगला भवमां साथे आववानुं पण नथी तेथी संफेटमां (हरूफेटमां) आवी मळेली कायाने सहायकारी केम कहेवाय? धर्मने अधर्म

सहायकारी ठे एम जो मानीए तो ते पण सत्य नथी कारण के धर्म अधर्मनी सहायता मोक्षमां बीलकुल नथी. तेथी आ संसारमां शुभ अशुभ कर्म करतो प्राणी एकलो भटके ठे अने पोताना शुभाशुभ कर्मने योग्य शुभ अशुभफळने अनुभवे ठे. तेज प्रमाणे अनुत्तर एवी मोक्ष लक्ष्मीने पण एकलोज ग्रहण करे ठे; कारण के त्यां पूर्वोक्त सर्व संबंधीउनो विरह होवाथी बीजा कोइने साथे रहेवानो संभव नथी. माटे संसार संबंधी दुःख अने मोक्ष संबंधी सुख तेने प्राणी एकलोज भोगवे ठे, तेमां कोइ सहायकारी नथी. जेवी रीते हाथ पग बूटा होय तेवो माणस एकलो तत्काळ समुद्रना पारने पामी शके ठे. पण हृदय, हाथ, पग विगेरेथी बांधी लीधेलो माणस तेनो पार पामी शकतो नथी, ते प्रमाणे जे धन अने देह विगेरेनी उपर आसक्तिवाळो होय ठे ते आ भवसमुद्रनो पार पामी शकतो नथी. परंतु तेनी उपरनी आसक्ति विनानो एकलो स्वस्थ प्राणी होय ते आ भवसमुद्रना पारने तत्काल पामे ठे, माटे सांसारिक सर्व संबंधने ठोडी दइने प्राणीए एकलापणे शाश्वत आनंद सुखवाळा मोक्षने माटे यत्न करवो.

श्री पद्मप्रनुजीनी देशना.

आ घोर संसार समुद्रना जेवो अपार छे, तेमां चोराशी लाख जीवायोनीने विषे प्राणी रखड्यां करे छे. आ संसाररूपी नाटकमां संसारी प्राणीउ श्रोत्रीय, चंमाळ, स्वामी, सेवक, ब्रह्मा, अने कृमीना वेषो धरी धरीने अनेक चेष्टाउ करे छे. संसारी प्राणी कर्मना संबंधथी जाडे राखेली कुंपडीनी जेम कइ योनिमां नथी गयो अने कइ योनि तेणे छोडी नथी? आ समग्र लोकाकाशमां पोत पोताना कर्मथी दरेक प्राणीए नाना रूपो धरीने स्पर्श कर्यो न होय, तेवी वालाग्र मात्र पृथ्वी पण नथी. अर्थात् सर्व प्रदेशनो तेणे स्पर्श करेलो छे. आ जगत्मां नारकी, तिर्यंच, मनुष्य अने देव ए चार प्रकारना प्राणीउ छे, तेउ प्रायः कर्मना संबंधथी बाधित थइने घणुं दुःख जोगव्यां करे छे. पहेली त्रण नरकोमां मात्र उष्ण वेदना छे, छेल्ली त्रण नरकोमां शीतळ वेदना छे, अने मध्यनी चोथी नरकमां उष्ण अने शीतळ बन्ने प्रकारनी क्षेत्रवेदना छे, ते अनुसारे ते ते क्षेत्रमां दुःख थयां करे छे. ए उष्ण अने शीतळ नरकोमां लोढानो पर्वत पण कदी लइ जवामां आवे तो ते त्यांनी नूमिनो स्पर्श कर्या अगाउज उगळी जाय छे अथवा वेरण

शीर्ण थइ जाय छे. ए प्रमाणेनी क्षेत्रवेदना उपरांत परस्पर नारकी जीवोए उपजावेली वेदना तथा परमाधामीकृत वेदना एम त्रण प्रकारनी वेदनाउए जेमने महा दुःख उत्पादन करेलुं छे, एवा नारकीउ विविध दुःखोथी पीकित थइने ते नर्कजूमिमां वसे छे. घटी यंत्रोमां उत्पन्न थयेला नारकी जीवोने परमाधार्मिक देवो सीसानी सळीयो जेम जतरमामांथी खेंचे तेम लघुद्वारथी आकर्षण करे छे. केटलाएक नारकी जीवोने वस्त्रोने जेम रजको पछाके तेम हाथ पग विगेरेथी पकमीने वज्रकंटक जेवी संकटकारी शिलाना पृष्ट उपर परमाधामीउ पछामे छे, कोइ ठेकाणे तेउने काष्टनी जेम दारुण करवतथी विदारे छे अने कोइ ठेकाणे तलनी जेम विचित्र यंत्रोथी पीलवामां आवे छे. वळी नित्य तृषातुर एवा ते रांकमाउने त्यांथी लइ जइने तृषा शांत करावदा माटे तरवा अने सीसाना रसने वहन करनारी वैतरिणी नामनी नदीमां उतारवामां आवे छे. कदी ते प्राणीउने छायामां बेसवानी इछा थाय तो तेमने असिपत्र वनमां लइ जाय छे, त्यां ए वनमां रहेला वृक्षोना शस्त्र जेवा पत्रो पमवाथी तेउना तिल तिल जेवमा कटका थइ जाय छे. कोइ ठेकाणे वज्रकंटक जेवा शाल्मलीना वृक्षनी साथे अने कोइ ठेकाणे अत्यंत

तपावेली लोढानी पुतळीउनी साथे आलिंगन करावे छे अने ते वखते तेउए करेला परस्त्री-उना आलिंगननुं स्मरण करावे छे. कोइ ठेकाणे पूर्वे करेलुं मांस जक्षणनुं लोलुपपणुं याद आपीने तेमने तेउना अंगनुंज मांस तोडी तोडीने खवराववामां आवे छे अने पूर्वे करेली मदिरापाननी लोलुपताने स्मरण करावीने तपेलुं तरवुं पावामां आवे छे, त्यां ज्राष्ट्र खरज, महाशूल, अने कुंजीपाक विगेरेनी वेदनानो निरंतर अनुजव करावे छे तथा मांसनी पेठे तेउने शेकवामां आवे छे. ते प्राणीउनां शरीर छिन्न जिन्न थइने पाछां मळी जाय तेवां छे. तेउनां नेत्रादिक अंगो वगला अने कंक विगेरे पक्षीउ पासे खेंचावे छे. आ प्रमाणे महा दुःखोथी हणायला अने सुखना एक अंशथी पण रहित प्राणीउ त्यां रहीने यावत् तेत्रीश सागरोपम जेवा मोटा काळने निर्गमन करे छे.

केटलाएक प्राणीउ तिर्यंच गतिने प्राप्त थइ तेमां पण एकेन्द्रियपणुं पामे छे अने तेमां पण पृथ्वीकायरूपने प्राप्त थइ हलादिक शस्त्रोथी फडाय छे, हाथी, घोडा विगेरेथी चोळाय छे, जळ प्रवाहोथी प्लावीत थाय छे, दावानळथी बळी जाय छे, खारा, खाटा अने मूत्रादिकना जलथी व्यथा पामे छे. लवण क्षारने पाम्या होय छे तो उष्ण

जळमां तेने उकाळवामां आवे छे, कुंभार प्रमुख तेना देहनी घणा ईंट विगेरे करीने तेने पकावे छे भींतमां गारारूप थइने चणाय छे. कोइ वार मृतिकाना पुट पाकवडे पकवीने तेने शराणथी घसे छे, कोइवार टांकणाथी तेमनुं विदारण थाय छे, अने पर्वतनी सरिताना प्रवाहोथी फाटी नंखाय छे. अपकायपणाने पामेला जंतुओ सूर्यना किरणोथी तपाय छे, हिमरूपे घनीभूत कराय छे, रजथी शोषण कराय छे. घणा वार रसना संपर्कथी परस्पर मृत्यु पामे छे. स्थाळीनी अंदर राखीने पचवाय छे अने तृषावाळा माणसोथी पीवाय छे. तेउकायपणाने पामेला जंतुओ जलादिकथी बुझावाय छे घण विगेरेथी कुटाय छे अने ईंधणादिकथी दग्ध कराय छे, वायुकायपणाने पामेला जंतुओ पंखा विगेरेथी हणाय छे, क्षणे क्षणे शीतोष्ण प्रमुख द्रव्यना योगथी मृत्यु पामे छे, प्राचीननी अर्वाचिनथी विराधना थाय छे, मुखादिकना पवनोथी बाधा पामे छे अने सर्प प्रमुखथी पान कराय छे, कंद प्रमुख दश प्रकारनी वनस्पतिकायने पामेला जंतुओ हमेशां छेदाय छे, भेदाय छे, अग्निना योगथी पचावाय छे. परस्पर घर्षणोथी पीलाय छे, अन्य प्रयोगवडे शोषण थाय छे. खावाना लोलपीओ क्षार प्रमुखना योगथी तेने बाळे छे अने

एकत्र पण करे छे. सर्व अवस्थामां भक्षण कराय छे, पवनोथी भंगाय छे, दावानळोथी भस्म कराय छे, अने नदीना प्रवाहथी उखेडाय छे एवी रीते सर्व वनस्पतिओ सर्वने भोग्य थइ पडे छे अने सर्व प्रकारना शस्त्रोथी तेओ सर्वदा क्लेशनी परंपरानो अनुभव करे छे. बे इंद्रीयपणामां पूरा विगेरे थइने तपाय छे अने पीवाय छे. कृमियो थाय छे तो चरणोथी चूर्ण थाय छे अने चकला विगेरे पक्षीओ तेमनुं भक्षण करे छे, शंखादिक जंतुओ खोदाय छे, जलौकादिकनो निष्कर्ष थाय छे अने गंडुपद विगेरे जंतुओनो औषधादिवडे जठरमांथी पात थाय छे, त्रींद्रियपणामां जु अने माकड विगेरे शरीर साथे चोळाय छे अने उष्ण जळथी तपाय छे, कीडीओ पगथी अने संमार्जनथी पीडाय छे अने अदृश्य एवा कंथवा विगेरेनुं आसनादिकथी मथन थाय छे, चतुरिंद्रियपणामां मधमाखी अने भमरादिक जंतुओ मधुभक्षक पुरुषोए करेला लाकडी तथा ढेखाळादिकना ताडनोथी विराधाय छे, डांस अने मसला प्रमुख प्राणीओ पंखा विगेरेथी तत्काल ताडन कराय छे, गरोळी विगेरे मक्षिका तथा करोळीआ विगेरेने गळे छे, पंचेन्द्रियपणामां जळचर प्राणीओ उत्सुक थइने परस्पर एक बीजानुं भक्षण करे छे अने धीमर लोको तेओने पकडे छे. तथा

चरबीना अर्थी चरबीने माटे तेमने गाळे छे, स्थलचरोमां उत्पन्न थयेला प्राणीओमां मांसने खानारा बलवान् सिंह प्रमुख प्राणीओ निर्बळ एवा मृगादिकने मारी नांखे छे. अने मृगया करनारा पुरुषो शिकार करवामां पोताना, चित्तने आशक्त करीने क्रीडाथी वा मांसनी इच्छाथी अनेक उपायो रचीने ते निरपराधी प्राणीओने हणे छे. केटलाएक प्राणीओ क्षुधा, पिपासा, शीत, उष्ण अने अति भारनुं वहन करवा विगेरेथी तेमज चाबुक, अंकुश, कोरडाना मारथी असह्य वेदनाने सहन करे छे. खेचर प्राणीओमां तेतर, शुक, कपोत अने चकला विगेरे केटलांएक प्राणीओने मांसमां लुब्ध थयेला श्येन, सींचाणा अने गीध पक्षीओ पकडीने ग्रास करे छे. केटलाएक मांसना लोभी पक्षीना शिकारी पुरुषो अनेक जातना उपाय विस्तारी तेओने पकडे छे, अने अनेक जातनी विडंबनाथी तेमनो विनाश करे छे. तिर्यंच पक्षीओने जल अग्नि अने शस्त्र विगेरेथी सर्व रीते भय रह्या करे छे. अहा! पोत पोताना कर्मबंधनुं निबंधन केटलुंक वर्णन करीए.

मनुष्यपणुं प्राप्त थया छतां पण अनार्यदेशमां उत्पन्न थयेला प्राणीओ एवुं पाप करे छे, के जे कही शकाय तेवुं पण नथी. आर्यदेशमां पण चंडाल अने स्वपचादि जातिमां

टे० ६३

उत्पन्न थाय छे तेज पण तेवां पाप करे छे, अने तेने अनुसारे महादुःखनो अनुजव करे छे. केटलाएक प्राणीज आर्यदेशमां उत्पन्न थया छतां अनार्य चेष्टावाळा होय छे, अने तेने लीधे तेज दुःख दारिद्र अने दुर्जाग्यथी दग्ध थइने निरंतर दुःख जोगवे छे. केटलाक मनुष्यो परनी संपत्तिना उत्कर्षथी अने पोतानी संपत्तिना अपकर्षथी तेमज बीजानी सेवा करवावडे दग्ध चित्तवाळा थवाथी दुःखे करी जीवे छे. केटलाएक दीन पुरुषो रोग, जरा अने मृत्युथी ग्रस्त थइने तथा नीच कर्मवडे कदर्थना पामीने दया उत्पन्न करे तेवी दुःखदशाने अनुजवे छे. वळी मनुष्यपणामां पण घोर नरकमां निवास करवा जेवा गर्जवासना दुःखने अनुजवे छे. गर्जवास जेवा दुःखनुं कारण छे तेवा दुःखनुं कारण जरा, रोग, मृत्यु अने दासपणुं पण नथी. तपावीने करेली अग्निजेवा वर्णवाळी सोयोथी रोमे रोमे जेदायेला पुरुषने जेटलुं दुःख थाय छे, तेनाथी आठगणुं दुःख प्राणीने गर्जवासमां उत्पन्न थाय छे. वळी योनियंत्रमांथी नीकळती वखत प्राणीने जे दुःख थाय छे, ते गर्जवासना दुःखथी पण अनंतगुणुं छे. जन्म्या पछी पण बाल्यवयमां मूत्र विष्टाथी, योवनवयमां रति विलासोथी अने वृद्धावस्थामां श्वास तथा खांसीना रोगथी

सं० ६३

ए प्राणी पीडाय छे, तथापि तेने कदीपण लज्जा आवती नथी. प्राणी प्रथम बाल्याव-स्थामां विष्टानो भुंडर, पछी योवनावस्थामां कामदेवनो गधेडो अने छेवटे वृद्धावस्थामां घरडो बेल बने छे, पण कदापि ते पुरुष छतां पुरुष थतो नथी. शिशुवयमां मातृमुखी, यौवनवयमां स्त्रीमुखी अने वृद्धपणे पुत्रमुखी थाय छे, पण ए मूर्ख प्राणी कोइवार अंतर्मुख थतो नथी. धननी आशामां विह्वल थयेलो प्राणी सेवा, कृषि, व्यापार अने पशुपाल विगेरे उद्योगथी पोताना जन्मने निष्फल गुमावे छे. कोइवार चोरी, कोइवार द्युत अने कोइवार जारपणुं करवाथी मनुष्योने वारंवार संसारमां परिभ्रमण करवानुं कारण थया करे छे. मोहथी अंध थयेला प्राणीओ सुखी होय छे त्यारे काम विलासथी अने दुःखी थाय छे त्यारे दीनता अने रुदन करवाथी पोतानो जन्म गुमावे छे. पण धर्मकार्य करता नथी. अनंत कर्मना समूहनो क्षणमात्रमां क्षय करवाने समर्थ एवुं मनुष्यपणुं प्राप्त थया छतां पण पापी पुरुषो पापकर्मने कर्या करे छे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण रत्नोना पात्ररूप मनुष्यपणामां जे पापकर्म करवुं ते सुवर्णपात्रमां मदिरा भरवा जेवुं छे. आ संसाररूपी समुद्रमां शमिलायुगना योगनी जेम मांड मांड प्राप्त थयेलुं आ मनु-

ष्यपणुं अहा! मूर्ख जेम चिंतामणिरत्न हारी जाय. तेम प्राणी हारी जाय छे. स्वर्ग अने मोक्षनी प्राप्तिना कारणरूप मनुष्यपणुं प्राप्त थया छतां पण माणस नरकप्राप्तिना उपाय रूप कर्मनी अंदर उद्यम कर्या करे छे. ए केवी दिलगीरीनी वात! अनुत्तर विमानना देवताउ पण मोटा प्रयत्नथी जेनी आशा राखे छे एवुं मानुष्यत्व प्राप्त थया छतां पण तेने पापी पुरुषो पापकर्ममां जोडी दे छे. नरकमां परोक्ष दुःख छे अने नर जन्ममां तो प्रत्यक्ष दुःख छे तेथी तेनो विस्तार अतिशयपणे शा माटे अहीं वर्णववो जोइए?

शोक, अमर्ष, खेद, इर्ष्या अने दीनता विगेरेथी जेमनी बुद्धि हणायेली छे एवा देवताउमां पण दुःखनुं साम्राज्य प्रवर्ति रहेलुं छे. बीजानी मोटी लक्ष्मीने जोइने देवताउ पोताना अल्प सुकृतने संपादन करनारा पूर्व जन्मना जीवितनो चिरकाल शोक करे छे. बीजा कोइ बळवान देवतानी तरफथी पोताने अडचण उत्पन्न थतां तेनो प्रतिकार करवाने असमर्थ एवा देवताउ तिक्ष्ण एवा अमर्षरूप शल्यथी निरंतर कचवाया करे छे. में पूर्वजन्ममां कोइ पण सुकृत कर्युं जणातुं नथी जेथी आ भवमां सेवक देवतापणाने पाम्यो छुं. आवी रीते विचारता अने पोताथी अधिक उत्तरोत्तर बीजा देवोनी लक्ष्मीने

देखतां निरंतर केटलाएक देवताओ खेद कर्या करे छे. केटलाएक देवताओ बीजाओनी विमान, स्त्रीरत्न अने उपवन संबंधी संपत्ति जोइ जोइने यावज्जीवित इर्ष्यारूप ज्वलित अग्निना ऊर्मिओथी बळ्या करे छे. केटलाएक देवताओ बीजा बळिष्ट देवता तरफथी पोतानुं सर्वस्व लुंटाइ जतां दीनवृत्तिए 'हे प्राणेश ! हे प्रभु! हे देव! तमे प्रसन्न थाओ' एम गद् गद् स्वरे पोकारे छे, पुण्यथी स्वर्गलोक प्राप्त थया छतां पण कामी देवताओ काम, क्रोध अने भयथी आतुर थया सता क्यारे पण स्वस्थपणाने पामता नथी. वळी देवताओ देवभुवनमांथी पोताने च्यववाना चिन्होने अगाउथी जोइ जोइने अमे क्यां संताइ जइए एम बोल्या करे छे, अने संताइ पण जाय छे. कल्पवृक्षोना पुष्पोथी उत्पन्न थयेली मालाओ ग्लानि पामे नहि पण च्यवन नजीक आवे छे ते वखत देवताना मुख कमलोनी साथे ते पण ग्लानि पामी जाय छे. मोटा बलवान् पुरुषोथी पण अकंप्य एवा कल्पवृक्षो तेओना हृदयनी साथे संधिबंध शीथिल थइ जवाथी कंपायमान थाय छे. उत्पन्न थया त्यारथी प्राप्त थयेली अने घणी प्यारी एवी लक्ष्मी अने लज्जापण जाणे अपराध कर्यो होय तेम तेओने तत्काल छोडी दे छे. निरंतर निर्मल एवी वस्त्रनी शोभा पण

दे० अकस्मात् प्रसरेला मलिन अने घाटा पापना समुहथी होय तेम तत्काल मलिन थइ सं०
जाय ढे. मृत्युकाले जेम कीडीउने पांखो आवे ढे तेम तेउने ते वखते अदीनपणुं ढतां
६ए दैन्यता आवे ढे, अने निद्रारहित ढतां निद्रा आवे ढे. मरवाने इछता एवा पुरुषो जेम
यत्न करीने पण कुपथ्य सेवननी इछा करे ढे तेम अज्ञानी देवताउ एवे वखते न्याय तथा
धर्मने वाध करीने विषयो उपर राग धरे ढे. नीरोगी ढतां पण नविष्यमां आवनारा च्य-
वनथी उठेली वेदनाने जाणे वश थयेला होय, तेम तेउना सर्व अंगोपांगना सांधाउ नां-
गवा मांडे ढे. अर्थात आळसपर आळस मरडवा लागे ढे. जाणे बीजाउनी संपत्तिना
उत्कर्षने जोवाने असमर्थ होय तेम तेउनी पदार्थने ग्रहण करवामां दृष्टिउ अपटु थइ
जाय ढे. नविष्यमां आववाना गर्नवासना दुःखनो जाणे तेउने नय लाग्यो होय, तेम
पोताने थयेला प्रकंपथी चपळ एवा अंगोथी बीजाउने पण बीवरावे ढे. पूर्वोक्त चिन्हो-
वडे तेउने च्यववानो निश्चय थवाथी जाणे अग्निना अंगाराउए तेमनुं आलिंगन करेलुं
होय तेम विमानमां, नंदनवनमां, वापीकामां के कोइपण स्थानके तेउने शांति वळती
नथी, ते वखते तेउ विलाप करे ढे. हा प्रिया! हा विमानो! हा वापीकाउ! अने हा क- ६ए

ल्पवृक्षो! हतभाग्य एवा माराथी वियोग पामेला तमे हवे फरीने मने क्यां जोवामां आवशो? अहो! अमृतने वर्षावनारी वाणी, अमृतमय कांता, रत्नना घडेला स्तंभो, शोभा सहित मणिमय भुमिओ अने रत्नमयी वेदिकाओ! तमे कोने आश्रये जशो? रत्ननी पद्पंक्तिए युक्त अने श्रेणीबंध कमलोवाळी हे पूर्णवापिकाओ! तमे कोना उपभोगने अर्थे थशो? हे पारिजात! हे संतान! हे हरिचंदन! अने हे कल्पवृक्ष! शुं तमे आ मा-
लेकने छोडी देशो? अरे! स्त्रीना गर्भरूप नरकमां शुं मारे परवश थइने निवास करवो प-
डशे? अने अशुचि रसनुं शुं मारे वारंवार आस्वादन करवुं पडशे? अहा! मारे पोताना कर्मथी बंधाइने जठररूप अंगार शकटीना पाकथी थतुं दुःख सहन करवुं पडशे? अरे! रतिनी जाणे भंडार होय तेवी आ देवांगनाओ क्यां? अने अशुचिनुंज स्थानक होवाथी बीभत्स एवी मानव स्त्रीओना भोग क्यां? आ प्रमाणे स्वर्गीय वस्तुने संभारी संभारी विलाप करता ए देवताओ दीपक जेम क्षणवारमां बुझाइ जाय तेम त्यांथी च्यवी जाय छे. तेथी आ संसारने असार जाणी शुभ बुद्धिवाळा प्राणीए दीक्षारूप उपायथी मु-
क्तिने अर्थे प्रयत्न करवो योग्य छे.

श्री सुपार्श्वनाथनी देशना.

आ लोकमा स्त्री पुत्र परिवार द्रव्य अने देहादिक सर्व पोताना आत्माथी जुदुं छे, तथापि तेउने अर्थे अनेक प्रकारना पापकर्म करीने मुर्ख माणस पोताना आत्माने नवसमुद्रमां डुबावे छे. ज्यां प्राणीने पोताना आत्माथी विसदृश होवाने लीधे पोताना शरीरनी साथे पण जुदापणुं छे तो पछी धन बंधु विगेरे सहायकोनुं जुदापणुं कहेवुं ते कांइ विशेष नथी. जे पोताना आत्माने देह, धन, अने बंधुथी जुदो जुए छे, ते पुरुषने शोकरूप शंकुवडे पीडा केम थाय? अहींयां जे जुदापणानो नेद छे ते परस्परना लक्षणना विलक्षणपणाथीज जाणवायोग्य छे, अने ते पोताना आत्माना स्वजावने देहादिक जावनी साथे सरखावतां साक्षात्पणे जणाय छे. जे देहादिक पदार्थो छे ते इंद्रियोथी ग्राह्य छे अने आत्मा तो फक्त अनुजवथीज गोचर थाय छे. तो तेउने अनन्यपणुं (एकत्व) केम संजवे? कदि शंका थाय के आत्मा अने देहादिक पदार्थोने जो जुदापणुं होय तो देहने प्रहारादि थाय त्यारे आत्माने पीडा केम थाय? तेना समाधानमां कहेवानुं के तारुं कहेवुं साचुं छे, पण जेमने आत्मा अने शरीरमां नेदबुद्धि प्राप्त

थइ नथी तेउनेज देह उपर प्रहारादि थतां पीडा उत्पन्न थाय ठे पण जेउए देह अने आत्मानो नेद सारी रीते अनुनवीने प्रतिपादन करेलो ठे, तेवा पुरुषोनो आत्मा देहने प्रहारादि थतां पीडा पामतो नथी. नेदने जाणनारो ज्ञानी पुरुष पिता संबंधी डुःख आवी पडे तो पण पीडा पामतो नथी अने परमां पोतापणुं मानी बेसनार, नेद ज्ञानने नहि जाणनार, अज्ञ पुरुष एक चाकर संबंधी डुःख आवी पडे तो पण मुंकाय ठे. अनात्मियपणाथी ग्रहण करेलो पुत्र पण जुदो ठे, अने आत्मीयपणाथी ग्रहण करेलो चाकर पण पुत्रथी अधिक थइ पडे ठे. प्राणी जेटला जेटला संबंधो पोताना आत्मियपणाथी प्रिय माने ठे तेटला तेटला शोकना खीलाउ तेना हृदयमां ठोकाय ठे, तेथी आ जगत्नां सर्व पदार्थ आत्माथी जुदाज ठे. ते प्रमाणे जाणीने अन्यत्व बुद्धि प्राप्त थइ ठे जेने एवो माणस कोइ पण वस्तुनो नाश थवाथी तत्वमार्गमां मोह पामतो नथी. तुंबीका उपर करेलो मृत्तिकानो लेप धोवातो जाय ठे ते प्रमाणे ममतारूप मृत्तिकाना लेपने निवारी दिक्षाने ग्रहण करतो पुरुष तुंबिकानी जेम थोडा काळमां शुद्धात्मा थइने आ संसारने तरी जाय ठे.

श्री चंद्रप्रभुजीनी देशना.

अनंत क्लेशरूपी तरंगोथे युक्त एवो आ भवसागर क्षणे क्षणे सर्व प्राणीओने उंचे नीचे अने तिरछापणे फेंक्या करे छे. जेम अशुचिस्थानमां कीडाओ प्रीति करे छे तेम प्राणीओ आ क्षणिक शरीर उपर प्रीति करे छे. अने ते शरीर तेमनेज एक बंधनरूप थइ पडे छे. रस, रुधिर, मांस, चरबी, अस्थिमज्जा, विर्य, आंतरडां अने विष्टा विगेरे अशुचिना स्थानरूप आ देहमां शुचिपणुं केम संभवे? नव द्वारोमांथी झरता दुर्गंधी रसना भीजरणाथी रगदोळायेला आ देहमां जे पवित्रतानो संकल्प करवो तेज मात्र मोटो मोहनो विलास छे. वीर्य अने रुधिरथी उत्पन्न थयेलो, मलिन रसथी वधेलो अने गर्भमां जरायु (ओर) थी ढंकायेलो आ देह पवित्र केम थाय? माताए खाधेला अन्नपानथी उत्पन्न थयेला अने रस नाडीमां थइ आवेला रसनुं पान करी वृद्धि पामेलो कयो पुरुष शरीरमां पवित्रताने माने? दोष धातु अने मळथी भरेला कृमि अने गंडुपदना स्थानरूप तथा रोगरूप सर्पना गणोवडे खवायेला आ शरीरने कोण शुचि कहे? स्वादिष्ट अन्न, पान, क्षीर, इक्षु अने बीजा घृतादि विगय पदार्थों पण भोजन कर्या पछी

जेमां विष्टारूप थाय छे ते शरीर केम शुचि कहेवाय? जेमां विलेपन करेलो सुगंधी यक्ष कर्दम पण तत्काळ मलरूप थइ जाय छे, ते शरीरमां केवी रीते शौचपणुं मनाय? सुगंधी तांबुलनुं आस्वादन करीने सुइ गयेलो माणस सवारे उठी पोताना मुखना दुर्गंधनी जुगुप्सा करे, ए शरीरनी केम शुचिता गणाय? सुगंधी धुप, पुष्प, अने पुष्पमालादिक जेओ स्वतः सुगंधी छे, तेओ पण जेना संगथी दुर्गंधताने पामी जाय ए काया केम पवित्र गणाय? मांजेलो, विलेपन करेलो अने सैकडो घडाओथी धोयेलो पण अशुचि देह कलालना घडानी जेम पवित्रपणाने पामतो नथी. मृतिका, जल, अग्नि, पवन अने सूर्यनां किरणोना स्नानवडे जेओ आ देहने शौच कहे छे, तेवा गतानुंगतिक लोकोए खरेखर फोतरांज खांडेलां छे, तेथी आवा अशुचि शरीरवडे मात्र मोक्ष फलोत्पादक तपज करवुं. कारण के बुद्धिमान लोकोए खारा समुद्रमांथी रत्ननी जेम असारमांथी सारनो उद्धार करवो एज उत्तम छे.

श्री सुविधीनाथजीनी देशना.

आ संसार अनंत दुःखना समुद्रनो भंडार छे, जेनुं उत्पत्तिस्थान जेम सर्प छे,

तेम संसारनुं उत्पतिस्थान आश्रव छे. जंतुजने मन, वचन अने कायानी जे क्रिया ते योग कहेवाय छे. ते योग प्राणीने शुजाशुज कर्मने आश्रवे छे तेथी ते आश्रव कहेवाय छे. मैत्री विगेरे जावनाथी वासित चित्त शुजकर्म बंधावे छे. अने कषाय तथा विषयोथी आक्रांत थयेलुं चित्त प्राणीने अशुजकर्म बंधावे छे. श्रुतज्ञानने आश्रित एवुं सत्यवचन शुज कर्मनुं उपार्जन करावे छे, अने तेथी विपरीत होय तो अशुज कर्मना उपार्जननुं हेतुजूत थाय छे. जली रीते गोपवेलुं एटले असत्कार्यमांथी पाछुं वाळी सत्कार्यमां प्रवर्त्तावेलुं शरीर शुजकर्म बंधावे छे, अने हमेशां आरंजी तथा जीवघातक शरीरवडे अशुजकर्म बंधाय छे. कषाय, विषय, प्रमाद, योग, अविरति, मिथ्यात्व अने आर्त्त तथा रौद्रध्यान ए अशुज आश्रवना हेतु छे. जे कर्म पुद्गलने ग्रहण करवामां हेतुजूत छे ते आश्रव कहेवाय छे. ते कर्मो ज्ञानावरणादिक जेदथी आठ प्रकारनां छे. ज्ञान दर्शनना संबंधमां ज्ञानदर्शनवाळाउ प्रत्ये अने ज्ञानदर्शन उत्पन्न करवाना हेतु उमां जे विघ्न, निन्हव, पिशूनता, आशातना, घात अने मत्सर करवो ते ज्ञानावरणी अने दर्शनावरणीकर्म बांधवाना हेतुजूतरूप आश्रव छे. देवपूजा, गुरुसेवा, पात्रदान,

दया, क्षमा, सराग, संयम, देशविरति, अकामनिर्जरा, शौच अने बालतप ए सद्वेद्य (सातावेदनी) कर्म बंधावनारा आश्रवो छे. पोताने, परने अथवा बन्नेने दुःख, शोक, वध, ताप, आक्रंदन अने विलाप के पश्चात्ताप उत्पन्न करवो कराववो ते असातावेदनी कर्म बांधवानां कारणो छे. वीतरागना, शास्त्रना, संघना, धर्मना अने सर्व देवताउना अवर्णवाद बोलवा, तीव्र मिथ्यात्वना परिणाम करवा, सर्वज्ञ अने सिद्ध देवनो निन्हव करवो, धार्मिक माणसोने दूषण आपवुं, उन्मार्गे जवानो उपदेश करवो, अनर्थ करवानो आग्रह राखवो, असंयमीनी पूजा करवी, अविचारीत कार्य करवुं अने गुरु विगेरेनी अवज्ञा करवी—इत्यादि दर्शनमोहनीकर्म बांधवाना आश्रवो छे. कषायना उदयथी आत्माना तीव्र परिणाम थवा ते चारित्रमोहनीय बांधवाना आश्रव छे. मश्करी करवानी टेव, सकाम, उपहास, विशेष हसवानो स्वभाव, बहु बोलवापणुं अने दैन्यपणुं बतावनारी उक्ति ए हास्यमोहनीना आश्रवो छे. अनेक देशो विगेरे जोवानी उत्कंठा, अनेक प्रकारे रमवुं तथा खेलवुं अने बीजाना चित्तने आकर्षवुं—वश करवुं ए रतिमोहनीना आश्रवो छे. असूया, पाप करवानी प्रकृति, बीजाना आनंदनो नाश करवो अने

१३

कोइनुं अकुशल थतुं जोइ उपहास करवो ए अरतिमोहनीना आश्रवो छे. पोतामां ज-यना परिणाम, बीजाने जय पमाडवो, त्रास उपजाववो अने निर्दयपणुं धराववुं ए जय मोहनीना आश्रवो छे. पोते शोक उत्पन्न करी शोच करवो, बीजाने कराववो अने रुदन करवामां अति आसक्ति राखवी, ए शोकमोहनीना आश्रवो छे. चतुर्विध संघना अवर्णवाद बोलवा, तेमना तरफ तिरस्कार बताववो अने सदाचारनी निंदा करवी ए जुगुप्सामोहनीना आश्रवो छे. इर्ष्या, विषयोमां लोलुपता, मृषावाद, अतिवक्रता, अने परस्त्रीना विलासमां आसक्ति ए स्त्रीवेद बांधवानां कारणो छे. पोतानी स्त्री मात्रमां संतोष, अनीर्ष्यालुस्वजाव, मंदकषाय, अने अवक्राचार, शील, ए पुरुष वेदनाआश्रवो छे. स्त्री तथा पुरुष बन्नेनी स्पर्श चुंबनादि अनंगसेवा, उग्रकषाय, तीव्र कामेछा, पाखंड अने स्त्रीना व्रतनो जंग करवो ए नपुंसकवेद बांधवाना आश्रवो छे. साधुजनी निंदा करवी, धर्मिष्ट लोकोने विघ्न करवां मधु मांसादिथी अविरत पुरुषोनी पासे ते अविरतिनी प्रशंसा करवी, देशविरती पुरुषोने वारंवार अंतराय करवो, अवारितपणे स्त्रीयादिना गुणोनुं आख्यान करवुं, चारित्रने डुषण आपवुं अने बीजाउना कषाय अने नोकषायने उदी-

रणा करवी ए चारित्रमोहनीय कर्म बांधवाना सामान्य आश्रवो छे.

पंचेंद्री प्राणीउनो वध, घणो आरंभ तथा परीग्रह, अनुग्रह करवानो त्याग, मांसभोजन, सदास्थिर वैरबुद्धि, रौद्रध्यान अनंतानुबंधी कषाय, कृष्ण नील अने कापोतलेश्या, असत्य भाषण, परद्रव्य हरण, वारंवार मिथुन सेवन, अने इंद्रियोनुं अवशपणुं—ए नर्कगतिनुं आयुष्य बांधवाना आश्रवो छे. उन्मार्गे चालवानी देशना, मार्गनो नाश, गुप्त रीते वित्तनुं रक्षण, आर्त्तध्यान, शल्यसहितपणुं, माया, (कपट) आरंभ, परिग्रह, शियळमां तथा व्रतमां सातिचारपणुं, नील तथा कापोतलेश्या अने अप्रत्याख्यानी कषाय ए तिर्यंचगतिनुं आयुष्य बांधवाना आश्रवो छे. अल्प परिग्रह तथा आरंभ, स्वाभाविक कोमळता अने सरळता कापोत अने तेजोलेश्या, धर्मध्यानमां अनुराग, प्रत्याख्यानी कषाय, मध्यम परिणाम, दान देवापणुं, देव अने गुरुनुं पूजन, पूर्वालाप, प्रियालाप, सुखे समजाववापणुं, लोकसमुहमां मध्यस्थपणुं, ए मनुषगतिनुं आयुष्य बांधवाना आश्रवो छे. सरागसंयम, देशसंयम, अकामनिर्जरा, कल्याण मित्रनो परिचय, धर्म श्रवण करवानुं शील, पात्रदान, तप, श्रद्धा, त्रण रत्ननी आराधना, मृत्युकाले पद्म

अथवा पीतलेश्यानुं परिणाम, बाल तप, अग्नि, जल विगेरे साधनोवडे मृत्यु पामवुं, गले फांसो खावो, अने अव्यक्त सामायिकपणुं ए देवगतिनुं आयुष्य बांधवाना आश्रवो छे.

मन, वचन, कायानी वक्रता, बीजाउने छेतरवुं, माया प्रयोग करवो, मिथ्यात्व, पिशूनता, चित्तनी चपलता, सुवर्णादिकनो प्रतिछंद करवो एटले बनावटी सुवर्णादि बनाववुं, खोटी साक्षी पुरवी, वर्ण, गंध, रस, अने स्पर्शनुं जुदी रीते संपादन करवुं, कोइनां अंग उपांग कापवां कपाववां, यंत्र तथा पंजरनी क्रिया, खोटां माप, खोटां तोल तथा खोटां त्राजवां बनाववां, वापरवां, अन्य निंदा, आत्मप्रशंसा, हिंसा, असत्यवचन, चोरी, अब्रह्मचर्य, मोटा आरंभ, मोटा परिग्रह, कठोर वचनो बोलवां तथा कनिष्ट भाषण करवुं, उज्वल वेषादिकथी मद करवो, वाचाळपणुं, आक्रोश करवो, सौभाग्यनो उपघात, कामण करवुं, त्यागीपणानी विडंबनाथी—दांभिकपणाथी उन्मार्गी यति वगेरे थइने बीजाउने कौतक उत्पन्न करवुं, वेश्या प्रमुखने अलंकार आपवा, दावानळ सळगाववो, देवादिकना मिषथी गंधादिक वस्तुनी चोरी करवी, तीव्र कषाय, चैत्य, उपाश्रय, उद्यान अने प्रतिमाउनो विनाश करवो अने अंगारादिक पंदर कर्मादाननी क्रिया करवी, ए सर्व अशुभ

नामकर्मना आश्रवो छे. उपर कहेलाथी विपरीत क्रिया, संसारथी भीरुता, प्रमादनो नाश, सद्भावनुं अर्पण, क्षांति विगेरे गुणो, धार्मिक पुरुषोनुं दर्शन, संभ्रम अने तेमनो सत्कार– ए शुभनाम यावत् तीर्थंकर नामकर्म बांधवाना आश्रवो छे. १ अर्हंत, २ सिद्ध, ३ गुरु, ४ स्थविर, ५ बहुश्रुत, ६ गछ, ७ श्रुतज्ञान अने ८ तपस्वीउं (मुनी) नी भक्ति, ९ आवश्यकादि क्रियामां, १० चारित्रमां, तथा ११ ब्रह्मचर्य सेवनमां अप्रमाद, १२ विनय, १३ ज्ञानाभ्यास, १४ तप, १५ त्याग (दान), १६ वारंवार ध्यान, १७ तीर्थनी प्रभावना, १८ चतुर्विध संघने समाधि उपजाववी तथा साधुउनी वैयावच्च करवी, १९ अपूर्व ज्ञाननुं ग्रहण करवुं, अने २० समकित दर्शननी शुद्धि. आ विस आश्रवो (स्थानको) पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरोए स्पर्शेला छे. अने बीजा तीर्थंकरोए एक, बे, त्रण अथवा सर्वे स्थानको स्पर्शेला छे. परनिंदा, अवज्ञा ने उपहास, सद्गुणोनो लोप, छता अछता दोषनुं कथन, पोतानी प्रशंसा, छता अछता गुणनां वखाणं, पोताना दोषनुं आछादन अने जाति विगेरेनो मद करवो ए नीचगोत्रना आश्रवो छे. नीचगोत्रमां कहेला करतां विपरीत आश्रवो गर्वरहितपणुं अने मन, वचन, कायाथी विनय करवो ए उंचगोत्रना आश्रवो छे. दान,

लान, वीर्य, जोग तथा उपजोगमां मिषथी वा मिष वगर एटले कारण के वगर कारणे जे विघ्न करवुं ए अंतरायकर्मना आश्रवो छे. आवी रीतना आश्रवोथी जन्म पामेलो आ अपार संसाररूप सागर दीक्षारूप वहाणवडे विद्वान पुरुषोए तरी जवाने योग्य छे.

श्री शीतळनाथजीनी देशना.

आ संसारमां सर्व पदार्थादि, विविध जातनां दुःखनां कारण अने क्षणिक छे तेथी सर्व प्राणीओए मोक्षने माटे प्रयत्न करवो जोइए. ते मोक्ष संवर करवाथी थइ शके छे. सर्व आश्रवोनो जे निरोध करवो ते संवर कहेवाय छे. ते संवर, द्रव्य अने जावथी वे प्रकारे छे. जे कर्म पुद्गळना ग्रहणनो छेदन करे ते द्रव्यसंवर कहेवाय छे, अने जेमां संसार हेतु क्रियानो त्याग थाय ते जावसंवर कहेवाय छे. जे जे उपायथी जे जे आश्रवनो निरोध थाय ते ते आश्रवना निरोधने माटे विद्वानोए ते ते उपाय योजवो उचित छे. ते उपाय आ प्रमाणे. क्षमाथी क्रोधनो, कोमलताथी माननो, सरलताथी मायानो, अने निःस्पृहताथी लोजनो निरोध करवो. असंयमवडे उन्मत्त थयेला विष जेवा विषयोनो महामति पुरुषे अखंड संयमवडे निरोध करवो, त्रण गुप्तिओथी त्रण योगने

वश करवा, अप्रमादथी प्रमादने साध्य करवो. अने सर्व सावद्य योगना त्यागथी अविरतिने साधवी (कबजे करवी). संवरने अर्थे उद्यम करनारा पुरुषे सद्दर्शनथी मिथ्यात्वनो अने चित्तनी उत्तम स्थिरताथी रौद्रध्याननो विजय करवो. जेम मध्य चोकमां आवेला घणा द्वारवाळा घरनां द्वारो जो उघाडां रहे तो तेमां जरुर रजनो प्रवेश थाय छे, अने प्रवेश थयेल रज स्नेह (चीकाश) ना योगथी तन्मयपणे बंधाइ जाय छे; पण जो ते घरनां द्वार बंध करी दीधां होय तो तेमां रज पेसती नथी, तेम दृढपणे बद्ध पण थती नथी. वळी जेम कोइ सरोवरमां चारे बाजु गर्नाळां खुल्लां होय छे तो ते सर्व द्वारोथी जळ पेशी जाय छे पण जो ते द्वार रुंधेलां होय तो तेमां जरा पण जळ पेशी शकतुं नथी. तेमज कोइ वहाणना मध्य भागमां छिद्रो होय छे तो तेमांथी जळ पेशी जाय छे पण जो ते छिद्रो बंध करी दीधां होय तो तेमां जरा पण जळ पेशी शकतुं नथी; तेवी रीते योगादिक आश्रवोद्वारोनुं सर्व प्रकारे रुंधन करवाथी संवरथी शोभता एवा जीवमां कर्म द्रव्यनो प्रवेश थइ शकतो नथी. आश्रवद्वारनो निरोध संवरवडे थाय छे अने ए संवर क्षमा विगेरे भेदथी बहु प्रकारे कहेलो छे. चडता चडता गुणस्थानोमां जेनो जेनो संवर

थाय ते ते नामनो संवर कहेवाय छे. पारंगतोमां मिथ्यात्वनो उदय बंध थवाथी जे संवर थाय छे ते मिथ्यात्वसंवर कहेवाय छे. देशविरति विगेरे गुणठाणामां जे संवर थाय छे ते अविरति संवर छे. अप्रमत्त संयत्त विगेरे गुणठाणामां जे संवर थाय छे ते प्रमादसंवर कहेवाय छे. उपशांत मोह ने क्षीणमोह गुणठाणामां कषायनो संवर थवा थी ते कषायसंवर कहेवाय छे. अने अयोगी केवळी नामना चौदमा गुणठाणामां योग संवर सपूर्णपणे थाय छे. जेम वहाणवटी छिद्ररहित वहाणवडे समुद्रना अंतने पामे छे तेम सद्बुद्धिवाळो पुरुष उपर प्रमाणे संवरयुक्त थइने आ संसारना अंतने पामे छे.

श्री श्रेयांसनाथजीनी देशना.

आ अपार संसार स्वयंभूरमण समुद्रना जेवो छे, तेमां प्राणी कर्मरूपी उर्मिओथी आफो अवलो ने उंचे नीचे अर्थात उर्ध्व, अधो ने तिर्छा लोकमां भम्या करे छे. पवनथी जेम स्वेदबिंदु अने औषधथी जेम रस झरी जाय छे तेम निर्जरावडे आठ कर्मो झरी जाय छे. संसारना बीजोथी भरेला एवा कर्मोनी निर्जरणा करवाथी तेनुं नाम निर्जरा कहेवाय छे, ते निर्जरा सकामा अने अकामा एवा बे प्रकारनी छे. जेओ यमनियमना धर-

नारा छे तेमने सकाम निर्जरा थाय छे अने बीजा प्राणीउने अकाम निर्जरा थाय छे. कर्मोनी परिपक्वता फळनी पेठे प्रयत्नथी अथवा स्वयमेव एम बे प्रकारे थाय छे. जेम सुवर्ण दोषवाळुं होय तोपण प्रदीप्त अग्निवडे शुद्ध थाय छे, तेम तपरूप अग्निवडे सदोष जीव पण शुद्धिने पामे छे. ते तप बाह्य अने अभ्यंतर एम बे प्रकारनो छे. अनशन, ऊनोदरी, वृत्तिसंक्षेप, रसत्याग, कायक्लेश, अने संलीनता ए छ प्रकारे बाह्यतप कहेवाय छे. प्रायश्चित, वैयावृत्य, स्वाध्याय, विनय, व्युत्सर्ग अने शुभध्यान ए छ प्रकारे अभ्यंतर तप कहेवाय छे. आ बाह्य अने अभ्यंतर तपरुपी अग्निने प्रज्वलित करीने नियमधारी पुरुष पोताना दुर्जर एवा कर्मोने पण जरावी दे छे. जेम कोइ सरोवरनुं द्वार उपायोथी सर्व तरफ बंध कर्युं होय तो पछी नवा जळ प्रवाहथी ते कदी पण पुरातुं नथी तेवी रीते संवरथी आवृत थयेलो जीव आश्रवरूप द्वारोनो रोध करवाथी नवा नवा कर्मद्रव्यो वडे पूरातो नथी. पछी जेम पूर्वे संचित थयेलुं सरोवरनुं जळ सूर्यना प्रचंड किरणोना अविच्छिन्न तापथी सुकाइ जाय छे तेम पूर्वे बांधेला प्राणीओनां कर्म पण तपस्याना तापथी तत्काल क्षय पामी जाय छे. निर्जरा करवामां बाह्यतप करतां अभ्यंतरतप श्रेष्ठ छे अने तेमां

दे० ७७

पण ध्याननुं एक छत्र राज्य रहेलुं छे एम मुनिन्द्र कहे छे. कारण के ध्यान धरनारा योगीन्द्रना चिरकालथी उपार्जन करेलां अने घणां प्रबल कर्म पण तत्काल निर्जरीभूत थइ जाय छे. जेम वृद्धि पामेलो शारीरिक दोष लंघन करवाथी सोपाइ जाय छे तेवी रीते तप करवाथी पूर्व संचित कर्म क्षय पामी जाय छे. अथवा मेघनो समुह प्रचंड पवनना आघातथी आम तेम विखराइ जाय छे तेम तपस्याथी कर्मनो समुह विनाश पामे छे. ज्यारे संवर अने निर्जरा प्रति क्षण समर्थपणे उत्कर्ष पामे छे त्यारे ते जरुर मोक्षने उत्पन्न करे छे. बंन्ने प्रकारनी तपस्याथी थती निर्जरावडे कर्मोने जरावनारो शुद्ध बुद्धिवाळो पुरुष सर्व कर्मोथी जेमां मुकावापणुं थाय छे एवा मोक्षने पामे छे.

श्री वासुपूज्यजिननी देशना.

आ संसाररूपी समुद्रमां शमिला युगना संयोगनी पेठे मांड मांड मनुष्यपणुं प्राप्त करी पुरुषोए धर्म परायण थवुं जोइए, ते धर्म सर्व उत्तम जिनेश्वरोए कहेलो छे. जे धर्मने अवलंबन करनार प्राणी आ संसार सागरमां डुबतो नथी. ते धर्म संयम, सत्यवाणी, शौच (पवित्रता), ब्रह्मचर्य, निष्परिग्रहता, तप, क्षमा, मृदुता, सरलता अने निर्लो

सं० ७७

जना ए दश प्रकारे कहेवाय छे. कल्पवृक्ष वगेरे पदार्थो पण धर्मना प्रभावथी एवी इछित वस्तुने आपे छे के जे वस्तु अधर्मीओनी दृष्टिए पण आवती नथी. हमेशां पासे रहेनार अने अति वात्सल्यने धारण करनार एक धर्मरूपी बंधु अपार दुःखसागरमां पडता प्राणीओने बचावे छे, समुद्र पृथ्वीने बोळी नांखतो नथी अने वरसाद पृथ्वीने आश्वासन आपे छे ते केवळ धर्मनो प्रभाव छे. अग्नि आडी रीते बाळतो नथी अने पवन उर्ध्व भागमां वातो नथी ते पण धर्मनोज अचिंत्य महिमा छे. आलंबन अने आधार वगरनी पृथ्वी जे सर्वने आधार आपी रहेली छे तेमां धर्म सिवाय बीजुं कांइपण कारण नथी. धर्मनाज शासनथी विश्वना उपकारने माटे सूर्य. चंद्र, आ जगतमां उदयने पामे छे. ए विश्ववत्सल धर्म बंधुवगरनानो बंधु छे, मित्ररहित पुरुषोनो मित्र छे, अने अनाथ पुरुषोनो नाथ छे. धर्म पाताळमां रहेल नर्कमां पडता प्राणीओनी रक्षा करे छे अने छेवटे अनुपम सर्वज्ञपणाना वैभवने पण धर्मज आपे छे.

आ दश प्रकारनो धर्म मिथ्यादृष्टिओए तात्वीकपणे बीलकुल जोयो—जाण्यो नथी, अने कदी कोइ ठेकाणे कोइए कह्यो हशे तो फक्त ते मात्र वाणीनुंज नृत्य छे. प्रायः सर्वनी

८० वाणीमां तत्त्वार्थ होय छे अने कोइकना मनमां तत्त्वार्थ होय छे पण जिनमतने स्पर्श कर- सं०
१८ नार पुरुषोनी तो वाणीमां, मनमां अने क्रियामां सर्वमां तत्त्वार्थ होय छे. वेदशास्त्रने पराधीन बुद्धिवाळा अने कंठमां सूत्र (जनोइ) पहेरनारा ब्राह्मणो तत्त्वथी धर्मरत्नो लेश पण जाणता नथी. गोमेध, नरमेध अने अश्वमेधादिक यज्ञोने करनारा प्राणीघातकयाज्ञिक ब्राह्मणोने शी रीते धर्म प्राप्त थाय? जेमां श्रद्धा थाय नहि तेवी अछती परस्पर विरोधी एवी कल्पित वस्तुने कहेनारा पुराणकर्त्ताउमां पण क्यांथी धर्म होय? खोटी खोटी व्यवस्थावडे परद्रव्यने ग्रहण करवाने इच्छता एवा स्मार्त्तादिक पुरुषोमां मात्र माटीने पाणीवडे केवी रीते शौच (शुद्धि) पणुं होय? ऋतुकालने व्यतिक्रम थतां स्त्री सेवन न करे तो गर्भहत्यानुं पाप लागे एवुं कहेनारा अने ब्रह्मचर्यनो नाश करनारा पुरुषोमां शी रीते धर्म संभवे? यजमान पासेथी सर्वस्व लेवाने इच्छता अने द्रव्यने माटे प्राणनो पण त्याग करता एवा ब्रह्माणोमां अकिंचन (निष्परिग्रह) पणुं क्यांथी होय? अल्पमात्र अपराध थतां क्षणवारमां शाप आपनारा एवा लौकीक ऋषिउमां क्षमानो लेश पण जोवामां आवतो नथी. जाति विगेरेना मदथी अने दुराचरणथी जेमनां चित्त १८

नाच्या करे छे एवा चोथा आश्रममां रहेनारा (संन्यासी) ब्राह्मणोमां कोमलता (निरभिमान पणुं) क्यां जोवामां आवे छे? अंदर दंभ राखनारा अने बाहेर बगलाभक्त बनी रहेनारा एवा पाखंडव्रतवाळा द्विजोमां सरलतानो एक लेश पण नथी. स्त्री, गृह, अने पुत्रादिकना परिग्रहवाळा अने लोभना तो एक कुग्रहरूप ब्राह्मणोनी केवी रीते मुक्ति थाय? अथवा तेमां निर्लोभता धर्म केम संभवे? माटे राग द्वेष अने मोहथी वर्जित तथा केवळज्ञानथी शोभनारा अर्हंत भगवंतोनी तेमना उज्ज्वल धर्म उपरथीज निर्दोषता सिद्ध थाय छे. राग द्वेष अने मोहथीज माणसमां असत्यवादीपणुं आवे छे तो ते दोष अर्हंत भगवंतमां लेश पण होता नथी तो शी रीते तेमनामां असत्यवादीपणुं आवी शके? जेमनां चित्त रागादिक दोषोथी कलुषित थयेलां होय छे तेमना मुखमांथी कदीपण सत्यवाणी नीकळती नथी, जेओ याग, होम विगेरे इष्ट कर्म करे छे, वापी कूप अने तळाव विगेरेमां नहावाथी पुण्य माने छे, पशुनो घात करीने स्वर्गलोकनुं सुख शोधे छे, ब्राह्मणोने भोजन आपवाथी पितृओने तृप्त करवाने इच्छे छे, घृतयोनि विगेरे करीने प्रायश्चित करे छे, पांच प्रकारनी आपत्तिओ आवतां स्त्रीओने पुनर्लग्न करावे छे.

जो स्त्रीमां पुत्र थवानो संभव होय तो तेनामां क्षेत्रज पुत्रनी उत्पत्ति करवी ए प्रमाणे कहे छे, दोषित स्त्रीओ रज (अंतराय) आवे त्यारे शुद्ध थाय छे ए प्रमाणे माने छे, कल्याणनी बुद्धिए यज्ञमां बकरांने मारी तेना शिश्न (लिंग) थी आजीविका करे छे, सौत्रामणि अने सप्ततंतु यज्ञमां मदिरानुं पान करे छे, विष्टा खानारी गायोनो स्पर्श करीने पवित्र थवानुं माने छे, जलादिकमां मात्र स्नान करवाथी पापनी शुद्धि थाय एम बोले छे, वड, पीपला अने आंवली विगेरे वृक्षोनी पूजा करे छे, अग्निमां होमेला हव्यथी देवने तृप्त करेला माने छे, पृथ्वी उपर गाय दोवाथी रिष्टनी शांति थाय एम वदे छे, स्त्रीओने मात्र विडंबना करे तेवा धर्मव्रतनो उपदेश करे छे, मोटी जटा, भस्मवडे अंगराग अने कोपीनने धारण करे छे, आकडा, धंतूरा, अने मालूरना पुष्पोथी देवने पूजे छे, गीत, नृत्य करतां वारंवार अपशब्दो बोले छे, मुख वगाडीने गीतनाद आचरे छे, असभ्य भाषापूर्वक देव, मुनि अने लोकोने हणे छे, व्रतनो भंग करीने दासी दासपणुं करवाने इछे छे, अनंतकाय एवा कंदादि तथा फल मूल अने पांडोंवेलुं भक्षण करे छे, स्त्री अने पुत्रसहित जइने वनमां वसे छे, भक्ष्य—अभक्ष्य, पेय—अपेय अने गम्य—अगम्यनां समानपणे वर्ते

छे, योगी एवा नामे प्रसिद्ध थाय छे अने केटलाक कौलाचार्यना शिष्य थाय छे. एउने अने ए सिवाय बीजा पण जेउना चित्तमां जैन शासननो स्पर्श थयो नथी एवाउने धर्म शुं? तेनुं फल पण शुं? अने तेमना धर्ममां प्रमाण पण शुं?

श्री जिनेंद्र भाषीत धर्मना आराधनथी आ लोकमां अने परलोकमां जे सुखकारी फल थाय तेतो तेनुं आनुषंगिक (अवांतर) फल छे, पण तेनुं मुख्य फल तो मोक्ष छे. जेम कृषि करवानो मुख्य हेतु धान्य मेळववानो छे, तेनां पराल विगेरे जे थाय ते आनुषंगिक फल छे. तेम धर्म करवानुं मुख्य फल मोक्ष छे. तेमां जे सांसारिक फळ थाय छे तेतो आनुषंगिक फळ छे."

श्री विमलनाथजीनी देशना.

अकाम निर्जरारूप पुण्यथी प्राणीने स्थावरपणाथी त्रसपणुं के तिर्यंच पंचेंद्रीपणुं मांड मांड प्राप्त थाय छे. तेमां पण ज्यारे कर्मनी लाघवता थाय त्यार पछी मनुष्य जन्म, आर्यदेश, उत्तमकुळ, सर्व इंद्रियोनुं पाटव अने दीर्घ आयुष्य कथंचित् मेळवाय छे. ते करतां पण विशेष पुण्य होय तो धर्मकथक गुरुनी जोगवाइ अने शास्त्रनुं श्रवण

तथा तेमां श्रद्धा एटलां वानां प्राप्त थाय छे. पण तेमां तत्व निश्चयरूप बोधिरत्न प्राप्त थवुं घणुं दुर्लभ छे. जिनप्रवचनमां जेवुं बोधिरत्न अत्यंत दुर्लभ छे तेवुं राजापणुं, चक्रवर्त्तीपणुं के इंद्रपणुं मेळववुं दुर्लभ नथी. सर्वे जीवोए पूर्वे अनंतवार सर्वे भावो प्राप्त करेला हशे पण ज्यां सुधी आ संसारमां ते जीवोनुं परिभ्रमण जोवामां आवे छे त्यां सुधी तेउए कदी पण बोधिरत्ननी प्राप्ति करेली जणाती नथी. सर्व प्राणीउने आ संसारमां परिभ्रमण करतां अनंत पुद्गल परावर्त्तन थइ गयां छे परंतु ज्यारे छेल्लो अर्द्ध पुद्गल परावर्तन संसार अवशेष रहे त्यारे सर्व कर्मोनी स्थिति एक कोटाकोटी सागरोपमथी उंठी यथाप्रवृत्ति करणवडे करीने कोइ प्राणी ग्रंथिभेद थवाथी उत्तम बोधिने पामे छे. केटलाएक जीवो, यथाप्रवृत्तिकरण करवाथी ते ग्रंथिना सीमाडा उपर प्राप्त थया होय तोपण त्यांथी सीदाइने पाछा वळे छे अने पाछा संसारमां भमे छे. कुशास्त्रनुं श्रवण, मिथ्यादृष्टिनो समागम, नठारी वासना, अने प्रमाद करवानी टेव—ए समकित प्राप्तिनी सामे थनारा शत्रुउ छे. जो के चारित्रनी प्राप्ति पण दुर्लभ कहेली छे पण जो बोधिनी प्राप्ति थइ होय तो ते सफळ छे अन्यथा निष्फळ छे. अभव्य प्राणीउ पण चारित्र ग्रहण करीने

नवमा ग्रैवेयक सुधी उत्पन्न थाय छे, पण बोधि विना तेउ मोक्षपदने पामी शकता नथी. चक्रवर्ती पण बोधिरत्ननी प्राप्ति विना रांक जेवो छे, अने बोधिरत्नने प्राप्त करनारो रांक होय तो पण तेनाथी अधिक छे. जेउने बोधिरत्ननी प्राप्ति थइ होय छे तेउ कदी पण आ संसारमां राग करता नथी, पण ममतारहित थइने मुक्तपणे मुक्तिमार्गनेज जजे छे.

श्री अनंतनाथजीनी देशना.

अहो भव्यजीवो! तत्वने नहि जाणनारा प्राणीउं, मार्गथी अजाण्या वटेमार्गुनी जेम. आ डुस्तर संसाररूप अरण्यमां जटक्या करे छे. जीव, अजीव, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध अने मोक्ष ए सात तत्वो विद्वानो कहे छे.

तेमां प्रथम तत्व जे जीव, ते मुक्त अने संसारी एम बे प्रकारे छे. तेउ सर्व अनादि-निधन अने ज्ञानदर्शन लक्षणवाळा छे. तेमां जे मुक्त जीव छे ते एक स्वजावी, जन्मादि क्लेशथी वर्जित अने अनंतदर्शन, अनंतज्ञान, अने अनंतवीर्य तथा अनंत आनंदथी व्याप्त छे. संसारी जीव स्थावर अने त्रस एवा बे प्रकारना छे. ते बंनेना पर्याप्त अने अप-

र्याप्त एवा बे भेद छे. तेमां पर्याप्तपणाना कारणरूप पर्याप्तिओ छ छे. तेना आहार, शरीर, इंद्रिय, श्वासोश्वास, भाषा अने मन एवां नाम छे. ते पर्याप्ति एकेंद्रियने चार, विकलेंद्रिने पांच अने पंचेंद्रिने छ ए प्रमाणे अनुक्रमे छे. पृथ्वीकाय, अपकाय, तेजोकाय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय ए पांच एकेंद्रिय स्थावर जीव कहेवाय छे, तेमां प्रथमना चार सूक्ष्म अने बादर एवा बे प्रकारे छे. पांचमा जे वनस्पतिकाय, ते प्रत्येक अने साधारण एवा बे प्रकारे छे, तेमां प्रत्येक बादरज छे अने साधारण सूक्ष्मने बादर बे प्रकारे छे.

त्रस जीवो बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रिय, अने पंचेंद्रिय एम चार प्रकारे छे, तेमां पंचेंद्रिय संज्ञी अने असंज्ञी एवा बे प्रकारना छे. जे शिक्षा, उपदेश अने आलापने जाणे अने मनप्राणने प्रवर्त्तावे ते संज्ञी कहेवाय छे अने तेथी विपरीत—मन विनाना ते असंज्ञी कहेवाय छे. स्पर्शना, रसना, नासिका, नेत्र अने श्रवण ए पांच इंद्रियो कहेवाय छे. स्पर्श, रस, गंध, रूप अने शब्द ए पांच तेना अनुक्रमे विषय छे. कृमि, शंख, गंडूपद, जलो, कोडीओ अने छीप विगेरे विविध जीवो द्वींद्रिय छे. जु, मा-

कड, मंकोडा अने लीख विगेरे त्रींद्रिय जीव छे, अने पतंग, मक्षिका, भ्रमर अने डांस विगेरे चतुरिंद्रिय जीवो छे. पंचेंद्रिय जीवोनां जल, स्थल अने आकाशचारी एम त्रण प्रकारना तिर्यंचजीवो, नारकी, मनुष्य अने देवताने गणेला छे. मनोबल, भाषाबल अने कायबल ए त्रण बल, पांच इंद्रियो अने श्वासोश्वास तथा आयु ए दश प्राण कहे-वाय छे. कायबळ, आयुष्य, उच्छ्वास अने स्पर्शेंद्रिय ए चार प्राण सर्व जीवोमां छे. विक-लेंद्रिमां भाषा अने एकेक इंद्रिय वधवाथी छ, सात, ने आठ प्राण छे. असंज्ञीने एक इंद्रिय वधवाथी नव प्राण होय छे अने पूर्णसंज्ञीने मनसहित दश प्राण होय छे. दे-वता अने नारकी उपपातपणे उत्पन्न थाय छे. मनुष्यो गर्भमांथी उत्पन्न थाय छे अने तिर्यंचो जरायु अने इंडानांथी उत्पन्न थाय छे. बाकीना समूर्छिम पंचेंद्री, विकलेंद्री तथा एकेंद्री संमूर्छिम रीते उत्पन्न थाय छे. सर्व संमूर्छिम जीवो अने नारकीना पापी जीवो मात्र नपुंसक वेदीज होय छे. देवता—स्त्री अने पुरुष बे वेदवाळा होय छे अने बाकीना गर्भज तिर्यंच अने मनुष्य—स्त्री, पुरुष अने नपुंसक वेदी होय छे.

सर्वे जीव व्यवहारी अने अव्यवहारी एम बे प्रकारना छे. जे अनादि सूक्ष्म नि-

गोदना जीवो ठे ते अव्यवहारी ठे अने बाकीना सर्वे व्यवहारी ठे.

१ सचित्त, २ अचित्त, ३ सचित्ताचित्त, ४ संवृत, ५ असंवृत, ६ संवृतासंवृत, ७ शीत, ८ उष्ण अने ए शीतोष्ण एम जीवने उपजवानी योनिउना नव प्रकार ठे.

पृथ्वी, अप्, अग्नि अने वायुकायनी–प्रत्येकनी सात सात लाख योनि, प्रत्येक वनस्पतिनी अने अनंतकायनी अनुक्रमे दश ने चौद मळी चोवीश लाख योनि, त्रिकलेंद्रिनी ७ लाख योनि, मनुष्यनी चौद लाख योनि अने नारकी, देव तथा तिर्यंच पंचेंड्रियनी चार चार लाख योनि एम सर्व मळीने चोराशी लाख योनिउ सर्व जीवनी एकंदर ठे, ते केवळज्ञानीए ज्ञानवडे जोयेली ठे.

एकेंड्रिय सूक्ष्मने बादर पंचेंड्रिय सन्नी अने असन्नी तथा बेइंड्रिय तेइंड्रिय अने चौरेंड्रिय ए सात पर्याप्त अने सात अपर्याप्त मळीने जीवोना मूळ चौद न्नेदो जिनेश्वरे कहेला ठे अने तेनी मार्गणा पण १ गति, २ इंड्रिय, ३ काय, ४ योग, ५ वेद, ६ ज्ञान, ७ कषाय, ८ संयम, ए आहार, १० दृष्टि, ११ लेश्या, १२ नव्य, १३ सम्यक्त्व अने १४ संज्ञी एम चौद कहेली ठे. तेमज सर्व जीवोना गुणस्थान पण १ मिथ्यादृष्टि, २ सास्वादन

सम्यग्दृष्टि, २ सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि मिश्र, ४ अविरत सम्यग्दृष्टि ५ विरताविरत (देशविरति) ६ प्रमत्त ७ अप्रमत्त ८ निवृत्तिबादर ९ अनिवृत्तिबादर १० सूक्ष्मसंपराय ११ उपशांत मोह, १२ क्षीणमोह १३ सयोगी अने १४ अयोगी एम चौद कहेलां छे.

१ मिथ्यादर्शननो उदय छते प्राणी मिथ्यादृष्टि होय छे, परंतु जद्रकपणादिकनी अपेक्षाए ते मिथ्यादृष्टि गुणस्थान कहेवाय छे. २ मिथ्यात्वना अनुदयजावमां वर्तता ने अनंतानुबंधीनो उदय थये सते 'सास्वादन' सम्यग्दृष्टि गुणस्थानक होय छे, तेनो उत्कृष्ट छ आवळीनो काळ छे. ३ समकितने मिथ्यात्वना संयोगथी अंतरमुहूर्त्तनी स्थितिवाळुं मिश्रदर्शन नामे गुणस्थानक थाय छे. ४ अप्रत्याख्यानी कषायोना उदयथी परंतु अनंतानुबंधी कषायोना क्षय, उपशम के क्षयोपशमथी 'अविरत सम्यग्दृष्टि' नामे गुणस्थानक थाय छे. ५ प्रत्याख्यानी कषायोना उदयथी विरताविरत (देशविरति) नामे गुणस्थानक थाय छे. ६–७ संयम (सर्वविरति) ने प्राप्त कर्या छतां तेमां जे प्रमाद करे छे ते प्रमत्तसंयम नामे गुणस्थानके छे अने जे प्रमाद करता नथी ते अप्रमत्तसंयत नामना सातमा गुणस्थानके छे. आ बंने गुणस्थानक परस्पर परावृत्तिए क-

दे० ८३

रीने अंतरमुहूर्त्तनी स्थितिवाळा छे. ८ जे गुणस्थाननी प्राप्ति थयाथी कर्मोनो स्थिति घात विगेरे अपूर्व रीते थाय ते 'अपूर्वकरण' नामे आठमुं गुणस्थानक छे, तेमां प्राप्त थयेल मुनि उपशमश्रेणी अथवा क्षपकश्रेणीपर आरुढ थाय छे. तेमज ए गुणठाणामां प्रवेश थयेला मुनिओना परस्पर बादर कषायोना परिणाम निवृत्ति पामे छे तेथी तेनुं 'निवृत्तिबादर' एवुं पण नाम छे. ९ जे गुणस्थान एक समयमां साथे चडेला मुनिओना परस्पर बादरकषायोना निवर्त्तेला परिणामनो फेरफार थतो नथी. सर्वना एक सरखाज प्रणाम ज्यां वर्त्ते छे ते 'अनिवृत्तिबादर' नामे नवमुं गुणस्थानक छे. तेनी प्राप्तिवाळा मुनि उपशमश्रेणि के क्षपकश्रेणिपर आरुढ होय छे. १० पूर्वे नवमे गुणठाणे लोभ नामनो कषाय सूक्ष्म कीट्टीरूप करेल छे तेने वेदतां 'सूक्ष्मसंपराय' नामे दशमुं गुणस्थानक थाय छे. तेमां प्राप्त थयेल मुनि पण उपशमश्रेणि के क्षपकश्रेणीपर आरुढ होय छे. ११ मोहनो उपशम थवाथी 'उपशांतमोह' गुणस्थानक प्राप्त थाय छे. अने १२ मोहनो क्षय करवाथी 'क्षीणमोह' गुणस्थानक प्राप्त थाय छे. १३ घातिकर्मनो क्षय थवाथी केवळज्ञाननी उत्पत्ति थाय छे ते 'सयोगीकेवळी' नामे तेरमुं गुणस्थानक छे.

सं० ८३

अने १४ मन, वचन, कायाना योगनो क्षय थवाथी 'अयोगीकेवळी' नामे चौदमुं गुणस्थानक प्राप्त थाय छे. आ प्रमाणे जीव तत्त्वनुं स्वरूप जाणवुं.

हवे अजीव तत्त्वनुं स्वरूप कहे छे.—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काळ अने पुद्गळास्तिकाय ए पांच अजीवद्रव्यने जीवद्रव्यसहित करवाथी षट्द्रव्य थाय छे. ते षट्द्रव्योमां काळ विना पांच द्रव्यो प्रदेश समूहरूप छे, जीव विना बाकीना द्रव्य अचेतन अने अकर्त्ता छे, काळ विना बाकीना द्रव्य अस्तिकाय छे अने पुद्गळ विना बाकीना द्रव्य अरूपी छे. छए द्रव्य उत्पाद, व्यय अने ध्रौव्य सरूपी छे. पुद्गळो स्पर्श, रस, गंध अने वर्णरूपे छे, तेना अणु अने स्कंध एवा बे प्रकार छे. अणु अबद्ध छे अने स्कंध बद्ध छे. जे बद्ध स्कंध छे ते गंध, शब्द, सूक्ष्म, स्थूळ, संस्थान, स्पर्श, अंधकार, आतप, उद्योत, भेद अने छायारूपे परिणमे छे अने ते ज्ञानावरणादिकर्म पांच प्रकारना शरीर, मन, भाषा, गमनादिचेष्टा, अने श्वासोश्वासना दायक छे; तेमज सुख, दुःख, जीवित अने मृत्युरूप उपग्रहना करनारा छे. आ लोकमां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रण तो प्रत्येके एकेकज द्रव्य

छे अने ते सर्वदा अमूर्त्त निष्क्रिय अने स्थिर छे. धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय एक जीवना प्रदेश जेटला असंख्यात प्रदेशवाळा अने सकळ लोकव्यापी छे. तेमां पोतानी मेळे हालवा चालवाने प्रवर्त्तेला जीवोने तथा पुद्‍गळोने सर्वगमन क्रियामां मत्स्यादिकनी गतिने जळनी जेम धर्मास्तिकाय सहायकारी होय छे अने जीव तथा पुद्गळो पोतानी मेळे स्थिर रहे छे त्यारे वटेमार्गुने छायानी जेम अधर्मास्तिकाय सहायकारी होय छे. वळी सर्व व्यापी, निज स्वरूपाधारे रहेल, परसर्व वस्तुने आधार आपनार लोकालोक व्यापी अनंतप्रदेशी, आकाशास्तिकाय छे. लोकाकाशना प्रदेशमां अभिन्नपणे रहेला जे काळना अणुउ (समय) छे ते, भावोनुं परावर्त्तन करे छे तेथी मुख्यकाळ ते कहेवाय छे अने ज्योतिःशास्त्रमां समयादिकथी जेनुं मान करवामां आव्युं छे तेने काळवेत्ताउ व्यवहारिक काळ कहे छे. आ जगतमां सर्वे पदार्थो नवीन अने जीर्णरूपथी जे परावर्त्तन पाम्या करे छे ते काळनुंज चेष्टित छे. काळक्रिडानी विटंबनाथी सर्वे वर्त्तमानना पदार्थो भूतकाळनी स्थितिने पामे छे अने भविष्यना वर्त्तमान स्थितिने पामे छे. आ प्रमाणे अजीवतत्त्वनुं स्वरूप जाणवुं.

मन, वचन, अने कायानी जे वर्त्तना ते आश्रव छे. तेमां शुभ वर्त्तना ते पुण्यबंधनो हेतु छे अने अशुभ वर्त्तना ते पापबंधनो हेतु छे. ए त्रीजुं आश्रवतत्त्व समजवुं. सर्व आश्रवोनो रोध करवानुं जे कारण ते संवर कहेवाय छे अने संसारना हेतुभूत जे कर्म तेनी जे जरणा (विनाश) तेने निर्जरा कहे छे. आ प्रमाणे चोथुं अने पांचमुं संवर अने निर्जरातत्त्व छे.

सकषायीपणाथी जीव, कर्म योग्य पुद्गलोने जे ग्रहण करे छे ते बंध कहेवाय छे, ते बंध जीवने परतंत्रतानुं कारण थाय छे. प्रकृति, स्थिति, अनुभाग अने प्रदेश—ए चार तेना भेद छे. तेमां जे प्रकृति ते स्वभाव कहेवाय छे. ते ज्ञानावरणादि भेदोथी आठ प्रकारनी छे. ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र अने अंतराय. ए आठ मुळ प्रकृतिओ कहेवाय छे. जघन्यने उत्कृष्ट भेदे कर्मना काळनो जे नियम ते स्थिति कहेवाय छे. कर्मनो जे विपाक (परिणाम) ते अनुभाग छे अने तेना अंशनी जे कल्पना ते प्रदेश छे. मिथ्यादृष्टि, अविरती, प्रमाद, कषाय, अने योग ए पांच बंधना हेतु छे. ए प्रमाणे बंधतत्त्वनुं स्वरूप जाणवुं.

दे० उपर कहेला बंधना हेतुनो अजाव यतां घातीकर्मनो क्षय थाय छे, तेथी जीवने सं०
केवळज्ञान उपजे छे अने पछी चार अघातीकर्मनो क्षय ववाथी मोक्ष थाय छे. चार
८५ निकायना देवताउनां तथा राजाउनां जे सुख त्रण जुवनमां छे ते सुख मोक्षसुखनी संपत्तिना अनंतमा जागे पण नथी. इति मोक्षतत्व.

आ प्रकारे नवतत्वोनो जाणनारो मनुष्य समुद्रमां तरीआनी जेम कदी पण आ संसारसमुद्रमां बुडी जतो नथी.

श्री धर्मनाथजीनी देशना.

धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चतुर्वर्गमां मोक्षवर्ग अग्रणी छे, तेनो योग करावनार कारण, ज्ञान, दर्शन, अने चारित्र ए त्रण रत्न छे. तत्वने अनुसरनारी मति–ते ज्ञान, सम्यक्प्रकारनी श्रद्धा–ते दर्शन अने सावद्ययोगनो त्याग ते चारित्र कहेवाय छे. प्राणीनो आत्माज ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप छे, अथवा तदात्मकपणेज ते शरीरमां रहेलो छे. मोहना त्यागथकी जे पोताना आत्मावडे आत्माने विषे आत्माने जाणे छे तेज तेनां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र छे. आत्माने अज्ञानपणाथी उत्पन्न थयेल ८५

दुःख आत्मज्ञानवडेज हणाय छे. जे आत्मज्ञानथी रहित छे ते तप करवावडे पण अ-ज्ञान जनित दुःखने पण छेदी शकतो नथी. आ आत्मा चैतन्य (ज्ञान) रूप छे, पण कर्मना योगथी शरीरधारी थाय छे; अने ज्यारे ध्यानरूपी अग्निथी कर्म मात्र दग्ध थइ जाय छे त्यारे ते निरंजन सिद्धात्मा बने छे. कषाय अने इंद्रियोथी जितायेलो आ आ-त्माज संसार छे अने कषाय अने इंद्रियोने जितनारो आत्माज मोक्ष छे ए प्रमाणे वि-द्वानो कहे छे. ते कषायो क्रोध, मान, माया अने लोभ एम चार प्रकारे छे अने ते प्रत्ये-कना संज्वलन विगेरे चार चार भेद छे, तेमां संज्वलन एक पक्ष सुधी, प्रत्याख्यान चार मास सुधी, अप्रत्याख्यान वर्ष सुधी अने अनंतानुबंधी आखा जन्म सुधी स्थिति करे छे. ते अनुक्रमे वितरागपणुं, मुनिपणुं, श्रावकपणुं, अने सम्यग्द्रष्टिपणुं हणे छे अने देवपणुं, मनुष्यपणुं, तीर्यंचपणुं अने नारकीपणुं आपे छे.

तेमां क्रोध नामे कषाय उपताप करनार, वैरनुं कारण, दुर्गतिने आपनार अने समतासुखने अटकावनार भोगळरूप छे, ते उत्पन्न थतांज अग्निनी पेठे प्रथम पोताना आश्रयने तो बाळेज छे पछी बीजाने बाळे छे किंवा नथी पण बाळतो. आठ वर्षे ऊनपूर्व

दे० ८६

कोटी वर्षों पर्यंत चारित्र अने तप करेलुं होय तो तेने पण क्रोधरूपी अग्नि क्षणवारमां दहन करी नांखे छे. पूर्वना पुण्य संभारथी संचय करेलुं समतारूप पय क्रोधरूप विपना संपर्कथी तत्काळ असेव्य थइ जाय छे. विचित्र गुणने धारण करनारी, चारित्ररूप चित्रनी रचना (चित्रशाळी) ने क्रोधरूप धूमाडो प्रसरीने अत्यंत मलीन करी नांखे छे, वैराग्यरूपी शमीपत्रना पडीआमां जे समतानो रस मेळव्यो होय ते शाकपत्रना पडीआमांथी आवा क्रोधवडे ते रस केम न ढळी जाय? वृद्धि पामेलो क्रोध शुं शुं अकार्य नथी करतो? आगामीकाळे द्वैपायनना क्रोधरूप अग्निमां मोटी द्वारका नगरी समिधरूप थइ जशे. क्रोध करनारने क्रोध करवाथी कार्यसिद्धि थती जोवामां आवे छे ते क्रोध साथे संवंध धरावती नथी. अर्थात् ते क्रोधना फळरूप नथी पण जन्मांतरे मेळवेला तेना सारा कर्मनुं फळ छे. जे प्राणीइ आ लोकना अने परलोकना तथा स्वार्थना अने परार्थना नाशने करनारा क्रोधने पोताना शरीरमां धारण करे छे तेमने वारंवार धिक्कार छे. क्रोधांध पुरुषो पिताने, माताने, गुरुने, सुहृद (मित्र) ने, सहोदरने अने स्त्रीने तेमज पोताना आत्माने पण निर्दय थइने हणी नांखे छे. आवा क्रोधरूप अग्निने सत्वर बुझाववाने

सं० ८६

माटे उत्तम पुरुषोए संयमरूप आरामने विषे नीकरूप एक क्षमानोज आश्रय करवो. अपकार करनार पुरुषनी उपर थयेलो क्रोध बीजी रीते रोकी शकातो नथी, पण सत्वना महात्म्यवडे रोकी शकाय छे. अथवा आवी भावना राखे, तो तेनावडे रोकी शकाय छे के जे पोते पापने अंगीकार करी आपणने बाधा करवानी इच्छा करे छे ते पोताना कर्मथी हणाइ गयो छे तो तेनी उपर कयो मूर्खजन पण कोप करे. जो तारो एवो आशय होय के 'जे मारा अपकारी छे तेनी उपर तो हुं कोप करीश' तो तने निरंतर दुःख आपवामां खरेखरा कारणभूत तारा कर्मनी उपर शा माटे कोप करतो नथी? श्वान ढेफुं नांखनारने नहि करडवा जतां ढेफांने बचकां भरे छे, पण केशरीसिंह बाणने कांइ करतो नथी पण बाण नांखनारनेज मारे छे. माटे क्रोध करनारे विचार करवो के जे क्रूर कर्मोए प्रेरेलो शत्रु मारी उपर कोप करे छे ते कर्मोनी उपेक्षा करीने हुं बीजापर क्रोध करुं छुं, तेथी खरेखर हुं श्वाननी रीतिनोज आश्रय करुं छुं. भविष्यकाळमां उत्पन्न थनारा श्री महावीर भगवान् पोताने उपसर्गादि करनारा पापीओनी उपर क्षमा करशे, केमके वगर प्रयासे स्वयमेव प्राप्त थयेली क्षमाने वहन करवाने कोण न इच्छे? जे त्रण

लोकने प्रलयमांथी पण रक्षण करवाने समर्थ छे तेवा पुरुषो पण क्षमा करे छे, तो कदलीना जेवो अल्प सत्ववाळो तुं क्षमा केम नथी करतो? वळी तें पूर्व जन्मे एवुं पुण्य केम न कर्युं के, जेथी कोइ तने पीडेज नहि; माटे हवे पोताना प्रमादनोज शोक करीने क्षमाने अंगीकार कर. क्रोधांधमुनि अने प्रचंड चांडाळ ते बेनी वच्चे कांइपण अंतर नथी, माटे क्रोधनो त्याग करीने उज्वळ बुद्धिने ग्रहण करो. महर्षि क्रोधी हता अने कुरगडु अक्रोधी हता तो देवताओए महर्षि मुनिने छोडीने कुरगडुनी स्तुति करी. कदी जो कोइ आपणने मर्मपीडक वचन कहे तो आपणे विचारवुं के जो ए सत्य होय तो तेमां कोप करवा जेवुं शुं छे? अने जो असत्य होय तो ते उन्मत्त थइने बोले छे तो तेनो विचार शो? जो कोइ आपणने मारवाने आवे तो मनमां विस्मय पामीने हसवुं के मारो वध थवो एतो मारा कर्मने साध्य छे, आ मूर्ख पुरुष तो फोगटनो नाचे छे. जो कोइ खरेखर मारी नांखवाने आवे तो विचारवुं के मारा आयुष्यनो क्षयज प्राप्त थयो जणाय छे, तो आ दुष्ट निर्भय थइने पाप बांधे छे अने मरेलानेज मारे छे. जो सर्व पुरुषार्थने चोरनारा क्रोधनी उपर तने क्रोध उत्पन्न थतो नथी तो पछी अल्प अपराध करनार बीजानी

उपर कोप करनारा एवा तने धिक्कार छे, तेथी सारी बुद्धिवाळा पुरुषे सर्व इंद्रियोने ग्लानि करनार अने चारे तरफ प्रसरता एवा कोपरूपी सर्पने क्षमारूपी जांगुली विद्यावडे जीती लेवो.

विनय, श्रुत, शील, तथा त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ अने मोक्ष) नो घात करनार मान, प्राणीना विवेकरूपी लोचननो लोप करीने तेने अंध करी नांखे छे. जाति, लाभ, कुळ, ऐश्वर्य, बळ, रूप, तप, अने श्रुतनो मद करनार पुरुष ते ते वस्तुनुं हीनपणुं प्राप्त करे छे. उत्तम, मध्यम अने अधम एवा जातिना अनेक भेदने जोइने कयो विद्वान जातिमद करवा तत्पर थशे? हीन के उत्तम जाति कर्मथी प्राप्त थाय छे, तो एवी अशाश्वत जातिने मेळवीने कोने मद थाय? अंतराय कर्मनो क्षय थवाथी लाभ थाय छे ते सिवाय थतो नथी, तेथी वस्तुतत्त्वने जाणनारो पुरुष कदिपण लाभमद करतो नथी. बीजानी प्रसन्नता अने शक्ति वगेरे मोटो लाभ प्राप्त थाय तोपण महात्माओ कदिपण लाभ मद करता नथी. कुळवान नहीं छतां पण बुद्धि, लक्ष्मी अने शीलवडे शोभता एवा अनेक पुरुषोने जोइने महा कुलिन पुरुषोए पण कुळमद करवो नहीं. सारा कुळमां उत्पन्न

१ं० थया छतां कुशीळ होय तो तेने कुळथी शुं? अने पोते सुशीळ छे तो तेने कुळनी शुं सं०
अपेक्षा? एवुं विचारीने विचक्षण पुरुषो कुळमद करता नथी. वज्रधारी इंद्रने घेर
८८ त्रिभुवनना ऐश्वर्यनी संपत्ति सांभळीने नगर, गाम अने धन विगेरेना ऐश्वर्यमां शो
मद करवो? संपत्ति कुलटा स्त्रीनी पेठे गुणी पुरुषनी पासेथी पण वखते चाली जाय छे
अने दोषवाननो पण आश्रय करे छे तेथी विवेकी पुरुषोने ऐश्वर्यनी प्राप्तिथी तेनो
मद थतोज नथी. मोटो बळवान होय तेने पण रोगादिक क्षणवारमां निर्बळ करी नांखे
छे तेथी तेवा अनित्य बळनी प्राप्तिथी पुरुषोए मद करवो युक्त नथी. जे बळवान होय
ते पण जरानी पासे, मृत्युनी पासे अने कर्मफळने भोगववामां निर्बळज छे, एमां कांइ
तेनुं बळ चालतुं नथी; माटे तेणे बळमद करवो ते व्यर्थ छे. आ सात धातुमय देहमां
हानीवृद्धि धर्म रहेलो छे अने जरा तथा रोगनो पराभव पण रहेलो छे तेथी अशाश्वत
एवा रुपना मदने कोण वहन करे? भविष्यकाळमां थनारा सनत्कुमारचक्रीनुं रुप
अने तेनो क्षय सांभळीने कयो विद्वान पुरुष स्वप्नामां पण रुपनो मद करे? श्री ऋष-
भदेवे करेली अने श्री वीरप्रभुए करेली तपस्या सांभळीने पोताना स्वल्प तपमां कोने ८८

मद थाय तेम छे? जे तप करवाथी तत्काळ कर्मनो संचय तुटी जाय छे, ते तपनो मद करवाथी उलटो कर्मनो संचय वधे छे. पूर्वे महा पुरुषोए जे शास्त्रो पोतानी बुद्धिथी रचेलां छे तेओने मात्र लीलावडे सुंघीने 'हुं सर्वज्ञ छुं' एवो जे मद धरे छे ते पोताना अंगनेज खाय छे. श्री गणधरेंद्रोनी निर्माण अने धारण करवानी शक्ति सांभळीने कयो कर्ण अने हृदयवाळो पुरुष शास्त्रमदनो आश्रय करे? दोषरूप शाखाने विस्तारता अने गुणरूपी मूलने नीचे लइ जता मानरूपी वृक्षने मृदुतारूप नदीना पूरथी उखेडी नांखवुं. उद्धतपणानो निषेध ए मृदुतानुं अथवा मार्दवनुं स्वरूप छे अने उद्धतपणुं ए माननुं निरुपाधिक स्वरूप छे.

जे जे वखते जाति विगेरेनुं उद्धतपणुं अंतरमां स्पर्श करवा लागे ते ते वखते तेना प्रतिकारने माटे मृदुतानो आश्रय करवो. सर्व ठेकाणे मृदुता राखवी तेमां पण पूज्य वर्गमां विशेषे राखवी, कारण के पूज्यनी पूजावडे पापथी मुक्त थवाय छे. बाहुबळी मानवडे लतानी जेम पापथी बंधाणा हता अने मृदुतावडे तत्काळ तेनाथी मुक्त थइने केवळज्ञान पाम्या हता. चक्रवर्ती पण चारित्र लइने संगरहित थइ शत्रुजनना घरमां पण

भिक्षा मागवा जाय छे. अहा! ते मानना उच्छेदने माटे केवी कठण मृदुता ! चक्रवर्ती जेवा महाराजा पण तत्काळ दीक्षा लीधेला एक रंक साधुने पण मान छोडी नमे छे अने चिरकाळ तेनी सेवा करे छे. आ प्रमाणे सर्व मानने विषय जाणी, बुद्धिमान पुरुषे तेनो निरास करवाने हमेशां मृदुताने धारण करवी.

हवे मायानुं स्वरूप कहे छे—असत्यनी माता, शिळरूप वृक्षने कापवानी फरशी अने अविद्यानी जन्मभूमि जे माया ते दुर्गतिनुं कारण छे. कुटिलपणामां चतुर अने मायावडे बगलानी जेवी वृत्तिवाळा पापी पुरुषो जगतने वंचता पोताना आत्मानेज वंचे छे, राजाउ खोटा षड्गुणना योगथी छळ अने विश्वासघातवडे अर्थ लोभने माटे सर्व जगतने छेतरे छे, ब्राह्मणो तिलक, मुद्रा, मंत्र अने दीनत्व बतावी अंतरमां शून्य अने बहार सारवाळा थइ लोकोने ठगे छे, मायाना भाजन वणिक लोको खोटां तोलां अने मान मापथी तथा दाणचोरी विगेरेथी भोळा लोकोने वंचे छे, पाखंडीउ अने नास्तीको, जटा, मौंजी, शिखा, भस्म, वल्कल, अने अग्नि विगेरे धारण करीने श्रद्धावाळा मुग्धजनने ठगे छे, वेश्याउ अरागी छतां हावभाव, लीला, गति अने कटाक्षवडे कामीजनोनुं

मनरंजन करती सर्व जगतने ठगे छे, द्यूतकारो तथा दुःखे पेट भरवामां तत्पर लोको खोटा सोगनथी अने खोटां नाणांथी धनवानने वंचे छे. स्त्रीपुरुष, पितापुत्र, सहोदर, सुहृदजन, स्वामीसेवक अने बीजा सर्वे एक बीजाने मायावडे ठगनारा छे. बंदि लोको अने चोर लोको अर्थमां लुब्ध अने निर्दय बनी अहर्निश जागृत रही प्रमादी जनने छळे छे. कारीगर, अंत्यज अने कोइपण जातनुं काम करीने आजीवीका चलावनारा पुरुषो मायाथी खोटा सोगनो खाइने साधुजनने वंचे छे. व्यंतरादिकनो नठारी योनिमां रहेला क्रूर पुरुषो घणा प्रकारना छळ करीने प्राये प्रमादी मनुष्योने तथा पशुओने पीडे छे. मत्स्यादिक जळचरो छळ करीने पोतानां बच्चांओनुंज भक्षण करे छे अने तेओने पण धीवरलोको मायावडे जाळमां बांधे छे अने हणे छे. विविध प्रकारना उपायो करीने वंचनमां प्रविण एवा शिकारीओ पण कपटथीज स्थळचारी प्राणीओने बांधे छे अने मारे छे. मांसना ग्रासने इच्छनारा पापी प्राणीओ लावक विगेरे अनेक जातना बिचारा आकाशचारी प्राणीओने अनेक प्रकारनी मायावडे बांधी ले छे.

आ प्रमाणे सर्व लोकमां परवंचना करवामां तत्पर एवा प्राणीओ पोताना आत्मा-

टे० नेज वंची स्वधर्म अने सद्गतिनो नाश करे छे तेथी तिर्यंच जातिमां उत्पन्न थवानुं उ- सं०
त्कृष्ट बीज, मोक्षपुरीना द्वारनी भूंगळ अने विश्वासरूप वृक्षने दावानळ सरखी माया
ए० विद्वानोए त्याग करवा योग्य छे. मल्लिनाथ तिर्थंकर पूर्वभवमां सूक्ष्म माया करशे अने
मायाशल्यने काढशे नहीं तेथी ते स्त्रीभावने प्राप्त करशे माटे जगतनो द्रोह करनारी
ए मायारूपी सर्पिणीने जगतने आनंदनुं कारण एवी सरलतारूप औषधिवडे जीती
लेवी. सरलता—ए अवार्य विस्तारवाळो मुक्तिपुरीनो मार्ग कहेलो छे अने तप, दान वि-
गेरे लक्षणवाळो जे मार्ग छे ते तो अवशेष मार्ग छे. जेओ सरलताने सेवनारा छे तेओ लो-
कमां पण प्रीतिना पात्र थाय छे अने सर्पनी जेम कुटिल पुरुषथी सर्वे उद्वेग पामे छे.
जेओनी मनोवृत्ति सरल छे तेओ भववासमां रहेला छे, तथापि ते महात्माओने पोताथीज
अनुभवाय तेवुं अकृत्रिम मुक्तिसुख मळे छे. जेओना मनमां कौटिल्यतारूपी शंकु (खीलो)
क्लेश कर्या करे छे अने जेओ बीजाने हानि करवामां तत्पर छे तेवा वंचक पुरुषोने क्यांथी
सुख होय? सर्व विद्याओमां विद्वता मेळव्या छतां अने सर्व प्रकारनी कळाओ प्राप्त कर्या
छतां धन्य पुरुषोनेज बाळकनी जेवी सरलता प्रगटे छे. बाळको अज्ञ छतां पण तेमनी ए०

सरलता सर्वने प्रीति उपजावे छे, तो जेमनां चित्त सर्व शास्त्रोना अर्थमां आसक्त थयेलां छे तेमनी सरलता प्रीति उपजावे तेमां शुं कहेवुं? सरलता स्वाभाविक छे अने कुटिलता कृत्रिम छे तो स्वाभाविक धर्मने छोडी कृत्रिम धर्मनो कोण आश्रय करे? प्रायः [illegible]नो छळ, पिशुनता, वक्रोक्ति अने परवंचनामां तत्पर छे तो तेमां रह्या छतां पण [illegible] निर्विकारी रहेनार कोइक धन्य पुरुषज होय छे. सर्व गणधरो जो [illegible] पाम्या छे तथापि शिष्य लोकोने माटे योग्य होय तेम तीर्थंक[illegible] सरलताथी [illegible]. जे सरलताथी आलोचना करे छे ते सर्व दुष्कर्मने ख[illegible] छे अने जे कुटिलपणे आलोचना करे छे ते थोडां दुष्कर्म होय तो तेने उलटां वधारे छे. जे मन, वचन, अने कायाथी समस्त प्रकारे कुटिल छे तेमनो मोक्ष थतो नथी, पण जे मन, वचन अने कायाथी सर्वत्र सरल छे तेनो मोक्ष थाय छे.

आ प्रमाणे कुटिल पुरुषोनी अति उग्र एवी करणी पण कुटिलताने विचारीने सारी बुद्धिवाळा पुरुषे मोक्षनी इच्छाथी सरलतानोज आश्रय करवो.

सर्व दोषोनी खाण, गुणनो ग्रास करवामां राक्षस, व्यसनरूपी लतानुं मूळ अने

दे० नेज वंची स्वधर्म अने तद्गतिनो नाश करे ठे तेथी तिर्यंच जातिमां उत्पन्न थवानुं उ- सं०
त्कृष्ट बीज, मोक्षपुरीना द्वारनी भूंगळ अने विश्वासरूप वृक्षने दावानळ सरखी माया
९० विद्वानोए त्याग करवा योग्य ठे. मल्लिनाथ तिर्थंकर पूर्वजवमां सूक्ष्म माया करशे अने
मायाशल्यने काढशे नहीं तेथी ते स्त्रीजावने प्राप्त करशे माटे जगतनो द्रोह करनारी
ए मायारूपी सर्पिणीने जगतने आनंदनुं कारण एवी सरलतारूप औषधिवमे जीती
लेवी. सरलता—ए अवार्य विस्तारवाळो मुक्तिपुरीनो मार्ग कहेलो ठे अने तप, दान वि-
गेरे लक्षणवाळो जे मार्ग ठे तेतो अवशेष मार्ग ठे. जेउ सरलताने सेवनारा ठे तेउ लो-
कमां पण प्रीतिना पात्र थाय ठे अने सर्पनी जेम कुटिल पुरुषथी सर्वे उद्वेग पामे ठे.
जेउनी मनोवृत्ति सरल ठे तेउ जववासमां रहेला ठे, तथापि ते महात्माउने पोताथीज
अनुजवाय तेवुं अकृत्रिम मुक्तिसुख मळे ठे. जेउना मनमां कौटिल्यतारूपी शंकु (खीलो)
क्लेश कर्या करे ठे अने जेउ बीजाने हानि करवामां तत्पर ठे तेवा वंचक पुरुषोने क्यांथी
सुख होय? सर्व विद्याउमां विद्वता मेळव्या ठतां अने सर्व प्रकारनी कळाउ प्राप्त कर्या
ठतां धन्य पुरुषोनेज बाळकनी जेवी सरलता प्रगटे ठे. बाळको अज्ञ ठतां पण तेमनी ९०

सरलता सर्वने प्रीति उपजावे छे, तो जेउनां चित्त सर्व शास्त्रोंना अर्थमां आसक्त थयेलां छे तेमनी सरलता प्रीति उपजावे तेमां शुं कहेवुं? सरलता स्वाभाविक छे अने कुटिलता कृत्रिम छे तो स्वाभाविक धर्मने छोडी कृत्रिम धर्मनो कोण आश्रय करे? प्रायः [illegible] छळ, पिशुनता, वक्रोक्ति अने परवंचनामां तत्पर छे तो तेमां रह्या छतां पण [illegible] प्रतिमानी पेठे निर्विकारी रहे तार कोइक धन्य पुरुषज होय छे. सर्व गणधरो जो श्रुतसमुद्रना पारने पाम्या छे तथापि शिक्षा लेवाने माटे योग्य होय तेम तीर्थंकरनी आलोचना सरलताथी सांभळे छे. जे सरलपणे आलोचना करे छे ते सर्व दुष्कर्मने खपावे छे अने जे कुटिलपणे आलोचना करे छे ते थोडां दुष्कर्म होय तो तेने उलटां वधारे छे. जेओ मन, वचन, अने कायाथी समस्त प्रकारे कुटिल छे तेमनो मोक्ष थतो नथी, पण जेओ मन, वचन अने कायाथी सर्वत्र सरल छे तेनो मोक्ष थाय छे.

आ प्रमाणे कुटिल पुरुषोनी अति उग्र एवी कर्मनी पण कुटिलताने विचारीने सारी बुद्धिवाळा पुरुषे मोक्षनी इच्छाथी सरलतानोज आश्रय करवो.

सर्व दोषोनी खाण, गुणनो ग्रास करवामां राक्षस, व्यसनरूपी लतानुं मूळ अने

सर्व अर्थने बाध करनार लोन छे. निर्धन सोने, सोवाळो सहस्रनें, सहस्राधिपति-ल-क्षने, लक्षपति कोटीने, कोटीपति राजापणाने, राजा चक्रवर्तीपणाने, चक्रवर्ती देवप-णाने अने देव इंद्रत्वने इछे छे. इंद्रपणुं प्राप्त थतां पण इछा निवृत्ति पामती नथी, तेथी मूलमां लघुपणे रहेलो ए लोन कुंनारना चक्रपर रहेला शरावला (रामपात्र) नी जेम वध्या करे छे. सर्व पापमां जेम हिंसा, सर्व कर्ममां जेम मिथ्यात्व अने सर्व रोगमां जेम राज्यक्ष्मा (क्षयरोग) तेम सर्व पापमां लोन मोटो छे अहा! आ पृथ्वीउपर लोननुं एक छत्र साम्राज्य छे के जेथी वृक्षो पण पोतानी नीचे द्रव्य होय छे तो तेने पोताना चरणथी वृटले शाखा तथा मूळीआं विगेरेथी ढांकी दे छे. द्रव्यना लोनथी बेइंद्रि, त्रीइंद्रि, चतुरिंद्रिय प्राणीउ पण मूर्छावडे पोताना पूर्वे दाटेला अथवा मूकेला निधानपर आ-वीने बेसे छे. सर्प अने गृहगोधा (घरोली) जेवा पंचेंद्रिय प्राणीउ पण धनना लोनथी पोते अथवा परे दाटेला के मुकेला निधानस्थानना जूमिपर आवीने लीन थइ जाय छे. पिशाच, मुग्गळ, प्रेत, जूत अने यक्ष विगेरे प्राणीउ लोनथी पोताना अथवा पारका निधिपर अधिष्टायकपणे स्थान करे छे. आनूषण, उद्यान अने वापिका विगेरेमां मूर्छा-

वाळा देवताउ पण त्यांथी च्यवीने तेज ठेकाणे पृथ्वीकाय विगेरेमां उत्पन्न थाय ठे. मुनिजनो पण क्रोधादिकनो विजय करीने उपशांतमोह नामना अगीआरमा गुणठाणाने प्राप्त थया ठतां एक लोजना अंश मात्रथी पतित थइ जाय ठे. लेशमात्र धन लोजथी सहोदर जाइउ पण एक मांसना लवनी इच्छाए बे कुतराउ लडे तेम परस्पर युद्ध करे ठे. ग्राम्यजन, अधिकारी अने राजाउ गाम विगेरेना एक सीमाडानी बाबतमां लोज करी सौहृदजावने ठोडी दइने परस्पर वैर बांधे ठे. लोजीजनो पोताने हास्य, शोक, द्वेष अने हर्षनुं कारण न होय तोपण स्वामीनी पासे नटनी जेम कृत्रिमपणे बतावी आपे ठे. लोजरूपी खाडो जेम जेम पूरवा मांडीए तेम तेम ते वधतोज जाय ठे ए मोटुं आश्चर्य ठे. कदि जळवडे समुद्र पूरी शकाय, पण त्रैलोक्यनुं राज्य मळे तोपण लोज पूरी शकातो नथी. जोजन, वस्त्र, विषय अने द्रव्यनो संचय अनंतीवार एकठो करी करीने जोगव्या ठतां पण लोजनो एक अंश पण पुरातो नथी. जो लोजनो त्याग कर्यो तो पठी निष्फळ तप करवानी जरुर नथी. अने जो लोजनो त्याग कर्यो नहीं तोपण निष्फळ तप करवानी जरुर नथी. सर्व शास्त्रना सर्वस्वने विचारी विचारीने एटलुंज

ध्यानमां राखवानुं ठे के मोटी बुद्धिवाळा पुरुषे एक लोजना त्यागने माटेज प्रयत्न क-
रवो. सद्बुद्धिवाळा पुरुषे लोजना प्रसरता एवा उछेल सागरने संतोषना सेतुबंधवडे रो-
कवो. जेम मनुष्यमां चक्रवर्ती ठे अने देवतामां इंद्र ठे, तेम सर्व गुणोमां संतोष ए
श्रेष्ठ गुण ठे. संतोषी मुनि अने असंतोषी चक्रवर्ती तेमनी ज्यारे तुलना करीए त्यारे
सुख डुःखनो उत्कर्ष समान थाय ठे, एटले जेटले दरज्जे संतोषी मुनि सुखी ठे तेट-
लोज असंतोषी चक्रवर्ती डुःखी ठे; तेथी चक्रवर्ती राजाउ पोताने स्वाधीन एवुं राज्य
ठोडीने पण संतोषरूप अमृतनी तृष्णाथी तत्काळ निःसंगपणाने स्वीकारे ठे. ज्यारे ध-
ननी इछा निवृत्त करीए ठीए त्यारे संपति पडखेज आवीने रहे ठे, कारण के का-
नने आगळथी ढांकीए ठीए त्यारे अंदर शब्दाद्वैतज वधे ठे. जेम नेत्र ढांकवाथी बधुं
चराचर विश्व ढंकाइ जाय ठे, तेम एक संतोष धारण करवाथी अर्थे ते वस्तुमां निर्विक
थाय ठे. इंद्रियोनुं दमन अने कायाने पीडा करवानुं शुं प्रयोजन ठे? मात्र संतोष राख-
वाथी मोक्षलक्ष्मी सामुं जुवे ठे. जेउ मुक्ति जेवुं सुख जोगवे ठे तेउ जीवता ठतां पण
मुक्त ठे. मुक्तिने माथे कांइ शींगडुं होतुं नथी. राग द्वेषथी संयुक्त अने विषयथी उत्पन्न

…थयेलुं सुख शा कामनुं छे? केमके संतोषथी उत्पन्न थयेलुं सुखज मोक्षप्राप्ति योग्य क- र्मोनी न्यूनतावाळुं नथी. बीजाने तृप्त करनारा एवा शास्त्रोनां सुभाषित शा कामनां छे? …न जेओनी इंद्रियो मलीन छे तेओए संतोषना स्वादनुं सुखज शोधवुं जोइए. अरे प्राणी! …ो तुं कारणने अनुसरनारांज कार्यो होय एवुं जाणतो होय तो संतोषना आनंदनी जो- …ना अपार आनंदनी प्रतीतिकर. जे तीव्रतप कर्मने निर्मूळ करनारुं कहेवाय छे ते पण जो संतोषरहित होय तो निष्फळ छे. सुखार्थी पुरुषोने कृषि, सेवा, पशुपाळवृत्ति अने व्या- पार करवानी शी जरुर छे? कारण के संतोषनुं पान करवाथी शुं तेनो आत्मा निवृत्ति सु- खने नथी पामतो? तृणनी शय्या उपर सुनारा पण संतोषीओने जे सुख थाय छे ते सुख …नी शय्यापर सुनारा पण संतोष वगरना पुरुषोने थतुं नथी. असंतोषी धनवान पुरुषो समर्थ पुरुषोनी पासे तृणसमान लागे छे अने संतोषी पुरुषोनी पासे समर्थ पुरुषो पण तृण समान लागे छे. चक्रवर्तीनी अने इंद्रादिकनी संपत्ति प्रयासजन्य अने नश्वर छे, परंतु सं- तोषथी थयेलुं सुख आयासरहित अने नित्य छे; माटे सारी बुद्धिवाळा पुरुषे सर्व दोषना स्थानरूप लोभने दूर करवाने माटे अद्वैतसुखना गृहरूप संतोषनो आश्रय करवो.

दे० आ प्रमाणे कषायने जितनार प्राणी आ नवमां पण शिवसुखने नजनारो थाय छे सं०
अने परलोकमां अवश्य शाश्वत शिनमुखने प्राप्त करे छे.

९३ श्री शांतिनाथजीनी देशना.

अहो! आ चार गतिवाळो संसार दावानळनी जेम अनेक दुःखोनी परंपरानुं मूळ कारण छे. मोटां मंदिरने आधारभूत जेम स्तंभ होय, तेम ते संसारने क्रोध, मान, माया, अने लोभ ए चार कषाय चार स्तंभरूप छे. ते कषाय क्षीण थतां संसार पोतानी मेळे क्षीण थइ जाय छे. जेम 'मूळीआं सूकाइ जतां वृक्ष एनी मेळेज सुकाइ जाय छे.' पण इंद्रियोनो जय कर्यावगर ते कषायने जीतवा कोइ समर्थ थतुं नथी. केमके प्रज्वलित अग्नि विना सुवर्णनुं जाड्य हणातुं नथी. चपळ अने उन्मार्गे चालनारा ए इंद्रियरूप अदांतअश्वो प्राणीने खेंचीने तत्काळ नरकरूप अरण्यमां लइ जाय छे. इंद्रियोथी जीताएलो प्राणी कषायोथी पण पराभव पामे छे. 'वीर पुरुषोए जेनी वचमांनी इंटो खेंची लीधी होय, तेवो किल्लो पछी कोनाथी खंडित न थाय?' नहि जीताएली प्राणीओनी इंद्रियो तेने कुळघात, पात, बंध अने व- ९३

थने माटेज थाय छे. स्वार्थ परवश एवी इंद्रियोथी कयो पुरुष नथी हेरान थतो? कदी ते शास्त्रार्थने जाणनारो होय तथापि इंद्रियोने वश थवाथी माणस बाळकनी पेठे चेष्टा करे छे. आ करतां वधारे ते इंद्रियोनुं लज्जावाळुं स्थानक कयुं बतावीए के जेनावडे भरत राजाए पण बाहुबळ जेवा बंधु उपर चक्र मूक्युं! बाहुबळिनो जय अने भरतनो पराजय ए जय पराजयने विषे पण सर्व इंद्रियोनुं चेष्टितज छे. चरम भवमां रहेला पुरुषो पण जेनावडे शस्त्राशस्त्रि युद्ध करे छे, तेवा इंद्रियोना दुरंत महिमाथी लाजवा जेवुं छे. कदी प्रचंड चरित्रवाळी इंद्रियोथी पशुओ अने सामान्य मनुष्यो दंडाय, पण जे मोहने शांत करनारा अने पूर्ववेत्ता होय छे, तेओ पण दंडाय छे ते अति अद्भूत वार्त्ता छे. इंद्रियोए जीती लीधेला देव, दानव, मनुष्य अने तपस्वीओ पण निंदितकर्म करे छे, ते केवी खेदनी वात छे! इंद्रियोने वश थयेला प्राणीओ अखाद्यवस्तु खाय छे, अपेय वस्तु पीए छे अने अगम्य साथे गमन करे छे. निर्दय इंद्रियोथी हणाइ गयेला प्राणीओ कुलशिलथी रहित थइ वेश्याओनां पण नीचकाम अने दासत्व करे छे. मोहांध मनवाळा पुरुषोनी परद्रव्य अने परस्त्रीमां जे प्रवृत्ति थाय छे ते जाग्रत इंद्रियोनोज विलास छे. जे इंद्रियोना वश

पणाने खीधे हाथ, पग अने इंद्रियोनो छेद तेमज मरण पण थाय छे, ते इंद्रियोनी वा- सं०
नज शी करवी? जेउं पोते इंद्रियोथी जिताइ गयेला छे अने बीजाने विनयनुं ग्रहण क-
राने छे, तेवा पुरुषोने जोइ विवेकीपुरुषो हाथवडे मुख ढांकीने हसे छे. श्री वितराग
प्रभु विना इंद्रथी मांडीने एक कीडा सुधी सर्व जंतुउ इंद्रियोथी जीताइ गयेलाज छे.
हाथिणीना स्पर्शथी उपजता सुखने आस्वादन करवानी इछाथी सुंढने प्रसारतो हस्ति
तत्काळ आलान (खीलो) बंधना क्लेशमां आवी पडे छे. अगाध जळमां विचरनार मीन
गळगतमांसने गळतां ढीमरना हाथमां दीनपणे आवी जाय छे. मत्त मातंगना गंडस्थल
उपर गंधने लोभे वसतो भमरो कर्णतालना आघातवडे तत्काळ मृत्यु पामी जाय छे.
सुवर्णना छेद जेवी दीप शिखाना दर्शनथी मोहित थयेलो पतंग सहसा दीपमां पडीने
मरण पामे छे. मनोहर गीतिने सांभळवामां उत्सुक एवा हरिण कान सुधी धनुष्यने
खेंचीने रहेला शीकारीना वेध्य थइ पडे छे. एवी रीते एक एक विषय सेववाथी पंचत्व प-
माय छे तो एक साथे पांचे विषयो सेववाथी केम पंचत्व न पमाय? ते माटे महामति
पुरुषे मनःशुद्धिवडे इंद्रियोनो जय करवो, केमके तेना विना यम नियमथी कायाने ७४

क्लेश पमाडवो ते वृथा छे. जे इंद्रियोना ग्रामने जीतता नथी ते दुःखे प्रतिबोध पामी शके छे, माटे सर्व दुःखमांथी मुक्त थवाने इंद्रियोनो जय करवो. इंद्रियोनी सर्वथा प्रवृत्ति करवी नहि तेथी कांइ तेनो विजय थतो नथी, पण तेनावडे उपजता राग द्वेषथी मुक्त थवुं, जेथी तेनी प्रवृत्ति पण तेना जयरूप थाय छे. पछी ते इंद्रियोना विषय तेनी पासे रह्या होय तोपण इंद्रियोथी स्पर्श करवाने अशक्य थाय छे; माटे बुद्धिमान पुरुषे तेमां जे राग द्वेष उपजे छे तेने तजी देवा. सदा संयमी योगीउनी इंद्रियो हणायेलीज होय छे, अने तेथी तेउना निहित अर्थ हणायेला होता नथी; अने अहितकारी वस्तुउ हणायेल होय छे. जीतेली इंद्रियो मोक्षने माटे थाय छे, अने नहि जीतेली संसारने माटे थाय छे; माटे तेमां जे तफावत छे तेने समजीने जे योग्य लागे ते करवुं. रु विगेरेना कोमळ स्पर्शमां अने पाषाण विगेरेना कठोर स्पर्शमां जे प्रीति अने अप्रीति थाय छे ते मिथ्या छे, एवुं धारी तेनो त्याग करवावडे स्पर्श इंद्रियनो जय करवो. भक्ष्य पदार्थोना स्वादिष्ट रसमां अने कटुरसमां प्रीति अने अप्रीति बंन्नेने तजीने जीव्हाइंद्रियने जीतवी. सुगंध अने दुर्गंध घ्राणेंद्रिमां प्राप्त थतां तेने वस्तु परिणामरूप विचारीने प्राण

इंद्रियनो जय करवो. मनोहर के नठारुं रूप जोइने तेनावडे उपजता हर्ष अने जुगुप्सानो त्याग करी चक्षुइंद्रियने जीती लेवी. वीणादिकना श्राव्य—मधुरस्वरमां अने गधेडा विगेरेना दुःश्राव्य स्वरमां रति अने जुगुप्साने जीतवाथी श्रोत्रेंद्रियनो जय थाय छे. कोइपण सारो के नठारो एवो विषय नथी के जे इंद्रियोए अनेक वखत जोगव्यो न होय, तो शा माटे हवे स्वस्थपणाने न सेववुं? कोइवार शुभ विषयो अशुभ थइ जाय छे अने अशुभ विषयो शुभ थइ जाय छे, तो इंद्रियोथी कोनामां राग धरवो के कोनामां विराग धरवो? कदी कोइ कारणथी ते विषय रुचिकर के अरुचिकर थाय पण तत्वथी जोतां कदी पण पदार्थोमां शुभ के अशुभपणुं होतुं नथी, तेथी जे प्राणी मननी शुद्धिथी इंद्रियोने जीती कषायने क्षीण करे छे, ते थोडा काळमां अक्षीण सुखवाळा मोक्षमां जाय छे.

श्री कंथुनाथजीनी देशना.

मोटा दुःखनुं कारण एवो आ संसाररूप सागर चोराशी लाख योनिरूप जलभमरीओमां पडवावडे अति भयंकर छे, ते भवसागरने तरवामां समर्थ एवी नाविका वि-

वेकी जनोने इंद्रियरूप उर्मिउना जय साथे मनःशुद्धि करवी, ते छे. विद्वानोए मनःशुद्धि निर्वाणमार्गने बतावनारी अने कदीपण नहि बुझे तेवी एक दिपिका कहेली छे. मनःशुद्धि होय तो जे अछता गुणो छे ते सत् थाय छे, अने छता गुण कदिपण अछता थता नथी; माटे प्राज्ञ पुरुषोए सदा मनःशुद्धि करवी. जे मनःशुद्धि कर्याविना मुक्तिने माटे तपस्या करे छे, ते नाव छोडी महासागरने बे भुजाए तरवाने इछे छे. तपस्वीउनी मनःशुद्धि वगरनी सर्व क्रिया अंधने दर्पणनी जेम निष्फळ थाय छे. मुक्तिमां जवानी इच्छाथी तप करता प्राणीउने चक्रवात (वंटोलीया) नी जेम चपळ चित्त कोइ बीजी तरफज नांखी दे छे, अर्थात मुक्तिमां नहि जवा देतां अन्यगतिमां लइ जाय छे. निरंकुश थइ निःशंकपणे फरतो मनरूपी निशाचर आ त्रण लोकने संसारना उंडा खाडामां पाडी नांखे छे. मननो रोध कर्या वगर जे माणस योगपर श्रद्धा राखे छे ते पगवडे गाममां जवाने इछनार पंगु माणसनी जेम उपहास्यने पामे छे. मननो निरोध करवाथी सर्व कर्मनो पण निरोध थाय छे, अने मनने नहि रुंधनारानां सर्व कर्मो प्रसरी जाय छे. आ मनरूपी कपि विश्वमां परिभ्रमण करवामां लंपट छे, तेथी तेने मुक्तिनो इच्छावाळा प्राणी-

उंए यत्नथी कबजे राखवो. सिद्धिने इच्छनारा प्राणीए अवश्य मननी शुद्धि करवी, ते सिवाय तप, श्रुत अने यम, नियमवडे कायाने दंड आपवो, ते कशा कामनो नथी. मननी शुद्धिवडे राग द्वेषनो जय करवो, जेथी आत्मा जाय मलिनता छोडीने स्वस्वरूपमां स्थिर थाय छे.”

श्री अरनाथजीनी देशना.

धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष–ए चार पुरुषार्थमां एकांतसुखनो सागर एवो मोक्ष पुरुषार्थ मुख्य छे, तेने साधनारुं ध्यान छे, ते सदा मनने आधीन छे. ते मनने योगीओ आत्माधीन करे छे, पण रागादि शत्रुओ पाछा दबावीने ते मनने पराधीन करी दे छे. ए मनने सारी रीते रक्षण करीने राख्युं होय तोपण सहजमात्र मिष पामीने पिशाचनी जेम रागादि तेने वारंवार छळे छे. रागादिरूप तिमिरथी ज्ञाननो नाश करनारुं अज्ञान अंधने अंधनी जेम खेंचीने प्राणीने नरकना खाडामां पाडी दे छे. द्रव्यादिकमां जे रति अने प्रीति–ते राग अने तेमां जे अरति अने अप्रीति ते द्वेष एम विद्वानो कहे छे. ए राग अने द्वेष सर्व प्राणीओना दृढ बंधनरूप छे, अने सर्व दुःखरूप वृक्षोना मूल अंकुर

छे. जो ए राग द्वेष जगत्मां न होत तो सुखमां कोण विस्मय पामत? दुःखमां कोण कृपण थात? अने मोक्षने कोण न पामत? राग विना द्वेष अने द्वेष विना राग रहेतोज नथी, तेथी बन्नेमांथी एकनो त्याग करतां बंनेनो त्याग थाय छे. कामादि सर्व दोषो रागनो परिवार छे, अने मिथ्याभिमान प्रमुख द्वेषनो परिवार छे. ते राग द्वेषनो पिता, बीज, नायक के परमेश्वर मोह छे, अने ते तेमनाथी अभिन्न छे; तेथी सर्व दोषोना पितामह एवा ते मोहथी घणी संभाळ राखीने रहेवुं योग्य छे. संसारमां आ त्रण (राग, द्वेष, ने मोह) दोषज छे, ते सिवाय बीजो कोइ दोष नथी. ते त्रण दोषथीज आ संसार वारिधिमां सर्व प्राणीओ भम्या करे छे. जीव स्वभावे स्फटिकमणि जेवो निर्मळ छे पण ते त्रण दोषनी उपाधिथी तद्रूपपणे जणाय छे. अहा! आ आखुं विश्व राजा वगरनुं छे के जेथी तेमां रहेला प्राणीओनुं ज्ञान सर्वस्व अने स्वरूप ते लुंटाराओ जोतां जोतामां लुंटी ले छे. जे प्राणीओ निगोदमां छे अने जेओ नजदीकमां मुक्ति जवावाळा छे ते सर्वनी उपर तेमनी निर्दय सेना आवीने पडे छे. शुं तेमने मुक्ति साथे वैर छे के मुमुक्षु साथे वैर छे. के जेथी ते बंनेनो थतो योग ते अटकावे छे?

दे० उत्तम मुनि वंने लोकमां अपकार करनारा ए त्रण दोषथी जेवा भय पामे छे तेवा सं०
व्याघ्र, सर्प, जल अने अग्निथी भय पामता नथी, आवो आ महा संकटवाळो मार्ग
८७ महा योगीओए आश्रित करेलो छे के जेनी बन्ने बाजु राग द्वेषरूप व्याघ्र अने सिंह उभा छे. निर्वाणपदनी इच्छा करनारा प्रमादरहित पुरुषोए समभावने अंगीकार करीने ए राग द्वेष शत्रुनो जय करवो.

श्री मल्लिनाथजीनी देशना.

आ संसार स्वतः अपार छतां पूर्णिमाना दिवसवडे समुद्रनी जेम रागादिकथी विशेष वृद्धि पामे छे. जे प्राणीओ अमंद आनंदने उत्पन्न करनार समतारूप जळमां स्नान करे छे तेओना राग द्वेषरूप मल तत्काळ धोवाइ जाय छे. कोटी जन्म सुधी तीव्र तपने आचरवावडे प्राणी जे कर्मने हणी शकतो नथी ते कर्मने समताना आलंबनथी अर्ध क्षणमां हणी नांखे छे. कर्म अने जीव जे साथे मळी गयेला छे तेने ज्ञानवडे आत्म निश्चय करनार साधुपुरुष सामायिकरूप शलाकाथी जुदा करी देछे. योगीपुरुषो सामा- ८७
यिकना किरणवडे रागादिक अंधकारनो नाश करी पोतामां परमात्म स्वरूपने जोवे छे,

स्वार्थ माटे नित्य वैर धरनारा प्राणीओ पण समतावाळा साधुजनना प्रभावथी परस्पर स्नेह धरे छे. इष्ट अनिष्टपणे रहेला चेतन अने अचेतन पदार्थोवडे जेनुं मन मोह पामतुं नथी ते पुरुषमांज समता कहेवाय छे, बाहु उपर गोशीर्ष चंदननो लेप करे अथवा कुहाडी वडे छेद करे तो पण जेनी मनोवृत्ति भेदाय नहि—समान वर्त्ते तेवाओमां अनुपम समता छे एम समजवुं. स्तुति करनार तथा प्रीति राखनार अने क्रोधांध तथा गाळो आपनार उपर जेनुं चित्त समान वर्त्ते छे ते पुरुषज समतानुं अवगाहन करे छे. जेमां कांइ होम, जप के दान करवुं पडे नहि तेम छतां मात्र समताथीज परम निवृत्ति (मोक्ष) प्राप्त थाय. अहा! ते केवी अमूल्य जडी छे! प्रयत्नथी खेंचेला अने क्लेशदायक रागादिकनी उपासना शा माटे करवी? प्रयत्न वगर मेळवी शकाय तेवुं अने मनोहर सुखकारी समतापणुंज धारण करवुं. परोक्ष होवाने लीधे स्वर्ग अने मोक्ष तो गुप्त छे पण समतानुं सुख तो स्वसंवेद्य होवाथी प्रत्यक्ष छे ते कोइ ढांकी शकतुं नथी. कविओना कहेवाथी रुढ एवा अमृतपर शा माटे मोहित थवुं? जेनो रस पोताना अनुभवमां आवे छे एवा समतारूप अमृतनुं निरंतर पान करवुं. खाद्य, लेह्य, चुष्य, अने पेय—ए चारे प्रकारना रसथी

विमुख एवा मुनिओ पण हमेशां स्वेछाए समतारूप अमृतरसने वारंवार पीधा करे छे. जेना कंठमां सर्प नांखे के मंदार पुष्पनी माळा पहेरावे, तथापि जेने प्रीति के अप्रीति थती नथी ते खरेखरो समतानो पति छे. जे गुढ नथी, अवार्य नथी अने बीजी कोइ रीते जेनी प्राप्ति मुश्केल नथी एवी एक समताज अज्ञने के बुद्धिवानने आ संसाररूप पीडानुं औषध छे. अति शांत एवा योगीओमां पण एक क्रूरकर्म रहेलुं छे के जे समता-रूप शस्त्रथी रागादिकना कुळने हणी नाखे छे. समतानो परम प्रभाव प्रथम तो एज छे के जेथी एक अर्ध क्षणमां पापी जनो पण शाश्वतपदने पामी जाय छे. जेना होवाथी ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण रत्न सफळ थाय छे, अने जे न होवाथी ते त्रण रत्न नि-ष्फळ थाय छे एवा महा पराक्रमी समतागुणथी सदा कल्याण छे. ज्यारे उपसर्गो आवी पड्या होय अथवा मृत्यु प्राप्त थयेल होय त्यारे तत्काळ करवा योग्य अने श्रेष्ट उपाय समताना जेवो बीजो कोइ नथी. राग द्वेषनो जय करवाने इछता एवा पुरुषे मोक्षरूप वृक्षनुं एक बीज अने अति अद्भूत सुखने आपनारुं समतापणुं सदा धारण करवुं."

श्री मुनिसुव्रतस्वामीनी देशना.

कार समुद्रमांथी रत्नानी जेम आ असार संसारमांथी उत्तम साररूप धर्मने ग्रहण करवो. ते धर्म संयम, सत्यवचन, पवित्रता, ब्रह्मचर्य, निष्कंचनपणुं, तप, क्षमा, मृदुता, सरलता, अने मुक्ति ए दस प्रकारे छे. पोताना देहमां पण स्पृहारहित, पोताना धनमां पण ममताए वर्जित, नमस्कार करनार अने अपकार करनार प्राणी उपर निरंतर समदृष्टि राखनार, निले उपसर्ग तथा परीसहोने सहन करवाने समर्थ, नित्य मैत्र्यादिक भावनायुक्त हृदयवाळो, क्षमावान, विनयी, इंद्रियोने दमनार, गुरु शासनमां श्रद्धालु अने जाति विगेरे गुणोथी संपन्न एवो प्राणी यतिधर्मने माटे योग्यतावाळो छे. गृहस्थना मूळ पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत एम बार प्रकारे गृहस्थनो धर्म छे.

१ न्यायथी द्रव्योपार्जन करनार, २ शिष्टाचारनी प्रशंसा करनार, ३ सरखा कुळशीलवान अने बीजा गोत्रवाळानी साथे विवाहसंबंध जोडनार, ४ पापथी बीहीनार, ५ प्रसिद्ध देशाचार आचरनार, ६ कदीपण अवर्णवाद नहि बोलनार, तेमां पण राजा-

द्रूना तो विशेषे करी अवर्णवाद नहि बोलनार, ७ अति प्रकाश के अति गुप्त नहि तेवा, सारा पाडोशवाळा, अने अनेक निकळवाना मार्ग वगरना घरमां निवास करी रहेनार, ० सदाचारी पुरुषोनी साथे संग राखनार, ए माता पितानी पूजा करनार, १० उपद्रववाळा स्थाननो त्याग करनार, ११ निंदितकार्यमां नहि प्रवर्त्तनार, १२ आवकना प्रमाणमां खर्च करनार, १३ द्रव्यनी स्थिति प्रमाणे वेष राखनार, १४ आठ प्रकारना बुद्धिना गुणे युक्त, १५ हमेशां धर्म सांजळनार; १६ अजीर्णमां जोजननो त्याग करनार, १७ पाचनशक्ति प्रमाणे वखतसर जोजन करनार, १० एक बीजाने बाध न करे तेवी रीते त्रण वर्ग (धर्म, अर्थ, काम) ने साधनार, १ए अतिथिनो, साधुनो अने दीन पुरुषनो यथायोग्य सत्कार करनार, २० कदीपण डुराग्रह नहि करनार, २१ गुण उपर पक्षपात राखनार, २२ देशकाळने अनुचित्त आचरण तजी देनार, २३ स्वपरना बळाबळने जाणनार, २४ सदाचारी अने ज्ञानवृद्धनी पूजा करनार, २५ पोष्यवर्गनुं पोषण करनार, २६ दीर्घदर्शी, २७ विशेष जाणनार, २० कृतज्ञ, २ए लोकप्रिय, ३० लज्जावान, ३१ दयाळु, ३२ सौम्य ३३ परोपकार करवामां तत्पर, ३४ अंतरंग ठ शत्रुउना वर्गनो परिहार करनार,

३५ इंद्रियोने वश राखनार एवो पुरुष गृहस्थधर्मने योग्य छे. (अर्थात आ मार्गानुसारीना ३५ गुणने धारण करनार प्राणी गृहीधर्म—समकित मूळ बारे व्रत ग्रहण करवायोग्य छे. आ संसारमां मनुष्यजन्मनी साफल्यताने इच्छनारो पुरुष जो यतिधर्म लेवाने अशक्त होय तो तेणे सदा श्रावकधर्म आचरवो.

श्री नमिनाथजीनी देशना.

आ संसार असार छे, धन नदीना तरंग जेवुं चंचळ छे, अने शरीर विजळीना विलास जेवुं नाशवंत छे, तेथी चतुरजने ते त्रणेमां सर्वथा अनास्था राखी मुमुक्षु थइ मोक्षमार्गरूप यतिधर्मने विषे प्रयत्न करवो. जो तेम करवाने अशक्त होय तो तेनी आकांक्षा राखी समकितयुक्त बार प्रकारना श्रावक धर्मने माटे तत्पर थवुं. श्रावके प्रमाद छोडी मन, वचन, कायाए करी धर्म संबंधी चेष्टावडेज अहोरात्री निर्गमन करवां. श्रावके ब्राह्म मुहूर्त्तमां उठी परमेष्टिमंत्रनुं स्मरण करीने विचारवुं के मारो शो धर्म छे? हुं केवा कुळनो छुं? अने मारे शुं व्रत छे? पछी पवित्र थइ पुष्प नैवेद्य अने स्तोत्रवडे गृहचैत्यमां देवपूजा करी, यथाशक्ति पच्चक्खाण करीने पछी मोटा देरासरे जवुं. त्यां विधि

द० वडे प्रवेश करी प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा करवी, अने पुष्पादिकवडे प्रभुने पूजीने उत्तम स्तो- सं०
त्रवडे स्तुति करवी. पछी गुरुनी पासे जइ वंदनापूर्वक विशुद्धात्मावाळा प्राणीए पच्च-
१०० क्खाणने प्रकाशित करवुं (पच्चक्खाण लेवुं). गुरुनां दर्शन थतांज उभा थवुं, तेमना आ-
गमनने वखते सामुं जवुं, मस्तकपर अंजली जोडवी, पोते आसन नांखी देवुं अने गुरु
आसनपर बेसे एटले भक्तिपूर्वक पर्युपासना करवी; तेमज ज्यारे गुरु जाय त्यारे पाछळ
जवुं. आ प्रमाणे करवाथी गुरु महाराजनी प्रतिपत्ति थाय छे. पछी गुरु पासेथी पाछा
फरीने पोताने घेर जवुं, अने पछी सद्बुद्धिपूर्वक धर्मना अविरोधपणे अर्थ चिंतन (व्या-
पार उद्योग) करवुं. पछी मध्यान्हकाळे फरी जिनपूजा करीने भोजन करवुं.
त्यारबाद शास्त्रवेत्ताउनी साथे शास्त्रोनुं रहस्य विचारवुं. पछी संध्या वखते फरी-
वार देवार्चन करी, आवश्यक कर्म (प्रतिक्रमण) आचरवुं अने पछी उत्तम प्र-
कारे स्वाध्यायध्यान करवुं. रात्रे योग्यसमये देवगुरुना स्मरणथी पवित्र थइ अ-
ल्प निद्रा करवी, अने प्रायः अब्रह्मपणाने वर्जवुं. वचमां जो निद्रानो छेद थाय (निद्रा
उडी जाय) तो स्त्रीना अंग विषे चिंतवन करवुं, अने महात्मा मुनिउए जे तेनाथी नि- १००

वृत्ति करी छे तेनो विचार करवो. स्त्रीनुं शरीर, ग्रंथीओ, विष्टा, सूत्र, मल, श्लेष्म, मज्जा अने अस्थिथी नरपुर छे, तेमज स्नायुथी सीवेली चर्मनी कोथळीरूप छे. जो स्त्रीना शरीरनुं अंदरना अने बहारना जागनुं विपर्ययपणुं करवामा आवे, अर्थात् अंदरना जागने बहार लाववामां आवे तो दरेक कामी पुरुषे गीध अने शियाळथकी तेना शरीरनुं रक्षण करवुं पडे. जो कामदेव स्त्रीरूप शस्त्रथी आ जगतने जीतवाने इच्छतो होय तो ते मूढ बुद्धिवाळो हलका पींछानुं शस्त्र शा माटे लेतो नथी? अहो संकल्पमांथी उत्पन्न थनारा कामदेवे आ विश्वने विडंबित कर्युं छे. पण ते दुःखनुं मूळ संकल्पज छे' एवुं चिंतवन करवुं. जे जे बाधककारी दोष होय, तेनो प्रतिकार चिंतववो, अने तेवा दोषथी मुक्त एवा मुनिओने विषे हर्ष पामवो. सर्व जीवोने विषे रहेली महादुःखकारक जवस्थितिने विषे विचार करी स्वनावथीज सुखदायक एवा मोक्षमार्गनो शोध करवो. जेमां जिनेश्वर देव, दयाधर्म अने मुनिड गुरु छे एवा श्रावकपणानी कयो अमूढ (पंडीत) जन श्लाघा न करे? वळी उत्तम प्राणीए ते समये आवा मनोरथ करवा के "हुं जिनधर्मरहित चक्रवर्ती थवाने पण इच्छतो नथी, परंतु जैनधर्मवासित किंकर के दरिद्री थवाने इच्छुं छुं.

वळी सर्व संग छोडी दइ, जीर्ण वस्त्र पहेरी, मलीन शरीर राखी अने माधुकरीवृत्ति अंगीकार करी हुं मुनिचर्याने क्यारे आचरीश? दुःशील जनोनो संसर्ग छोडी, गुरुना चरण रजनो स्पर्श करी, योगनो अभ्यास करतो सतो हुं आ संसार छेदवाने क्यारे समर्थ थइश? अर्ध रात्रे नगरनी बहार कायोत्सर्ग करीने स्तंभवत् थयेला मारा शरीर साथे वृषभो क्यारे पोताना स्कंधने घस्या करशे? वनमां पद्मासन करी अने मृगना बच्चांने उत्संगमां राखीने रहेला एवा मारा मुखने वृद्ध मृगो क्यारे आवीने सुंघशे? शत्रु अने मित्रमां, तृण अने स्त्रीमां, सुवर्ण अने पाषाणमां, मणि अने मृतिकामां, तेमज मोक्ष अने संसारमां मारी समानबुद्धि क्यारे थशे? आ प्रमाणे मुक्तिगृहनी निसरणी रूप गुणश्रेणी उपर चडवाने माटे परम आनंदरूप लताना मूळभूत मनोरथो हमेशां कर्या करवा." आवी रीते अहोरात्रिनी चर्या प्रमादरहितपणे आचरतो अने यथार्थरीते कहेला वृतोने विषे स्थिति रहेतो श्रावक गृहस्थपणामां विशुद्ध थाय छे.

श्री अरिष्ठनेमिनाथजीनो देशना.

सर्व प्राणीओने लक्ष्मी विद्युतना विलास जेवी चपळ छे, संयोग छेवटे वियोग-

नेत्र प्राप्त करावनारा अने स्वप्नामां प्राप्त थयेला अर्थ जेवा छे. यौवन मेघनी छाया जेवुं नाशवंत छे, अने प्राणीओनुं शरीर जळना परपोटा जेवुं छे; तेथी आ असार संसारमां बीजुं कांइ पण सार नथी. मात्र ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनुं पाळवुं एज सार छे. तेमां तत्त्व उपर जे श्रद्धा, ते सम्यग्दर्शन कहेवाय छे, यथार्थतत्त्वनो बोध ते ज्ञान कहेवाय छे अने सावद्य योगनी विरति ते मुक्तिनुं कारण चारित्र कहेवाय छे. ते चारित्र मुनिओने सर्वात्मपणे अने गृहस्थोने देशथी होय छे. श्रावक यावज्जीवित देशचारित्रमां तत्पर, सर्व साधुओनो उपासक अने संसारना स्वरूपनो जाणनार होय छे. श्रावके १ मदिरा, २ मांस, ३ माखण, ४ मधु, ५–९ पांच प्रकारना उदंबरादि वृक्षनां फळ, १० अनंतकाय (कंदमूळ) ११ अज्ञात (अजाण्यां) फळ, १२ रात्रिभोजन, १३ काचां गोरस (दुध. दहीं, छाशनी) साथे मळेलुं द्विदल, १४ पुष्पित भात, बे दिवस व्यतीत थयेलुं दहीं अने कोही गयेलुं अन्न–ए सर्व अभक्ष्यनो त्याग करवो.

जेम पुरुष चतुर होय ते छतां दुर्भाग्यना उदयथी स्त्री तेनाथी दुर रहे छे–स्वती नथी. तेम मदिरापान करवाथी बुद्धि नष्ट थाय छे. मदिराना पानथी जेमनां चित्त पर-

दे० वश थयेलां छे एवा पापी पुरुषो माताने प्रिया माने छे अने प्रियाने माता माने छे. तेओ सं०
चित्त चलित थवाथी पोताने के परने अथवा पोताना के पारका पदार्थने जाणता नथी.
१०५ पोते रांक छतां स्वामी थइ बेसे छे अने पोताना स्वामीने किंकर समान गणे छे. शबनी
जेम चौटामां आलोटता मद्यपानीना मुखमां श्वान विवरनी शंकाथी मूत्रे छे, मद्यपा-
नना रसमां मग्न थयेलो माणस नग्न थइने चौटामां सुवे छे अने लीलावडे पोतानो गुप्त
अभिप्राय पण प्रकाश करी दे छे. जेम विचित्र चित्रनी रचना काजळ भूंसवाथी नष्ट
थइ जाय छे, तेम मदिराना पानथी कांति, कीर्त्ति, मति, अने लक्ष्मी चाल्या जाय छे. म-
दिरापानी भूत वळग्युं होय तेम नाचे छे, शोकसहित होय तेम पोकारे छे, अने दाह-
ज्वर आव्यो होय तेम पृथ्वीपर आळोटे छे. मदिरा हलाहल विषनी जेम अंगने शि-
थिल करे छे, इंद्रियोने ग्लानि आपे छे, अने महान् मूर्छा पमाडे छे. अग्निना एक तण-
खाथी तृणनी मोटी गंजी बळी जाय छे तेम मद्यपानथी विवेक, संयम, ज्ञान, सत्य,
शौच, दया अने क्षमा ए सर्व विलीन थइ जाय छे. मदिराना रसमां घणा जंतुओ उद्-
भवे छे, तेथी हिंसाना पापथी भीरु एवा पुरुषे कदापि मदिरापान करवुं नहीं. मदिरा- १०५

पानी आप्युं होय तेने न आप्युं कहे छे, लीधुं होय ते न लीधुं कहे छे, कर्युं होय तेने नहीं करेलुं कहे छे अने राज्य विगेरेने मिथ्या अपवाद आपी स्वेछाए बके छे. मूढ बुद्धिवाळो मधुपानी वध बंधनादिकनो भय छोडी दइने घेर बाहेर के मार्गे—ज्यां मळे त्यां परद्रव्यने खुंचवी ले छे. मद्यपान करवाथी थयेला उन्मादवाळो पुरुष बालिका, युवति, वृद्धा, ब्राह्मणी के चांडाली—सर्व जातिनी परस्त्रीने पण उन्मत्त थइने भोगवे छे. मधुपानी पुरुष रटतो, गातो, लोटतो, दोडतो, कोप करतो, तुष्ट थतो, रोतो, हसतो, स्तब्ध रहेतो, नमतो, भमतो, अने उभो रहेतो, एम अनेक क्रिया करतो नटनी जेम नाटक्या करे छे. हमेशां जंतुउना समुहनो ग्रास करतां छतां यमराज जेम तुष्ट थतो नथी तेम मधुपानी वारंवार मधुपान करतां छतां पण धरातो नथी. सर्व दोषोनुं कारण मद्य छे, अने सर्व प्रकारनी आपत्तिनुं कारण पण मद्य छे, तेथी अपथ्यने रोगीनी जेम मनुष्ये तेनो त्याग करवो.

जे प्राणीउना प्राणनो अपहार करी मांसने इछे छे, ते धर्मरूप वृक्षना दया नामना मूलने उन्मूलन करे छे. जे मनुष्य हमेशां मांसनुं भोजन करतो छतो दया पाळवाने

दे० इच्छे छे, ते प्रज्वलित अग्निमां वेलडीनुं आरोपण करवाने इच्छे छे. मांस भक्षण करवामां सं०
लुब्ध माणसनी बुद्धि दुर्बुद्धिवाळी डाकणनी जेम प्रत्येक प्राणीने हणवामां प्रवर्त्ते छे.
१०३ जेओ दिव्य भोजन छतां पण मांसनुं भोजन करे छे, तेओ अमृतरसने छोडीने हलाहल
विषने खाय छे. जे नरकरूप अग्निमां इंधण जेवा पोताना मांसने बीजाना मांसथी
पोषवाने इच्छे छे, तेना जेवो बीजो कोइ निर्दय नथी. शुक्र अने शोणितथी उत्पन्न थ-
येलुं, अने विष्टारसथी वधेलुं एवुं लोहीवडे छरी गयेलुं मांस के जे नरकना फळरूप छे
तेने कोण बुद्धिमान भक्षण करे! अंतर्मुहूर्त्त पछी जेमां अनेक अति सूक्ष्म जंतुओ उत्पन्न
थाय छे, एवुं मांखण विवेकी पुरुषोए कदिपण खावुं नहीं. एक जीवनी हिंसामां केटलुं
वधुं पाप छे, तो पछी अनेक जंतुमय मांखणने कोण सेवे?

जे अनेक जंतु समुहनी हिंसाथीज उत्पन्न थयेलुं छे अने जे लाळनी जेम जुगुप्सा
करवायोग्य छे, एवा मधने कोण चाखे? एक एक पुष्पमांथी रस लइने मक्षिकाओए
वमन करेला मधने धार्मिक पुरुषो कदिपण खाता नथी.

उंबरडो, वड, पींपर, काक, उडुंबर, अने पींपळाना फळ घणा जंतुओथी आकुळ १०३

व्याकुळ होय छे, तेथी ते पांचे वृक्षनां फळ कदीपण खावां नहीं. बीजुं जक्ष्य मळ्युं न होय अने क्षुधाथी शरीर क्षाम (दुर्बळ) थइ गयुं होय तोपण पुण्यात्मा प्राणी उंबरडादिक पांच वृक्षनां फळ खाता नथी.

सर्व जातिनां आर्द्र कंद, सर्व जातनी कुंपळो, सर्व जातिना थोर, लवण वृक्षनी त्वचा, कुमारी (कुंवार), गिरिकर्णिका, शतावरी, विरुढ, गडुची, कोमल आंबली, पल्यंक, अमृतवेल, सूकरजातिना वाल, अने ते शिवाय बीजा सूत्रमां कहेला अनंतकाय पदार्थो के जे मिथ्यादृष्टिओथी अज्ञात छे, ते प्रयत्नथी वर्जवा.

रात्रीए निरंकुश थइने संचरता प्रेत पिशाच विगेरे अन्नने उच्छिष्ट करे छे, तेथी रात्रिने विषे कोइ पण प्रकारनुं अन्न जमवुं नहीं. घोर अंधकारथी जेनां नेत्रो रुंधाइ जाय छे, एवा अनेक जंतुओ अन्नमां पडतां छतां जोवामां आवता नथी, तेवा रात्रिना समयमां कोण जोजन करे? आ प्रमाणे जोजनमां विवेकबुद्धिवाळो होवाथी सर्व अन्नदोषने तजनारो श्रावक अनुक्रमे संसारथी मुक्त थइ जाय छे."

दे०

श्री पार्श्वनाथजीनी देशना.

सं०

अहो भव्य प्राणीओ! जरा, रोग अने मृत्युथी भरेला आ संसाररूप मोटा अर-
१०४ ण्यमां धर्म विना बीजो कोइ त्राता नथी, माटे हमेशां तेज सेववा योग्य छे. ते धर्म
सर्वविरति अने देशविरति, एम बे प्रकारनो छे. तेमां अनगारी साधुओनो पहेलो सर्ववि-
रति धर्म छे, ते संयमादि दश प्रकारनो छे. अने अगारी—ग्रहस्थनो बीजो देशविरति
धर्म छे, ते पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत एम बार प्रकारनो छे. जो ते
व्रत अतिचारवाळां होय छे तो सुकृतने आपतां नथी तेथी ते एक एक व्रतना पांच
पांच अतिचार छे, ते त्यजवा योग्य छे. पेहेलुं व्रत जे अहिंसा, तेमां क्रोधवडे बंध छवि-
छेद, अधिकभारनुं आरोपण, प्रहार, अने अन्नादिकनो रोध—ए पांच अतिचार छे.
बीजुं व्रत सत्यवचन, तेना मिथ्याउपदेश, सहसा अभ्याख्यान, गुह्य भाषण, विश्वा-
सीए कहेला रहस्यनो भेद अने कूटलेख—ए पांच अतिचार छे. त्रीजुं व्रत अस्तेय,
(चोरी न करवी) तेना चोरने अनुज्ञा आपवी, चोरेल वस्तुनुं ग्रहण करवुं, शत्रु राज्यनुं
लंघन करवुं, प्रतिरूप वस्तुनो भेळसंभेळ करवो, अने मान माप तोल खोटां राखवां, १०४

ए पांच अतिचार छे. चोथुं व्रत ब्रह्मचर्य–तेना अपरिग्रहिता गमन, इत्वर परिग्रहिता गमन, परविवाह करण, तीव्र कामभोगानुंराग, अने अनंगक्रीडा–ए पांच अतिचार. छे. पांचमुं व्रत अपरिग्रह (परिग्रहनुं प्रमाण). तेमां धन धान्य प्रमाणातिक्रम, तांबा पीतळ विगेरे धातुनुं प्रमाणातिक्रम, द्वीपद चतुष्पद प्रमाणातिक्रम, क्षेत्र वस्तु प्रमाणातिक्रम अने रुप्य सुवर्ण प्रमाणातिक्रम–ए पांच अतिचार छे. ते अतिचार अनाजना नाना मोटा माप करवाथी, ताम्रादिकनां भाजनो नानां मोटां करवाथी, द्वीपद चतुष्पदना गर्भ धारणथी थयेल वृद्धिथी, घर के क्षेत्र वच्चेनी भींत के वाड काढी नांखीने एकत्र करी देवाथी, अने रुप्य सुवर्ण कोइने आपी देवाथी लागे छे. पण ते व्रत ग्रहण करनारने लगाडवा योग्य नथी. स्मृति न रहेवी, उपर नीचे अने तिरछा भागे जवाना करेला प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं अने क्षेत्रनी वृद्धि हानी करवी–ए पांच छठा दिग्विरति व्रतना अतिचार छे. सचित्त भक्षण, सचित्तना संबंधवाळा पदार्थनुं भक्षण, तुछ औषधीनुं भक्षण तथा अपक्व अने दुष्पक्व वस्तुनो आहार–ए पांच अतिचार भोगोपभोग प्रमाण नामना सातमा व्रतना छे. ए अतिचार भोजन आश्री त्याग करवाना छे अने

बीजा पंदर कर्मथी त्यजवाना ठे, तेमां खर कर्मनो त्याग करवो. ए खर कर्म पंदर प्रकारना कर्मादानरूप ठे, ते आ प्रमाणे.—अंगारजीविका, वनजीविका, शकटजीविका, भाटकजीविका, स्फोटजीविका, दंतवाणिज्य, लाखवाणिज्य, रसवाणिज्य, केशवाणिज्य, विषवाणिज्य, यंत्र पीडा, निर्लांछन, असतीपोषण, दवदान अने सरः शोष—ए पन्नर प्रकारना कर्मादान कहेवाय ठे. अंगारानी भठी करवी, कुंभार, लुहार तथा सुवर्णकारपणुं करवुं अने चुनो तथा इंटो पकववी. ए कामो करीने जे आजीविका करवी ते अंगार जीविका कहेवाय ठे. ठेदेला ने वगर ठेदेला वनना पत्र, पुष्प अने फळने लावीने वेचवा, अने अनाज दळवुं, खांडवुं—ए काम करीने जे आजीविका करवी ते वनजीविका कहेवाय ठे. शकट ते गाडां अने तेना पै, धरी विगेरे अंगने घडवा, खेडवा अने वेचवा, एथी जे आजीविका करवी ते शकटजीविका कहेवाय ठे. गाडां बळद, पाडा, उंट, खर खच्चर अने घोडाओने भाडे आपी भार वहन करावीने तेनावडे जे आजीविका करवी, ते भाटकजीविका कहेवाय ठे. सरोवर तथा कुवा विगेरे खोदवा अने शिला पाषाणने घडवा, एम पृथ्वी संबंधी जे कांइ आरंभ करवा अने ते वडे आजीविका करवी

ते स्फोटजीविका कहेवाय छे. पशुउना दांत, केश, नख, अस्थि, त्वचा, अने रुंवाडां विगेरे तेना उत्पत्ति स्थानेथी ग्रहण करीने ते त्रस अंगोनो जे व्यापार करवो, ते दंतवाणिज्य कहेवाय छे. लाख, मनशील, गळी धावडी अने टंकणखार वीगेरे वस्तुनो जे व्यापार करवो ते पापना ग्रहरूप लाखवाणिज्य कहेवाय छे. मांखण, चरबी, मध अने मदिरानो व्यापार करवो ते रसवाणिज्य कहेवाय छे. अने बे पगवाळा मनुष्यादि अने चार पगवाळा पशु आदिनो जे व्यापार करवो ते केशवाणिज्य कहेवाय छे. कोइ पण जातनुं झेर, कोइ पण जातनुं शस्त्र, हल, यंत्र, लोह अने हरिताळ विगेरे जीवितनो नाश करनारी वस्तुउनो जे व्यापार करवो ते 'विषवाणिज्य' कहेवाय छे. तिल, शेरडी, सर्षव अने एरंड विगेरे जळ यंत्रादिक यंत्रोथी जे पालना तथा पत्रमांथी तेल–अत्तर काढीने तेनो जे व्यापार करवो ते यंत्रपीडा कहेवाय छे. पशुउना नाक वींधवा, डाम देइने आंकवा, मुष्कच्छेद (खासी करवा) पृष्ठ भागने गाळवा अने कान विगेरे अंग वींधवा, ते निर्लांछनकर्म कहेवाय छे. द्रव्यने माटे मेना, पोपट, मार्जार, कुकडा अने मोर विगेरे पक्षीने पाळवा पोषवा अने दासीउनुं पोषण करवुं, ते 'असतीपोषण' कहेवाय छे.

व्यसनथी अथवा पुण्यबुद्धिथी एम बे प्रकारे दावानळनुं आपवुं ते दवदान कहेवाय ठे. अने सरोवर, नदी तथा द्रहो विगेरेना जळने शोषी लेवाना उपाय करवा, ते सरःशोष कहेवाय ठे. आ प्रमाणे पंदर कर्मादान समजवां अने तेनो त्याग करवो. संयुक्त अधिकरणता, उपभोग अतिरिक्तता, अति वाचालता, कौकुची अने कंदर्पचेष्टा—ए पांच अनर्थदंड विरमण नामना आठमा व्रतना अतिचार ठे. मन, वचन अने कायाथी दुष्ट प्रणिधान, अनादर, अने स्मृतिनुं अनुपस्थापन ए पांच सामायिकव्रतना अतिचार ठे. प्रेष्य प्रयोग, आनयन प्रयोग, पुद्गलनो प्रक्षेप, शब्दानुपात अने रुपानुपात—ए पांच देशावकाशिक व्रतना अतिचार ठे. संथारादिक बराबर जोया विना के प्रमार्ज्या विना मुकवुं ने लेवुं—प्रमाद, अनादर अने स्मृतिनुं अनुपस्थापन—ए पांच पौषधव्रतना अतिचार ठे. सचित्तनी उपर मुकी देवुं, तेनावडे ढांकवुं, काळनुं उल्लंघन करी आमंत्रण करवा जवुं, मत्सर राखवो अने व्यपदेश करवो—ए पांच चोथा अतिथि संविभाग नामना शिक्षाव्रतना अतिचार ठे. आ प्रमाणेना अतिचारोए रहित एवा व्रतने पाळनारो श्रावक पण शुद्धात्मा थइ अनुक्रमे भवबंधनथी मुक्त थइ जाय ठे.

श्री महावीरजिन देशना.

"अहो! आ संसार समुद्रना जेवो दारुण छे, अने तेनुं कारण वृक्षना बीजनी जेम कर्मज छे. पोतानाज करेला कर्मथी विवेकरहित थयेलो प्राणी कुवो खोदनारनी जेम अधोगतिने पामे छे अने शुद्ध हृदयवाळो पुरुष पोताना कर्मथी मेहेल बांधनारनी जेम उर्ध्वगतिने पामे छे. कर्मना बंधनुं कारण एवी प्राणीनी हिंसा कदीपण करवी नहीं. हमेशां पोताना प्राणनी जेम बीजाना प्राणनी रक्षामां तत्पर रहेवुं. आत्म पीडानी जेम परजीवनी पीडाने परहरवाने इच्छता प्राणीए असत्य नहीं बोलतां सत्यज बोलवुं. माणसना बहि:प्राण लेवा जेवुं अदत्त द्रव्य कदिपण लेवुं नहीं, कारण के तेनुं द्रव्य हरवाथी तेनो वध करेलोज कहेवाय छे. घणा जीवोनुं उपमर्दन करनारुं मैथुन कदिपण सेववुं नहीं, प्राज्ञ पुरुषे परब्रह्म (मोक्ष) ने आपनारुं ब्रह्मचर्यज धारण करवुं, परिग्रह धारण करवो नहीं. घणा परिग्रहने लीधे अधिकभारथी बळदनी जेम प्राणी विधुर थइने अधोगतिमां पडे छे. आ प्राणातिपात-विगेरेना बे भेद छे तेमांथी सूक्ष्मने जो छोडी शकाय नहीं तो पछी सूक्ष्मना त्यागमां अनुरागी थइने बादरनो त्याग तो जरुर करवो."

दे० पापनां फळ तथा हितोपदेश उपर देशना. सं०

हे मुनि! तुं जन्मना अने जराना दुःख जो. तने जेम सुख प्रिय छे तेम सर्व जी-

१०७ वोने सुख प्रिय छे. एम विचार करी जाणतो था. माटे तत्त्वदर्शी उत्तम विद्वाने मोक्षने जाणतां थकां पापकर्म नहीं करवुं.

मुनिए गृहस्थो साथे स्नेह के लटपट करवानी टेव नहीं करवी. कारण के गृहस्थ आरंभथी आजीविका करे छे. तथा हजु आ अने परलोक बन्नेनां सुखने चाह्या करे छे. अने जेओ कामभोगमां आसक्त थइ कर्मने वधारे छे तेओ ते कर्मोथी भराता थकां वारंवार संसारमां भटक्या करशे.

वळी कामासक्त पुरुष हास्यविनोदमां जीवोने मारीने पण रमत गमत माने छे. माटे एवा बाळ जीवो साथे सोबत नहीं करवी कारण के तेम कर्याथी अंते आपणी खरावी वधवानी.

माटे खरा विद्वान पुरुषो मोक्षने जाणी करीने तथा नरकादिक दुःखोने देखतां

थकां पाप नथी करता. १०५

माटे हे धीरमुनि तुं मूळकर्म तथा अग्रकर्मने जीवथी जुदा पाड, कारण के कर्मोने तोडवाथीज सर्वे पोताना पवित्र आत्मस्वरूपना जोनार थाय छे.

अने एवा मुनिज मरणना भयथी मुक्त थाय छे. एवा मुनिओ संसारनां दुःखोथी बीहीता थका लोकमां रहेला मोक्षस्थळने जोइने रागद्वेषरहितपणे वर्त्तता थका शांत, समितिवंत, ज्ञानवंत अने यत्नवंत थइने काळक्रमे कर्मक्षय करता थका वर्त्ते छे.

जो "पापकर्म बहु करेलां छे" एम जणाय तो, सत्यमां हिम्मतवान थाओ एमां तत्पर रहेला बुद्धिमान पुरुषो सर्वे दुष्ट कर्मोनो नाश करे छे.

आ संसारी जीव अनेक कामोमां चित्तने दोडावे छे. ते चाळणी के दरीआ जेवा लोभने भरपूर करवा मथे छे. तेथी ते बीजाओने मारवा, हेरान करवा, कबजे राखवा, देशने दुभाववा, देशने हेरान करवा, अने देशने कबजे करवा तैयार थाय छे.

तेम करीने पण केटलाएक अंते संयममां उजमाळ थया. माटे हे मुनिओ तमारे दीक्षा लइ पछी भोगनी वांछा राखी बीजुं मृषावादरूप पाप नही सेववुं. अने विषयोने निःसार गणवा.

हे मुनि जन्म अने मरण सर्वने छे. एम जाणी संयममां चर्या कर. सं०

दे० माटे मुनिए जाते हिंसा न करवी, बीजावती न कराववी तथा तेना करनारने

१०७ रुडुं नहि मानवुं.

स्त्रीओमां आसक्त नहीं थतां कामथी थता सुखने धिक्कारवुं, अने ज्ञानादि उत्तम वस्तुने धरीने पापकर्मथी दूर रहेवुं.

पराक्रमी मुनिए, क्रोध अने तेनुं कारण, जे गर्व तेने भांजी नांखवुं अने लोभथी महोटा दुःखथी भरेली नरकगतिए जवाय छे एम जोवुं. माटे तेना मोक्ष जवा तत्पर थएला मुनिए हिंसाथी दूर रही शोकसंताप न करवा.

परिग्रहने अहित करता जाणी आजेज तेने छांडवुं. तथा (विषय वांछारूप) प्रवाहने पण अहित करता जाणी इंद्रियो वश करी वर्त्तवुं. आ मनुष्यभवमां उंचे आवेला छइने प्राणीओनी हिंसा कदापि करवी नहीं.

१०८

॥ चतुर्विंशति जिन स्तुति देशना संग्रहना अघरा शब्दोना अर्थ ॥

पा. १ लुं.

त्रैलोक्यनां—त्रण लोकनां.
अलंकृत कर्युं छे—शोभाव्युं छे
निशाननी—भंडारनी
प्रभावथी-महात्म्यथी
परिहार—त्याग
परित्याग—समस्तपणे छोडवुं
नीकाड--बंध थएला,
पंथी—मुसाफर, वटेमार्गु

पा. २ जुं.

वृषभ--बळद
सिंधुने--समुद्रने
सहोदरा--बेहनो
समीतिने-सम्यक् चेष्टाने
मंत्रित--कबजे राखवुं गोपववुं
चेष्टाओथी--व्यापारथी
निव्रनथएला—चाळा हठेला
रत्नाकर--समुद्र
नष्टथएल--नाश पामेला
पुनः--फरीथी
महात्म्यनो-मोटाइनो
अवधि—सीमा, हद
निवारण--दूर करवुं
निवास--रहेठाण
लेश—जरा, अंश
श्रमने—महेनतने
अक्षय—नाश न पामे तेवी
विश्वने--दुनिआने
पद्माकरने--सरोवरने

पा. ३ जुं

कनक--निर्मळीनां बी
आरुढथायछे--चढे छे, मां बेसे छे
लोकाग्र--मोक्ष
निष्कारण—वगर कारणे
उद्दीपित--इंधणमांथी छूटा
उपद्रव--हरकत, अडचण
संग्राम--लडाइ
हस्ती- हाथी
करने-- सुंढने
आकर्षण--खेंचवुं
कंडुयन--खजवाळवुं
माहिष—पाडो
मार्जन--चाटवुं
आघ्राण--सुंघेछे
तरुण--जुवान
मार्जार.-बिलाडो
मूषक—उंदर
आलिंगन—भेटवुं
भुजंग--नाग, साप
नकुल--नोळीओ
निर्वैर--वेरविनाना

दारिद्र–गरीब
शेफाळी–झाडनुं नाम
पा. ४ थुं.
चिकित्सा–परीक्षा, पारख
सदृश–सरखा
संपत्ति–प्राप्ति, मेळववुं ते
शब्दानुशासन-शब्द शास्त्र
व्यापीरहेला–प्रसरी रहेला
संज्ञासूत्र–नामरुप सूत्र
उत्पाद–उत्पन्न थवुं ते
व्यय–नाश थवो ते
ध्रौव्यमय–अखंड रहेवुं ते
त्रिपदी–त्रण पद
निरंकुश–अंकुश विनानो
दीपक–दीवो
संपर्कथी–स्पर्शथी, अडकवाथी
वाटो–दीवेटो
आश्रित–आशरे रहेला
हस्तींद्रोने–मोटा हाथीओने
निर्मद–मदराहित
घातीकर्मने–अडचण करनारा कर्मने
उपेक्षा–वेतमा, वेदरकारी
उल्लंघन–ओळंगवुं, पार पामीजवुं
लग्न–लीन
उल्लासित–प्रफुल्लित
दोहद–दोहलो
स्पर्शथी–अडकवाथी
विदारण–नाश
मृदु–नरम, शीतळ
चंद्रिका–चांदणी
विहार–विचरवुं
अनुग्रह–महेरबानी, कृपा
पा. ५ मुं.
चिरकाळ–लांबा वखत सुधी
अधिष्टित–मुख्यकरी स्थापि वेसाडेलुं, नक्की करेलुं
मर्त्य–मनुष्य
रुपस्थ–केवळी अवस्थानुं ध्यान
मार्तंड–सूर्य
मरुस्थळमां–मारवाडमां
विश्वोद्धरण- विश्वनो उद्धार करवामां
अपुनर्जन्मा–फरीथी नहि अवतार लेनारा
प्लावित–भिंजाएली
अहर्निश–रात दहाडो
तरंग- लहेर
श्रेय–कल्याण
सद्भूतार्थ–खरा, सत्य
स्तोता–स्तुति करनार
दीर्घ -लांबा
पा. ६ ठुं.
निवारे–रोके
आतप–ताप
शून्य–रहित
चैत्य–मंदीर
उत्कृष्ट–श्रेष्ट
छेदना–कापवुं

आच्छादन--ढांकण
प्रक्षालन--धोवुं ते
आक्षेप--ठपको
विलेपन--चोपडवुं
मंदारनी--कल्पवृक्षनी
भ्रमरपणाने--भमराप-
णाने
दिव्य--सुंदर
समूहो--टोळां
प्रवेश करी--पेसी
नलमां--नळाटीमां
पक्षीना--पंखीना
विलीनपणानी--भी-
नाश पणानो
कथीर--लोढी,

श्वेत--धोळुं
विलक्षण--नवाई जेवुं
अविभक्त--विभाग वि
नानुं: जुदुं नहि तेवुं
शुभ्र--सारुं
निःश्वासनी--नीचाश्वा
सनी
अनुसरेले--पाछळ पा-
छळ जाय छे
स्थिति--हालत
विहार--थंडील जवुं,
आडे फरवुं
नयनचक्षुगोचर--चाम-
डानी आंखे जोई श-
काय तेवा

अभिमुख्यपणे--सन्मु-
ख रहेवापणे
पा. ७ मुं.
उर्मिओ--मोजां, लहेरो
विहारभूमि--विहारक-
रवानी जगा
लय--नाश
मूषक--उंदरो
दुर्भिक्ष--दुकाळ
इतिओ--उपद्रवो जेवा
के अतिवृष्टि आदि
अशिवनो--अकल्याण-
नो, दुःखनो
उच्छेद--नाश
पडह--ढंढेरो

वत्सल--मददगार, उ-
पकारक
मनोरथने--मननी इ-
च्छाओने
उपताप--उपद्रव, सं-
ताप
अवृष्टि--वरसाद नहीं
थवो ते
क्षुद्र--नीचा
उपद्रवो--दुःखो
सत्वर--जल्दीथी
जंगम--चालता (एक
ठेकाणेथी बीजे ठेका-
णे जता)
दुरालोक--नहीं जोइ

शकाय तेवुं
पिंडाकारे--गोळाकारे
साम्राज्यनो--वैभवनो
संचय--एकठुं थवुं
उन्मुलन--मूळ काढवुं
समभिहार--वधारो,
वारंवार
आमोद--प्रसन्नता
उपेक्षा--भूली जवुं
योगात्माने--योगवा-
ळा आत्माने,योगीने
कल्पांत काळ--बधी
वस्तुनो नाश थाय
तेनो काळ

पा. ८ मुं.

इन्द्रध्वज--एकसो आठ धजावाळो ध्वज
मिषथी--बहानाथी
तर्जनी--अंगुठाना जो डेनी आंगळी
सुर असुरो- देव अने दानवो
अधोमुखी--नीचा मों वाळी
अंधकार--अंधारुं
सन्मुख--सामुं
केश- वाळ
रोम--रुंवाटी
अवस्थित--स्थिर छे
तेवा।
तार्किक--तर्कवितर्क करनारा
दिव्य पुष्पो- देवताइ फूलो
विमुखवृत्तिवाळा--उलटा चालनार
प्रतिकूलताने -अवळा पणाने
दौःशील्य-खराबचाल
महात्म्यथी--प्रभावथी
चमत्कार--ताजुबी,अजायबी
कृतार्थ--सफळ
कोटी--क्रोड
लभ्य थएला--पामेला
उदासपणे--वैराग्यपणे
विश्वना--दुनिआना
प्रतिपालन-रक्षण
समृद्धिओए--उत्तम ऋद्धिओवडे
विलक्षण--विचित्र
स्फुटरीते--प्रगटपणे,

पा. ९ मुं.

प्रशंसा--वखाण
निष्कलंक--कलंकविनाना
स्वादथी--चाखवाथी
संतुष्ट--तृप्त
अमृतभोजी--अमृतना भोजन करनारा
जीर्ण--जुनां
लय--लीनपणुं, मग्नपणुं
अधीश--परमेश्वर
सहायकारी--मददगार
प्रार्थना--विनंति
अभ्यंग--तेल चोळवुं
स्निग्ध--चीकणुं
मळापकर्षण--मेल काढी दुर करवो
प्रक्षालन--स्नान, धोवुं
निर्मळ--मेळविनाना
वीरव्रतवाळा--बहादुर
कुटील--वांका
अत्यंत--घणा
अभव--भवरहित
महेश--शीव,महादेव
अगद--रोगरहित
अराजस--रजोगुण विना
ब्रह्मरुप--ब्रह्मनाजेवा
संकल्प--विचार
द्रव्यादि--पैसाविगेरे
संग--सोबत
ममताए--मारापणावडे, रागवडे

वर्जित--रहित
चिन्ह--लक्षण
किंकर--चाकर
गोपवेला--संताडेला
निधि--भंडार
प्रमाद--बेदरकारी

पा. १० मुं

सनाथ--धणीवाळुं
फण--फणीयो
परमाणु--रजकण
दीर्घकाळ सुधी--घणाकाळ सुधी
चरणरज--पगनी रेती
पादपीठमां--पग मूकवाना बाजोठ उपर
आसक्त--रागी
हर्षाश्रुनी--हरखनां आंसुनी
रोमांचो--रुंवाडाना छेडाओ
मिथ्यादर्शन--खराने खोटुं माननार
वासनाने--इच्छाने
विलास--सुख
उपासना--सेवा
देवाधिदेव--देवना पण देव
कुंठ--अटकीपडेलुं
उत्कंठा--इच्छा
स्वीकार--कबुल, मंजुर
चेष्टा--हलावबुं चलावबुं
संहार--नाश
शिथिलपणाथी--ढीलापणाथी
शल्यने--सालने
उच्छृंखल--उछांछळो
सम्यक्--बराबर
प्रतिपादन--नक्की करीने
प्रपंच--युक्ति
आरंभीने--शरु करीने
सात्म्यताए--आत्मसत्ताने
प्राप्त थाय--मेळवे
विराग--वैराग्य
अदृष्ट--नहि देखाय तेवा
अलौकिक--असाधारण
अपकार--अनिष्ट, अवगुण
हिंसक--हिंसा करनारा, मारनारा
आश्रित--शरणे रहेला
अनुसरी--पाछळ चाली वर्तवुं
समाधिमां--सुखमां

पा. ११ मुं.

ध्याता--ध्यान करनार
ध्यान--चित्तनी एकाग्रता
ध्येय--ध्यान करवा योग्य पदार्थ
त्रिपुटी--ए त्रण वस्तु
एकात्माने--एक पणाने
श्रद्धा--विश्वास
दृष्टिओ--आंखो, नेत्रो, नजर
जिननाथ--तीर्थंकर
स्नात्र--न्हवरावबुं
अर्चन--पूजा

चिरकाळना—घणा वखतना
प्रासाद—महेल
जगन्नाथ—जगतना धणी
सांप्रतकाळे—हमणां
पात्र—लायक
मुक्तिना—मोक्षना
निबंधन—कारण
स्वयंभू रमण समुद्र- नाः—मोटामां मोटा समूद्रना
मंडप—मांडवो
स्तंभ—थांभलो
उद्योत—प्रकाश

विश्वनी—जगतनी
द्वारने—बारणाने
देशना—उपदेश
भुवनेश्वर—त्रणभुवनना धणी
दर्पण—आरिसो, चाटलु
प्रतिबिंब—पडछायो
मूर्त्ति—बिंब
गुंजारवथी—गणगणता अवाजथी
रक्त—रागी, लाल
मालव कौशीकीः—मालवकोशी, रागवाळो
ग्राम—रागनो भेद

दिव्य ध्वनी—देवताइ अवाज
मृगलाओ—हरणांओ
ग्रीवा—डोक
पंक्ति—लाइन, हार, श्रेणी
सिंहासन—बेसवानुं आसन
बिराजो—बेशीने

पा. १२ मुं

कांतिओथी—तेजथी
व्याप्त—व्यापी रहेल
ज्योत्स्ना—चंद्रप्रकाश
ध्वनी—अवाज
दुंदुभि—देवताइ वा

जिंत्र
आप्त—हितकारी
क्रम—पगलां
प्रौढ—घणां उंचा
चमत्कारी—आश्चर्यकारी
मरुदेशमां—मारवाडमां
संचार—चालवुं, मुसाफरी
प्रपा—पाणी पावानी जग्या
तुल्य—बराबर, सरखो
अनुपम—उपमा रहित
अश्रांत पणे—थाक्या वगर

अनिमेषता—आंखनुं नहि मिंचावुं
सिंचन—छांटवुं
हृद्धिपमाडोछो—मोटु करो छो
सिद्ध थएलुं—नक्की थएलुं
पद्म—कमळ
युक्त—सहित
गृह—घर
दुस्तर—दुःखे तरवा योग्य
जानुप्रमाण—ढींचण प्रमाण
कल्पांतर—नवग्रैवेय

अने पांच अनुत्तर विमान
निवास—वसवुं, रहेवुं
परिसहो—संकटो
मेनाने—कष्टने
हणना—नाश करता
उपसर्गोने—कोइए करेला दुःखोने
विदारता—चूरता
शमना—शांति
विद्वत्ता—विद्वानपणुं
अद्वेषी—द्वेष रहित
दुर्लभ—दुःखे मेळवाय एवुं
महिमा—मोटाइ

जिगिषाः—जीतवानी इच्छा

पा. १३ मुं.

प्रभुपणुं छे—स्वामीपणुं छे.
सुकृत—पुन्य
संपादनमां—मेळववामां
गोचरः—गम्य
मिथ्या—फोगट
सभासदो—सभ्यजनो
प्रमाणरूप—साक्षीरूप
अविज्ञेय—नहि जाणवा लायक
आग्रह—खेंच

आदित्य—सूर्य
कपिए—वांदराए
चंद्रकान्तमणी—एक जातनुं मणी
झरेछे—द्रवेछे
अरुणोदय—सूर्योदय थता पहेलानीलालाश
संपर्कथी—स्पर्शथी
आकृतिवाळा—रूपवाळा
प्रतिकुळ—विरुद्ध
वर्त्तनार—चालनार
प्रमाद—आळस
समय—वखत
नियाणु—निदान

निषिद्धछे—वारेलुंछे
भक्ति—पूजा
निरंतर—हम्मेशां
सर्वभुवन कोषरुप—त्रणे भूवनमा कोठार रुप

पा. १४ मुं

तीर्थपरावर्त्तनथी—तीर्थना बदलावाथी
विश्व—दुनियां
परावृत्त—बदलायेलुं
निर्वाणरुप—मोक्षरुप
वैताढ्यगीरिनुं—वैताढ्य पर्वतनुं
द्वार—बारणुं

अत्युक्तिवाळा—अतिशयोक्तिवाळा
प्रवृत्त—तैयार
हास्यना—मश्करीना
स्थानरुप—जग्या रुप
व्यापक—पसरी जाय तेवी
व्यापी—पसरी
पाशने—फांसाने
अभ्युदय—चढती
अपूर्व—नवाइ जेवा
शेफालीका—एक जातनुं झाड
हरी लयोछो—लइल्योछो

उन्मत्त=मदांध
गजेंद्र--हाथी
मुक्ताहारादि=मोती-
नाहार विगेरे
याथ=वहारना
आभूपण=घरेणां

पा. १५ मुं

विजय=फतेह
शासन=आज्ञा, शास्त्र
अधुना=हमणां
दिनपरादिन=दररोज
अधिका अधिक--वध-
ता वधता
कल्पवृक्ष=वांछितप ळ
आपनारुं वृ.क्ष

दारिद्र=गरीवाइ
वृष्टिकारक-वरसावनार
तंगाश=ओछाश
पूर्णचंद्र=पुनमनो चं-
द्रमा
कुवोध=मिथ्यात्व
अनुमोदना=प्रशंसा
यावज्जीवीत=ज्यां सु
धी जीवुं त्यां सुधी
जगदीश-जगतनाइश्वर
द्रहरुप=झरणारुप
चरणना=पगना
भ्रांतिमां=वहेमयां
निःशंकपणे=निःसंदे-
पणे, खचीत

पा. १६ मुं

समूह=जथ्थो
अतिशायी=अतिशय
वाळा
स्पृहा=इच्छा
लीन=मग्न
वासगृहमां=रहेवाना
स्थानकमां
कुटिलताने--वांकाशने
कुटिल--वांका
गोप--गोवाळ, रक्षक
निःसंग -सोवत वि-
नाना, निःस्नेहि
ममता--हेत, राग, प्रेम
द्वेष--अरुचीभाव

छद्मस्थपणे-केवळज्ञा-
न रहित अवस्थाए
निर्भय -भय विना
अदीप्त--अप्रकाशीत
भुजाओ--हाथ
स्थापन कर्यां--मूक्यां
संपादन--मेळ, प्राप्ति
अमंद--अखंड

पा. १७ मुं.

वहन--धारण करवुं,
लेनारो
पराभव--हारवुं
लोचन--आंखो
दिग्मूढ--दिशा शून्य
प्रवर्त्तेछे--चालेछे

स्वाभाविक--प्रकृतिए
प्रसर्युं--फेलायुं
समर्थ--वळवान
घातीकर्म--केवळज्ञान
रोकनारा कर्म
उपदेशथी--वोधथी,
व्याख्यानथी
आराधन -पूजा, सेवा
तृप्ति--संतोप
कुतीर्थकरुपी--अन्यती-
र्थीरुपी
व्याघ्रथी--वाघथी
त्रास--भय
वृपभ--वळद
स्वेच्छाथी--पोतानी

मरजी मुजब
मंदीरमां—घरमां
पा. १८ मुं.
शिर—मस्तक
प्रसन्नता=खुशी आनंद
ध्वनि=वगनी
सौधर्म=पहेलुं देवलोक
परंपरा=[illegible]
आत्मारामी=आत्मामां रमण करनार
[illegible]—स्थापना
कुरूप कष्ट=माठां आवरणकर

ज्योतिषियोना पति=चंद्र
स्फाटिक=एकजातनुं रत्न
संतापने=दुःखने
चक्र=दांतावाळुं गोळ पइडुं
त्रिशूळ=त्रणफळवाळुं हथीआर
वज्र=इंद्रनुं हथीआर
अस्रो=नवाइ जेवा हथीआरो
नेत्राथी=भरणीथी
लेपनथी=चोपडवाथी

कदली=केळ
वाटा=वाडा
उद्यानोथी=बगीचाओथी
परिताप=अकळामण पीडा
पा. १९ मुं
क्वाथो=उकाळा
प्रयोगोथी=उपायोथी
प्रलयने=नाशने
असाध्य=न बनी शके एवुं
साध्य=बनी शके तेवुं
दुर्दिन=वादळाथी घेराएला दिवस

दुर्वार=दुःखे करी निवारण करी शकाय तेवुं
प्रचंड=आकरो
आवर्त्त=भमरी
उग्र=आकरा
वडवानळ=अग्नि
आर्त्त=माठुं ध्यान
रौद्रध्यान=माठुंध्यान
वेत्रवल्ली=नेतरनी वेल
स्खलना=भूल
नक्रोना=मगरमच्छोना
दारुण—भयंकर
उद्धार—बचाव
पुष्प—फुल
वैभव—साहेबी

महोत्सव—ओच्छव
कोप—गुस्सो
जटाधारी—जटावाळा
निशाचरोथी—चोरोथी
सर्वस्वने—बधी वस्तुओने
चार्वाकरुपी—नास्तीक मत
तस्करोथी—चोरोथी
निपुणा—डाह्या
मंडली—टोळी
कोलाचार्य—मोटो शियाळ
नाहरोथी—वाघोथी
पालंडो—धूतारा

लुप्त-छोप
सद्भूत--खरा
समय--वखत

पा. २० मुं.

उल्लंघन करी--ओळंघी
सेतुने--पूलने
निश्रेणी--नीसरणी
लोकाग्र--मोक्ष
ग्रीष्मऋतु-उनाळो
वटेमार्गु--मुसाफर
सांसारिक--संसार संबंधी
दुष्कर्मथी--खराब कामथी
अभाव--गेरहाजरी
उच्छ्वास--श्वास काढवो ते
अवश्य--जरुर
गंडूष--घुंटडो
मग्न--आनंदी
स्वस्थ--शांत
गोशीर्षचंदन-गोरुचंदन
अंगराग--शरीर उपर विलेपन
देवदूष्य--देवताए आपेला
शंका--वहेम
पुष्पमाळाफूलनीमाळा
भुजलताओ--हाथरुपी वलीओ

पा. २१ मुं.

चारु--सुंदर
नृत्यादिक चेष्टा-नाच विगेरे कृत्य
ऐरावतःइंद्रनो हाथी
स्कंधः-खभो
नेपथ्य--वेश
अधिकार=सत्ता,
अधीश्वर--राजा
अमृतांजीवनथी-अमृतना आंजवा वडे
अज्ञ--अजाण
निःस्पृहाथी--इच्छारहितपणुं
उपासना--सेवा
आश्चर्य--नवाइ
सरिताना-नदीना
प्रवाह-फांटा, वहेळा
द्वीप-बेट
मध्यस्थपणामां-समद्रष्टिपणामां
उत्सुक-तत्पर
अजीत नजीतायतेवा
परम-उत्कृष्ट
दानव--राक्षस
महत्ता--मोटाइ

पा. २२ मुं

भरतार्द्ध--अर्द्धभरत
पूर्ण-पूरेपूरो
अनंत--असंख्य
अचळ=नाश न पामे तेवुं
निर्गमन=विती जवुं
बाध करनारा=हरकत करनारा
प्लावित=भिनोथएलो
तत्काळ=तरतज
निःस्पंद=फरकवुं
विरुद्धताथी=उलटापणाथी
समृद्धिवाळा--आत्मिक सुखवाळा
पूर्वसंचित--पूर्वजन्ममां एकठां करेलां
ऋद्धिवाळा--दोलत-

नाळा
महामलवान्—महा बळवान

पा. २३ मुं
परिपूर्ण—संपूर्ण
उपार्जन—मेळववुं
निःस्वार्थ—स्वार्थवीना
परोपकारीपणुं—पारकानुं भलुं करवापणुं
भास्कर—सूर्य
निर्गमन—नीकळवुं
जळाशयोनां—पाणीने रहेवानां ठेकाणां
पद्म—कमळ
द्रव्य—धन

क्षुद्र—नाना
मलयाचळनो—मलयगिरि
ऐश्वर्य—ठकुराइ

पा. २४ मुं
विनयी—नतिमावी
अलंकृत—शोभायमान
प्रासादनी—जिनमंदिर
निःसंगपणाथी—असंगपणाथी
निर्दोष—स्वच्छ; निर्मळ
सुवर्णना—सोनाना
ध्याता—ध्यानकरनारा
विनराग—रागरहित
अकिंचन—परिग्रह रहित

समृद्धिने—दोलत
अर्हन—अरिहंत
विभु—प्रभु
अचिंत्य—चींतवी न शकाय तेवुं.
प्रवृत्ति—प्रवेश
मनोहर—मनने हरण करे एवुं
तस्करो—चोरो
सत्वर—जलदीथी
श्रांत थइ गएला—थाकेला
तृष्णातुरी—तरस्या

पा. २५ मुं
दीपकने—दीवाने
द्विमथी—बरफथी
पीडित—पीडा पामेलो
विधुर—वियोगी
वात्सल्यभाव—परोपकार बुद्धि
ज्योत्स्ना—चंद्रनुं तेज
आश्वासन—दिलासो
निष्कारण—वगरकारणे
अंधकारमय—अंधारावाळु
प्रकाशमय—तेजवाळुं

सीमाडाना—सरहदना
असंभवित—न बने एवा
निधि—भंडार
अनुग्रहीत—महेरबानी पामेलो
साक्षात—नजरोनजर

पा. २६ मुं.
कुकर्मो—माठां काम
प्रसव्यांज—उत्पन्न कर्यांज
दुर्ध्यान—माठुं ध्यान
तंतुथी—तांतणाथी (कर्म बंधनरूप)
दुष्ट—खराब

विपत्तिने—दुःखने
उच्छेद—नाश
स्तोत्रथी—स्तुतिथी, स्तवनथी

पा. २७ मुं.

लघु लघु—नाना नाना, हळवा हळवा
अविरत—व्रत विनाना
निरर्थक—फोगट
निर्माल्य—उतरेलां(फूलादि)
व्याप्त थयेला—प्रसरेला
च्यवनकाळे—चववा वखते
भवांतरमां—बीजा भवोमां
वत्सने—वच्चांने
प्रसव—जन्म
अन्य—बीजा
त्याग—छोडवुं
रक्षामंत्रथी—रक्षण करनार मंत्रथी
संवर्मित—सहीसलामत
पिशाच—व्यंतर
विद्यमान—हयात
साश्वत—जायु, हम्मेश रहेनार
वहिरंग—वहारना
विरामी—शांत पामी
स्मृति—यादी
वांछित—इच्छित
मनोरथने—इच्छितवस्तु
कामधेनु—कामदूधा गाय

पा. २८ मुं.

प्रहार—घा, मार
कुमतने—कुबुद्धि, माठी बुद्धि
प्रवर्त्तावनार—फेलावनार
तिरस्कार—धिक्कार
अविकारी—विकार रहित
अतिशय—घणी
निवृत्त करनार—पाछा वळनार
प्रतिष्ठा—स्थापना
परमेष्ठि—उत्कृष्ट ऐश्वर्यवान
अनुसरनारी—मळी जनारी
उपासना—सेवा, भक्ति
नागपास—नागनावंध
दृढ—सखत, कठण
कर्मपास—कर्मना फांसा
शनैः शनैः—धीमे धीमे
दृष्टिगोचर—नजर आगळ
कुक्षिरुपी—कुखरुपी
शुक्तिमा—सीपनुं जोड
मुक्तामणी—मोती

पा. २९ मुं.

निधानरुप—भंडाररुप
समस्त—बधा
चरम—छेल्ला
अद्वितीय—जोडा विनाना
आश्रय—रक्षण
विध्वंस—नाश
मुक्ताफळ—मोती
त्राता—तारनार
निमित्त—कारण

भर्ता–नाथ, धणी	स्खलित–भूल्या	विमुक्त–विशेष मुका-एला	विधाता–ज्ञानादि उ-त्पन्न करनार	निवृत्त–दूर
बोधि–समकित	अस्खलित–अणरोकाएलुं	मोक्षगामी-मोक्षेजनारा	आदिकार–शरुआत करनार	जिन–रागद्वेष जित-नार
निरंतर–हमेशां	पा. ३० मुं.	निर्यामक–वहाण च-लावनार, नाखुदा	प्रदीप–दीवो	जापक–रागादि शत्रु-ओथी जीतावनार
मानसने–मनने	प्रियंगु–रायण	निवृत्त–पाछु हठवुं	प्रद्योत–प्रकाश	पात्र–स्थानक
चरितार्थ–सफळ	प्रियना–वहालाना	विवेकदृष्टि-समजशक्ति	अधीश–प्रभु	ज्येष्ठ–वडील; मोटा
केवळ–फक्त [ळने	दुस्तर–दुःखे करी त-री शकाय एवा	चतुष्टय–चार चीजो	मदगंधी–मदझरता	विश्वने–दुनियांने
पदयुगलने–पादयु-	सेतु–पूल	दुरात्मा–दुष्टात्मा	गजेन्द्ररूप–हाथीजेवा	अनुत्तर–श्रेष्ठ
गोठण–घूंटण	कोष–भंडार	आपत्ति–दुःख	दायक–आपनार	उत्तर–वधता
ललनाओना-स्त्रीओना	विकसित–खीलेलुं	निवारनार–रोकनार	देशक–देखाडनार	प्रक्षालन करनार-धो-नार
ललित–मनोहर	कांतिवाळा–रूपवाळा	पा. ३१ मुं.	सारथी–रथ हांकनार	योगाचार्य–योगना आचार्य
अभंग–न भंगाय तेवुं	स्वच्छ–चोख्खा	स्वयंबुद्ध–पोते पोता-नी मेळे बोध पामेला	नेता–दोरनार	अग्र–मुख्य
निषेध–नकार	पवित्र–पावन		छद्मस्थपणाने-आ-वरणपणाने	
पश्चात्ताप पस्तावो	श्रेष्ठ–उत्तम			
दुराग्रही–खोटो आ-ग्रह करनारा				

वाचस्पति–ब्रहस्पति
उदित–उदय पामेला
ॐभूर्भुवःस्वः–स्वर्ग, मृत्युने पाताळने पूजवा योग्य एवुं पंच परमेष्टि पद
आप्त–हितकारी
पारंगत–पारपामेला
दक्षिणीय-दाक्षिण्य गुणवाळा [हित
निर्विकार–विकार र
वज्रऋषभनाराच–बे पासां मर्कट बंध उपर पाटो ते उपर खीली वाळा

ऐश्वर्य–ठकुराइ
परमेष्ठि–मोटा इश्वर
महेश–मोटा प्रभु
ज्योतिस्तत्त्वरुप–प्रकाशना तत्त्वरुप
अमृतांजनरुप–अमृतना अंजन समान

पा. ३२ मुं.

विरक्त–विरागी
विपक्षी–सामा पक्षवाळा
अंगीकार करीए–कबुल करीए
उपासना–ध्यान; स्मरण

त्राता–रक्षक
उत्पत्ति–उपजवुं ते
स्थिति–हयाती
लय–विनाश
वंध्या–वांझणी
उदरपूर्त्ति–पेट भरवुं
निन्हव–निंदक
पुष्पवत् फूल जेवा
निवारण–दूर करवुं
उच्छेदन–निर्मुलन
मध्यस्थ–तटस्थ
वृथा–फोकट
स्थीर–हाले चाले नहीं तेवुं.

अद्वितिय–जेना जेवो बीजो कोइ नहि तेवो
सर्वोतकर्षे–सर्वथा उंची स्थितिए; चढतीए
प्रफुल्लित–खीलेला

पा. ३३ मुं.

कुक्षीरुप–कुखरुप
गर्व–अहंकार
विलास–रमत
कमळाकर–सरोवर
आस्तिक्य–श्रद्धाळु
देदीप्यमान-शोभावंत
अग्रेसर–आगळ जनार
अमर–देवता

समुह–टोळुं
चरणार्विंद–चरण कमळ
मत्सर -अदेखाइ
जहाज–वहाण
वधु–वहु
अजर–जरा रहित
अचळ–स्थिर
अडर–बीक रहित
अपर–परभाव रहित
युगादि–युगनी आदिना करनार
त्रैलोक्य–त्रण लोकना
जगत्रयाधार–त्रण जगतने आधार

२१५

महिमानिधान—महिमाना भंडार	निरुपाधी—उपाधी रहित	अनाशिव—अकल्याण रहित	जरा—घडपण	त्वरावाळां—उतावळां
जाग्रत—जागनार	निर्विकारी—विकार रहित	स्वभावरमणी—स्वभावमां रमण करनारा	लेश—जरा	स्वादिष्ट—मीठां
विधान—क्रिया; विधि	पा. ३४ मुं	मुकुटमुद्रा—मुकुटनी आकृति	प्रमाद—आळस	परमाधार्मिको—नारकीना जीवोने दुःख देनारा
समुद्र—दर्यां [समुद्र	अगत्तायी—जोडीया रहित	प्रातिहार्यनी—शोभानी	उल्लंघन—ओळंगवुं	शीत—टाढ
भवसिंधु—संसार	अलेसी—लेश्या रहित	संपदा—वैभव	मरुदेश—मारवाड	वात—वायु
शिवपुरमार्ग—मोक्ष नगरना मार्गी	अनवगाही—अवगाहना रहित	अपायापगमातिशय—कष्टने दूर करनार अतिशय	आवर्त्त—फरी फरीने आववुं	आतप—ताप
शुद्धानंदमयी—अमृत जेवा संयमधारी	अव्यापी—परमां न व्यापे एवा	गंधर्व—देवताइ गवैया	अटन—भ्रमण, भमवुं	वध—मारवुं, कापवुं
निर्ग्रंथ—परिग्रह रहित	अस्खलीन—स्खलना रहित, भूल रहित	पा. ३५ मुं.	शठ—लुच्चा	बंधन—बांधवुं
निरालंबी—आलंबन विनाना	अविरोध—अंटस रहित	आधि—मननी पीडा	दारुण—भयंकर	क्षुधा—भूख
निराशी—कोइपण प्रकारनी आशा रहित		व्याधि—शरीरनी पीडा	संयोग—मेळाप	विविध—जुदा जुदा
			वियोग—जुदा पडवुं	आलिंगित—परस्पर मळेला
			परस्पर—अन्योअन्य	अमर्ष—क्रोध, रीस
			स्पर्धा—इर्षा, सरसाइ	
			यौवन—जुवानी	

निवास–रहेठाण
कुंभि–नरकावास
आकर्षण–खेंचाण
प्रसव–जन्म

पा. ३६ मुं.

प्रसववेदना–जन्मती वखतनुं दुःख
शल्य–साल
अग्रदूती–आगळ आवी खबर आपनार
पराधीनपणाने–परतंत्रताने
भ्रमण–भटकवुं
अद्वैत–जेना जेवुं बीजुं कोइ नहि

अव्यय–अविनाशी
ज्योति–तेज
यथार्थ–जेवुं जोइए तेवुं
अवबोध–ज्ञान
अन्वय–संबंध
अवग्रहादिक–अवग्रह विगेरे
अनिंद्रिय–इंद्रियो सिवाय
प्रकीर्णकसूत्रो-प्रकरणो
स्यात्–स्याद्वाद, अपेक्षा पूर्वक
लांछित–लक्षणवाळुं
क्षय–नाश

उपशम–शांती
आश्रि–ना, ने लगता
विशुद्धि–विशेषे शुद्धपणुं
अप्रतिपात–आवेलो पाछो न जाय तेवो गुण
विश्वलोचन–दुनीआने जोवाने चक्षु
शास्त्रोक्त–शास्त्रमां कहेला
रुची–जाणवानी इच्छा
श्रद्धा–विश्वास
आवर्त्तमां–चक्रमां
कोटानुंकोटी–कोडाकोडी
सागरोपम–दशकोडाकोडी पल्योपम
न्यायवत्–द्रष्टांत माफक

पा. ३७ मुं.

यथाप्रवृत्तिकरण–आयुकर्म वर्जीने बाकीना साते कर्मनी एकपल्योपमना असंख्यातमां भागे न्युन एक कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति राखे एवो जे वैराग्यरुप उदासि परिणामते

ग्रंथीदेशने–रागद्वेषनी गांठनी समीपे
काष्टनी–लाकडानी
दुरुच्छेद्य–दुःखे करीने छेदी शकाय तेवी
द्रढ=सखत
वायुप्रेरित=पवनथी हंकाराएलुं
सरिता=नदी
विरामपामे=अटके
भद्र=कल्याण
अपूर्वकरण=एक कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिमांथी एक मूहुर्त्त अने अ-

नादि मिथ्यात्व जे
अनंतानुं बंधीयानी
चोकडी खपाववाने
अज्ञानने छांडवुं अ-
ने ज्ञानने आदरवुं
ए वांछारूप अपूर्व
परिणाम ते
पाग=रस्ते जनारा
अनिवृत्तिकरण=मु-
हूर्तरूप स्थिति स-
पार्वति निर्मळ शुद्ध
समकित पामे मि-
थ्यात्वनो उदय म-
टे नेथारे नीर उप-
शम समकित पामे

एनो ने परिणाम ते
अंतरकरण= अपूर्व
करण अने अनिवृत्ति
करण वचेनो काळ
विरह=जुज, कोइक
अंतर्मुहूर्त=बेघडीन्युन
आत्मचिंतनथी=आपा-
रथी
आधे गमथी=उपदे-
शथी
भेदपामेली=छूटेली,
भेदाएली
देहीने =शरीरीने
उत्कर्षथी=उत्कृष्टथी,
वधारेमां वधारे

जघन्यथी=ओछामां
ओछी
क्षपक=क्षयकरवाना
अंशने=भागने
क्षीण=नाश, ओछी
पा. ३८ मुं.
असारता=साररहित
पणुं
कारागृह=बंधीखानुं
आर्द्रता=कोमळता
निवारण=दूरकरवुं
आर्हत्–अरिहंतना
कहेला
प्रतिपत्ति=विश्वास
पराभव=नाश

सावद्य=पापसहित
अहिंसा=दया
अचौर्य–चोरी न क-
रवी ते
अपरिग्रह–परिग्रह
रहितपणुं
प्रीय–व्हालुं
सुनृत–सत्य
पा. ३९ मुं
अछती–हयातीमांनहि
विप्लव–दोडादोड
अनुरक्त–रागी
पंगु–पांगळा
कुणि–ठोंठीआ
कुणित्व–ठुंठापणुं

मन्दनपणुं–गुणनाश
काहलपणुं–आनारी
पणुं
दुर्भाग्य–कमनशीब
कासीदुं–खेप
दरिद्रता–गरीबाइ
निर्णयकरेली–नक्की
करेली
भोग–एकवार भोग-
वाय ते
उपभोग–वारंवार
भोगवाय ते
कुव्यापार–खराब
व्यापार
चतुर्विध–चार प्रका-

रना
पात्र--पातरां
अतिथि संविभाग--
मुनिने दान
उपासना--सेवा
पा. ४० मुं
मुग्ध--भोळा
वैडूर्य--एक जातनुं
मणी
आज्ञा--हुकम एटले
वितरागनी आज्ञा
साची माने
अपाय--दुपण एटले
जीवमां अशुद्धपणे
कर्मयोगे संसारीअ-
वस्थामां अनेक दु-
पण छे एम विचा-
रवुं ते
विपाक--अनंतगुणम-
यी जीव छे तो पण
कर्मवशे दुःखी छे
एवो कर्मनो विपाक
चिंतववो ते
संस्थान--चौदराज
लोकनुं स्वरूप विचा-
रवुं ते
आप्त--ज्ञानी, पंडित
प्रतिपादन--जाहेर
संवाद--वादविवाद
आरब्ध--आरंभेलुं,
शरुकरेलुं, जे कर्मनुं
तत्काळ फळ मळे ते
प्रमाण--कबुल
पूर्वापर--आगळ पा-
छळ
विरोध--उलटुं आ-
ववुं ते
बलिष्ट--बळवान
शासनोथी--आज्ञा-
ओथी
अप्रतिक्षिप्त=नहीं ह-
ठावाएलुं
गणिपिटक--द्वादशां-
गी रुप पेटी
नित्यानित्य--नित्य
अने अनित्य
स्थिर--कायम
प्रतिती--विश्वास
आगामी--आवता,
भविष्यना
विघ्नो--अडचणो
बोधी--समकित
चेष्टाओथी--क्रिया-
ओथी
पा. ४१ मुं
प्रज्वालित--सळगावेलो
स्वाधिन--पोतानेकबजे
परिभ्रमण--भमवुं
सामग्री--तैयारी
विचित्ररुपे--नवनवा
आकारमां
खाद्य--खावायोग्य
रौद्रपणुं--कठोरपरि-
णामनुं चिंतवन
कुमनुष्यपणामां--ख-
राब माणसपणामां
पा. ४२ मुं
प्रतिहार--पोलीओ,
दरवान
निरोध--रोकामण
लिप्त--खरडेली
आस्वाद--चाखवुं
प्राज्ञ-विशेष जाणनार
मदिरापान--दारूपीवो
कृत्याकृत्य--करवा

योग्य नहि करवा
योग्य
प्रतिबंध-अडचण,
हरकत
विचित्रता=नवाइ
चित्रकार=चितारो
वाचिन थएली=रो-
काएली, दोपीत थ-
एली
स्थिति=रहेवापणुं
उत्पत्ति=पेदा थवुं
लय=नाश पामवुं
आकृती=स्वरुप, आ-
कार
कटी=केड

वेत्रासन-नेतरनुं आ-
सन
झाल्लरनी=पीत्तळना
घंट जेवी
मृदंग=पखाज
व्याप्त-भराएलुं
घनांभोधि-घनोदधि
अधोलोक-पाताळ
वासी
तिर्यग्लोक=तिर्छा-
लोकमां रहेनार
उर्ध्वलोक=स्वर्ग
विभाग-भाग
कनक प्रदेश=गायना
आंचळनी माफक रे-

देला आठरुचकप्रदेश
अपेक्षाथी-धारणाथी
स्तनने-आंचळने
पा. ४३ मुं
न्यून-ओछा
निवासो-रहेठाण
घनाब्धि-घनोदधि
प्रांत भाग=छेडानो
भाग
वलयाकारे-गोळाकारे
परिधि=घेरावो
मान=प्रमाण
पा. ४४ मुं
यातना=अत्यंत दुःख
पंक्ति=हार, ओळ

चिन्हवाळा=नीशानी
वाळा
घट=घडो
लांछनवाळा=चिन्ह-
वाळा
वटवृक्षनां-वडझाडना
खट्वांग=मोघरी
नागवृक्ष=एकजातनुं
झाड
तुंबवृक्ष=एकजातनुं
झाड
पा. ४५ मुं
तळ=सपाटी
ध्रुव=स्थीर रहेनारो
तारो

निश्चळ-हाले चाले
नहीं एवो
परिवार=समुदाय,स-
मुह
पा. ४६ मुं.
वृषभो-बळदो
अश्वो-घोडा
आभियोगिक-सेवक
अंतरित-अंतरवाळा
परिवारित-घेराएला
अवधि-हद, मर्यादा
कांडथी-भागथी
विभक्त-भाग पडेला
पा. ४७ मुं.
सुवर्ण-सोनुं

शिलामय—पत्थरनो
चुलिका—शिखर
मेखला—तळेटी
द्रह—वहेळोयुं
विकस्वर—खीलेलां

पा. ४८ मुं.

पर्षदा—सभा
आत्मरक्षको—देह रक्षण करनारा
परवरेली—घेराएली
स्पर्श कर्या—अडक्या
विष्कंभ—पहोळाइ
तट—किनारो, कांठो

पा. ४९ मुं.

रमणिक—शोभीतुं
संचार—जवा आववा
श्रेणीओ—हारो
राष्ट्र—देश
कूट—शिखर
वज्रमय—वज्रना
जगति—घेरावा आगळ रहेलो ओटलो

पा. ५० मुं.

क्रीडास्थान—रमवानां ठेकाणां
वेदीका—चोतरो

पा. ५१ मुं.

रौप्य—रुपानुं
प्रासादो—महेलो, देवळो

पा. ५२ मुं.

बादराग्नि—देखाय तेवो अग्नि
संहरण—हरण करवुं
संज्ञाभेदे—नामना भेदथी
शील्प—हुन्नर, कळा

पा. ५३ मुं.

नापित—हजाम

पा. ५४ मुं.

विदिशाओ—खुणा
शुर्कालकर्ण—द्विपनुं नाम
आदर्शमुख—आरिसाना जेवा मुखवाळा अंतरद्विपनुं नाम
मेषमुख—घेटाना जेवा मुखवाळा
हयमुख—घोडाना जेवा मुखवाळा

पा. ५५ मुं.

वळय विष्कंभ—गोळ आकारनो व्यास
अंजन—मेंश
देवच्छंदक—आराम लेवानो मंडप
पर्यंकआसने—पलांठी वाळीने
धूपघटी—धूपधाणुं
वालुका—रेती
देवायतन—देवळ, देरुं
स्तूप—थूभ, चोतरो
दिव्य—देवताइ
वापिकाओ—वावो

पा. ५६ मुं.

उद्यानो—बगीचाओ
झल्लरी—झालर
विभूषित—शणगारेला
अष्टान्हिकउत्सव—अठ्ठाइ ओच्छव

पा. ५७ मुं.

कर्मभूमि—असि, मसि ने कसीना व्यवहारवाळा क्षेत्र
मिश्रित—मळेलुं

११८

[illegible]-[illegible]नो गण
संकीर्ण-भरेला
[illegible]--काचना वि-
नेरे
जघन्य-ओछामांओछुं
उत्कर्षथी-वधारेमां
वधारे
न्यून--ओछुं, कम
[illegible]--भागे

पा. ५८ मुं.

प्रांतभागमां-छेडा भा-
गमां
[illegible]
पुरोहित-[illegible]; गुरु
[illegible]

प्रकीर्ण-देवनाप्रजावर्ग
अभियोग्य-सेवक स-
रखा देव

पा. ५९ मुं.

भाग--पहेलां
द्विचरिम--छेल्ला बे
स्थिति--आयुष्य
प्रभाव--महिमा; परा-
क्रम
विशुद्धि--निर्मळता
पूर्णरूपथी--पेदेलाथी,
आगलाथी
उत्तर उत्तर--पछीना:
पाछळना
श्वासोच्छ्वास श्वासोश्वास

पृथक्--वेथी नव
सद्वेदना--सातावेदनी
असद्वेदना--अशाता
वेदनी
गमनागमन--जवुं आ
ववुं
चरक--खाखी बावाओ
परिव्राजको- संन्या-
सीओ
सद्व्रतवाळा--सारां
व्रत पाळनार

पा. ६० मुं.

संक्लिष्ट--गाढा
अनुराग--स्नेह; राग
प्रविचार-ऊंडो विचार

समग्र--समस्त
त्रसनाडी--चौदराज-
लोकमां जेटला भा-
गमां त्रसजीवो रहेला
छे तेटलो जगा
पर्यंते--छेडे
प्रतिष्ठित--प्रतिष्ठा पा-
मेलो; मरुयात
स्वयंसिद्ध--पोतानी
मेळे, नक्की थएलो
निराधार--आधार वि-
नानो
स्वसंवेद्य--पोतेज जा-
णी शके एवुं
अतींद्रिय--इंद्रिओथी

समजाय नहीं तेवुं
सौभाग्ययुक्त--भाग्य-
शाळी
शरदऋतु--आसो अ-
ने कारतक मास
विशिष्ट--वधारे; अति-
शय
कामानिरूप--कामनी
पीडारूप
ज्वर--ताव

पा. ६१ मुं

अवसाने--छेडे, अंते
अखंडित--परिपूर्ण
विरामपामी--पाछा ह-
ठी, विरक्त थइ

आपत्ति–दुःख
सपडावे–फसावे
तंत्र–देवप्रयोग
चिकित्सा–रोगनी परीक्षा
वयमां–उम्मरमां
त्वरा–झडप
ग्रास–कोळीओ
विलय–नाश
संहार–नाश
दाक्षिण्यता–पक्षपात
दावानळ–अग्नि
निरपाय–रोग रहित

पा. ६२ मुं.

वंचना करवी–ठगवुं
शीथील–नरम, नवळा
कामीनीओ–स्त्रीओ
न्यासकरो–मुको
अपकार–काइने नुकशान करवुं
समागम–मेळाप
सचराचर–जड अने चेतन
उपेंद्रादि–इंद्रना हाथ नीचेना देवो विगेरे
शरणेच्छु–शरणने इच्छनारा
विकाळ–भयंकर

पा. ६३ मुं.

अष्टांग–आठ अंगवाळा (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, अने समाधी)
संजीवनी–जीवाडनारी
मृत्युंज्यादिक–मोतने जीतनारा विगेरे
चतुरंग–चारप्रकारनी (१हाथी उपर २ घोडा उपर ३ रथमां वेसी लडनार ४ पायदळ)
निष्कंटक–दुष्मन रहित
भृकुटीथी–भमरवडे
नायक–सरदार
प्रव्रज्या–दिक्षा
कर्त्तव्य–करवायोग्य
सत्क्रिया–शुभक्रिया
परकार्य–पुद्गलभाववाळां काम
स्वकार्य–आत्मार्थ
संचित–एकठुं
अरण्यमां–जगलमां

पा. ६४ मुं

अनुत्तर–जेना जेवुं वीजुं न होय ते; श्रेष्ठ
विरह–वियोग, छुटा पडवुं
स्वस्थ=शांत
घोर=विहामणो; भयंकर
श्रोत्रीय=वेदोक्त कर्म पाळनारो, ब्राह्मण
कृमी=कीडो
वालाग्र=वालना अग्र भाग जेटली
प्रायः=घणुं करीने
वाधित=दुःखी
उष्ण-तापनी; गरमीनी
अनुसारे–प्रमाणे
वेरणशीर्ण=छुटाछुटा

पा. ६५ मुं

घटीयंत्रो–काचनी अडधी घडी जेवुं यंत्र

११९

क्षुद्रार्थी- नानामोटेथी
आकर्षण करे—खेंचेछे
रजको--धोबी
वज्रकंटक- वज्रनो कांटो
पृष्ठ- मगाटी
दारुण-विकाळ, भयंकर
छिद्रो--वेहेरे
अनिवार--नगवारना जेवां पांदडांवाळां
आलिंगन—भेटवुं
कोमळपणुं--[illegible]पणुं
[illegible]—[illegible]

नी कडाइमां तळवुं
कुंभिपाक--नीभाडा
मांसामण पकववानी पेठे नारकीओने पकववानुं स्थान
रडावीन- भींना
व्यथा--दुःख

पा. ६६ मुं

मृत्तिका-माटी
पुट--लेप
घनीभूत--नक्कर
स्थाळी—वासण;थाळी
दग्ध--बळेला
शीतोष्ण--ठंडा उंना
प्राचीन--जुना

अर्वाचीन--नवा
घर्षणा--घसावु
अवस्था- हालत
भोज्य—खावायोग्य
परंपरानो—सनातिनो
चूर्णथायछे--भूकोथायछे
जलौका--जळो
निष्कर्ष—नीचोववी
गंडुपद--गंडोळा
जठर -होजरी
समार्जनथी—याळवाथी
अदृश्य—न देखायतेवा
नाडनोथी -मारथी
विराधायछे--नाशपामेछे

उत्सुक--आतुर
ढीमर--पारधी

पा. ६७ मुं.

निर्बळ—नबळा
आसक्त—लीन
निरपराधी—वीनगुनेगार
क्षुधा—भूख
पिपासा—तरस
असह्य—न खमाय एवो
खेचर-आकाशमां चालनारा
शुक—पोपट
कपोत—कबुतर

ग्रास—भक्षण
विडंबना—नडतर
निबंधन—कारण
दग्ध—हेरान
संपत्ति—दोलत
उत्कर्ष—चडती
अपकर्ष—ओछाश, पडती
दीन—गरीब
कदर्थना—दुःख
निवास—रहेठाण
जरा—घडपण
रोमेरोमे—रुंवेरुंवे
बाल्यवय—बचपण
यौवनवय—जुवानी

रतिविलास-काम भोग
वृद्धावस्था-वडपण
पा. ६८ मुं.
शीशुवय-बचपण
मातृमुखी-माता में सामुं जोइने रहेनारो
अंतर्मुख-अंतर द्रष्टिए जोनारो
विव्हल-बावरो, आकळो
कृषि-खेती
पशुपाल-जानवर पाळनार
द्युत-जुगार
जारपणुं-लंपटपणुं

मोह-अज्ञान
अंध-आंधळा
पात्र-वासण
शर्मिलायुग-शर्मिल अने धुंसरुं
मांडमांड-पराणे
प्राप्त थएलुं-मेळवेलुं
मानुषत्व-मनुष्यपणुं
परोक्ष-नजरे न पडे तेवुं
अमर्ष-क्रोध, रीस
साम्राज्य-शोभा
प्रवर्तिरहेलुं-फेलाइगएलुं
अल्प-थोडुं

सुकृत-पुन्य
संपादन करनारा-मेळवनारा
प्रतिकार-उपाय
शल्य-साल
कचवाया-खीजवाया; दुःखी थया
उतरोत्तर-मोटा मोटा
पानुं. ६९ मुं.
उपवन-बगीचो, बाग
यावज्जीवित-जीवे त्यां सुधी
ज्वलित-बळती
उर्मिओ-ज्वाळा
बलिष्ट-बळवान

सर्वस्व-बधी चीजो
दीनवृत्तिए-गरीबाइथी
गदगद स्वरे-गळगळा कंठे
स्वस्थपणुं-शांतपणुं
देवभुवन-विमान
च्यववुं-छोडी नीकळवुं
चिन्ह-नीशानी
ग्लानि पामे-करमाइ जाय
अकंप्य-न हाले एवां
संधिबंध-सांधानो बांधो
शीथिल-ढीलो, नरम

कंपायमान-हालतां
अकस्मात-एकाएक
घाटा-भारे
कुपथ्य-नहि खावा योग्य चीज
बाध-अडचण
अपटु-मूर्ख
प्रकंप-धूजारो
पुर्वोक्त-उपर कहेलां
आलिंगन-भेटवुं
विलाप-शोच
पानुं ७० मुं
हतभाग्य-कमनसीब
वियोग पामेलां-जुदां पडेलां

१२०

कांता-स्त्री
पदांकिए-
युक्त-सहित
श्रेणीबंध-हारबंध
पूर्ण-भरेली
नासिका-नाक
पारिजात-एक जातनुं कल्पवृक्ष
अशुचि-अपवित्र
आस्वादन-चाखवुं
नरडी-गळडी
रति-कामक्रीडा
बीभत्स-सूगी, दुर्गंधवाळो
विरसपण-अणगमतुं,
अण मळनुं
शंकु-पडा जेवा आकारनो नक्कर पदार्थ
निर्लक्षणपणुं-
साक्षातपणे-प्रत्यक्षपणे
ग्राह्य-ग्रहण करवा योग्य
गोचर-जणाय तेवो
अनन्यपणुं-एकत्व
शंका-शक, वहेम
प्रहार-घा
समाधान-निर्णय
भेदबुद्धि-जुदापणानी बुद्धि

पा. ७१ मुं.

प्रतिपादन करेलो-समजावेलो
अज्ञ-अजाण
अनात्मियपणुं-आत्माथी रहितपणुं
अधिक-वधारे
प्रिय-वहालुं
अन्यत्व-जुदापणुं
तुंबीका-तुंबडी
निवारी-दूर करी
तरंग-मोजां
निरंछापणे-निछोलो-कमां
अशुचिस्थान-अपवित्र जग्या
क्षणिक-क्षणमां नाश थाय तेवुं
अस्थि-हाडका
मज्जा-हाडमां रहेलो चीकणो पदार्थ
शुचिपणुं-पवित्रपणुं
निझरणुं-झरी झरी एकठुं थवुं
संकल्प-विचार
विलास-भोग
रुधिर-लोही
जरायु-ओर
पान करी-पी
कृमि-कीडा
गंडूपद-गंडोळा
स्वादिष्ट-मीठुं
क्षीर-दूध
इक्षु-शेलडी
घृतादि-घी विगेरे

पा. ७२ मुं.

वलेपन करेलो-चोपडेलो
यक्षकर्दम-कपुर, अगर, कस्तुरी केसर अने मुखडनुं विलेपन
तांबुल-तंबोळ
आस्वादन-चाखवुं
जुगुप्सा-दुगंछा
स्वतः-पोतानी मेळे

मांजेलो—चोळीने धो-
पलो
कलाल—दारुवाळो
मृत्तिका—माटी
गतानुंगतिक—गएला-
नी पुंठे जनार
फलोत्पादक—फळ उ-
त्पन्न करनार
उद्धार—मोक्ष; मुक्ति
उत्पत्तिस्थान—उत्पन्न
थवानुं ठेकाणुं
आश्रव—जे थकी कर्म
आवे ते
जंतुओने—जीवोने
योग—जोग

आश्रवे—उत्पन्न करे
वासित—भावीत
आक्रांत—जीताएलुं,
पकडाएलुं
आश्रित—आधीन: वश
उपार्जन—उत्पन्न
हेतुभूत—कारणभूत
गोपवेलुं—रक्षण करेलुं
असत्—खराब; माठा
आरंभी—हिंसक
विघ्न—अडचण
निन्हव—असत् वात
स्थापनार
पिशूनता—चाडी
घात—नाश

पा. ७३ मुं.
अकाम—मोक्षनी इच्छा
विनानी
सद्वेद्य—शाता वेदनी
आक्रंदन—रडवुं
विलाप—शोच
पश्चाताप—पस्तावो
अवर्णवाद—निंदा
उन्मार्गे—खोटे मार्गे
अनर्थ—उंधोअर्थ: जु-
लम
आग्रह—हठ
असंयमी—चारित्र
भ्रष्ट
अवज्ञा—अपमान; आ-

शातना
उदयथी—उठवाथी
तीव्र—गरम; आकरा
उक्ति—वाणी
उत्कंठा—इच्छा; होंश
आकर्षवुं—खेंचवुं
असूया—अदेखाइ
प्रकृति—स्वभाव
अकुशल—माठुं, खराब
त्रास—कंटाळो,जुलम
शोच—अफसोस
रुदन—रोवुं
आसक्ति—अति स्नेह,
लीनता
चतुर्विध—चार प्रका-

रना
तिरस्कार—धिकार
इर्ष्या—अदेखाइ
लोलुपता—लालचुपणुं
अतिवक्रता—घणीवां-
काश
अनीर्ष्याळु—अदेखाइ
न करवानो
मंद—ओछो
अवक्राचार—सरळ री-
तभात
स्पर्श—अडकवुं
चुंबनादि—वची कर-
वी विगेरे
अनंगसेवा—कामक्रीडा

उग्र–आकरो	पा. ७४ मुं.	अमगट	उपघात–नुकशान,	समाधि–शांति
तीव्र–आकरो	अनुग्रह--कृपा. सहाय	प्रयोग–अजमायश	नाश	आश्रवो=स्थानको
कालेन्ना-नियमनांअ	सदास्थिर--हमेशां का	प्रतिच्छंद–नकल,	कामण करवुं–वशकरवुं	(वीशस्थानक)
छिद्र–अंतराय. अ-	यम	बनावट	दांभिकपणुं–कपटीपणुं	स्पर्शेला=आचरेला
डचण	अवशपणुं--छुटापणुं	संपादन करवुं–मेळ-	उन्मार्गे–खोटे रस्ते	अवज्ञा–अपमान
मद्–मद	देशना–उपदेश	ववुं	जनार	गर्व=अहंकार
मग्नता–लीनता	वित्तावुं–द्रव्यनुं	पंजरनी=पांजरुं	कौतक–नवाइ, अ-	क्षणिक–थोडा वख-
अनादिनपणे--नीरंकु-	अल्प--थोडुं	आत्मप्रशंसा–पोतानी	जायबी	तमां नाश पामे तेवा
शपणे	पूर्वालाप--प्रथम वात	स्तुति	मिष–बहानुं	संवर=भावनां कर्मने
आस्वादन–स्वाद	चीत	अब्रह्मचर्य–कुशील	विनाश–नाश	रोकवुं
नोखावने- कावने	मिथ्यालाप–नी संबं-	कनिष्ठ–खराब, अ-	पानु ७५ मुं	निरोध–अटकाव
नऽनागी(हाल्लमाटकने	धी वातचीत	धम	भीरुता=बीकणपणुं	योजवो–जोडवो
पण वेर)	परिचय–मळामण	आक्रोश–गुस्सो	अर्पण=दान, आपवु	उचित=वहित, लायक
उदीरणा–उदेरवा,	आराधना–पूजना	सौभाग्य–भाग्य-	क्षांति–क्षमा	पानुं ७६ मुं
उदांतिने उभा करवा	अव्यक्त–अजाणपणे,	शाळीपणुं	संभ्रम–मान, आकार	साध्य–वश, ताबे

साधवी-कबजे करवी
स्थिरतार्थी=ठरेली हालत
स्नेह-चीकाश
बद्ध=बंधाएली, चोटेली
गर्नाळां=पाणीनां वारां
छिद्रो-काणां
रुंधन=रोकवुं
प्रवेश=पेसवुं
पारंगतोमां-पारपामेला
स्वेदबिंदु=परसेवानुं टीपुं
निर्जरणा-खेरववुं
सकामा=मोक्षनी इच्छा सहित
अकामा=मोक्षनी इच्छा रहित

पानु ७७ मुं

परिपक्वता-पुरेपुरुं पाकी जवुं
स्वयमेव=पोतानीमेळे
प्रदीप्त=सळगेला
अनशन=आहारनो त्याग
उनोदरी-थोडुं ओछुं खावुं
वृत्तिसंक्षेप=आजीविकानी ओछाश
रसत्याग=विगयत्याग
कायक्लेश=कोयान कष्ट आपवुं
संलीनता=अंग संकोचवुं
बाह्यतप-उपलो, द्रव्यथी
प्रायश्चित=करेला अपराधनी शुद्धि
वैयावृत्य-वैयावच
स्वाध्याय-सज्झायध्यान
व्युत्सर्ग=काउसग्ग
शुभध्यान=सारुंध्यान
अभ्यंतर-अंदरनो, भावथी
दुर्जर-दुखे करीने क्षय थाय एवो
आवृत-चार तरफथी बंध करेलो
प्रचंड-आकरा
अविच्छिन्न ;अटक्या वगरना
उपार्जन -उत्पन्न
शारिरीक-शरीरसंबंधी
प्रतिक्षण-दरेक क्षणे
समर्थपणे-जोरबंध
उत्कर्ष पामे छे -वधता जाय छे
परायण- तत्पर
निष्परिग्रहता-परिग्रहरहितपणुं
मृदुता- कोमळता,माननो त्याग

पा. ७८ मुं.

वात्सल्यने-वत्सलता
आश्वासन -सुख
अचिंत्य-अणधार्यो
विश्ववत्सल-दुनियानुं भलुं करनार
तात्वीकपणे-तत्वथी
तत्वार्थ-तत्वसंबंधी मतलब
पराधीन-परवश
गोमेध-गायहोमवानो यज्ञ

नरमेध--मनुष्य होमवानो यज्ञ
अश्वमेध--घोडो होमवानो यज्ञ
प्राणीघात--प्राणीओनो नाश करनार
याज्ञिक--यज्ञ करनारा
विरोधी--उलटी
स्वाभाविक-[illegible]
सुकाल- [illegible]
व्यतिक्रम--उल्लंघन
गर्भहत्या- गर्भने पाडवो
धनवान्--[illegible]

सर्वस्व--बधी वस्तु
अल्पमात्र--जरापण
अपराध -गुनो
शाप--श्राप
पा. ७९ मुं
आश्रम--जींदगीनी मजल
चोथो आश्रम -संन्यास
दंभ--कपट
पाखंड--खोटां बनावटी
निर्दोषता--दोषरहितपणुं
सिद्ध--साबीत
असत्यवादी पणुं--जू-

ठापणु
कल्पित--क्लेश पामेलां
याग--बळी देवने अर्पण करवुं ते.
होम--अग्निने बळीदान आपवुं ते
वापी--वाव
कूप--कुवो
पितृओ=बापदादाओ
तृप्त=संतोष
घृतयोनि=घीनीयोनी
आपत्तिओ=आफतो
पुनर्जन्म--फरीथी परणवुं
क्षेत्रज=जे स्त्री पोता-

नो वर रोगी होवाथी अथवा मरी गयाथी पोताना दियरनो संग करी अथवा सासरीयांनी रजाथी धणीना गोत्री कोइ पुरुषनो संग करी दीकरो जणे ते
सौत्रामणि--एकजातनो यज्ञ
सप्ततंतु--होम
हव्य=होमवा योग्य पदार्थ
रिष्ट--पाप, उपद्रव

विडंबना--ढोंग, दुःख
भस्मवडे--राखवडे
अंगराग--शरीरे लेप
कोपीन--लंगोटी
भक्ष्य--खावायोग्य
अभक्ष्य--नहीं खावा योग्य
पेय--पीवायोग्य
अपेय--नहींपीवायोग्य
गम्य--जवाय, जणाय समजाय एवा
अगम्य--न जणाय समजाय एवा
पा. ८० मुं
भ.पीत--कहेला

आराधनथी—आच-
रवाथी; सेववाथी
कृषि—खेती
लाघवता—हलकाश;
पाटव—सुख, परिपू-
र्णता
दीर्घ—लांबु
कथंचित्=कोइकवार
धर्मकथक—धर्म कहेनार
जोगवाइ=मेळाप, अ-
नुकुळ आवे तेवो
चोक्कस वखत
श्रवण—सांभळवुं
बोधिरत्न=समकित
भाव—बनाव

परिभ्रमण=रखडवुं,
भटकवुं
पुद्गळ परावर्त्तन—अ-
नंताकाळ चक्र
सीमाडा=सरहद
सीदाइने=दुःखे

पा. ८१ मुं

अरण्य=जंगल
व्याप्त—भरेला
पर्याप्ता=यथायोग्य
पर्याप्तिपूरी करे ते
आलाप=वातचीत
संज्ञी=मनवाळा
द्वींकिय=बेइंद्रियवाळा

पा. ८२ मुं.

चतुरिंद्रिय=चारइंद्रि-
वाळा
आकाशचारी—आका-
शमां उडनार
उपपातपणे—अकस्मात
जरायु=ओर
सचित्त—सजीव
अचित्त=जीवविनानुं
सचित्ताचित्त=सजीव
ने अजीव
संवृतासंवृत=विंटाएलुं
ने वगर विंटाएलुं
शीतोष्ण=टाढीउनी

पा. ८३ मुं

मिथ्यादर्शननो=मि-
थ्यात्वनो
भद्रकपणुं—भोळपण
अपेक्षाए=धारणाए
अनुदयभावमां=उदय
नहीं आवेलो तेवी
स्थीतिमां
परावृत्ति=पाछाफरवुं
बदलावुं
स्थितिघात=काळमा-
ननो नाश
कीट्टीरुप—पीलीने कीं
टी करे ते

पा. ८४ मुं

षड्द्रव्य=छद्रव्य
प्रदेश=खंधनी साथे
संबंधवाळो सूक्ष्म नि
र्विभाज्य भाग
समूह=जथ्थो
अचेतन=जड
अकर्त्ता=क्रिया नक-
रनारा
उत्पाद—उत्पन्न थवुं
व्यय—नाश
ध्रौव्य—स्थिरभाव
अणु—परमाणुं, रजकण
स्कंध—खंध
अबद्ध—छुटो

सूक्ष्म–बारीक, झीणुं
स्थूल–मोटो
उद्योत–तेज, प्रकाश
उपग्रह-संबंध, मेळाप
अमूर्त–अरूपी
निष्क्रिय–क्रियारहित
मत्स्य–माछलुं
गति–जवुं
सहायकारी-मददगार
अभिन्नपणे–साथे रहेलां
कालवेत्ताओ–काळने जाणनारा
जीर्णरूपथी–जुनारूपथी

चेष्टित–क्रियावाळुं

पा. ८५ मुं.

रोध–अटकाववुं
सकषायीपणुं–कषाय सहितपणुं
परतंत्रता–पराधिनता
स्थिति–काळमान
अनुभाग–रस
कल्पना–धारणा
अभाव–अछतापणुं
तरीओ–तरनारो
चतुर्वर्ग–चार वर्गमां
अग्रणी–मुख्य
सावद्ययोग–पापव्यापार

तदात्मकपणे–ते रूपे

पा. ८६ मुं.

जनित–उत्पन्न थतां
दग्ध–बळीगएलां
निरंजन–तेजोमय
पक्ष–पखवाडीयुं
हणेछे–नाश करेछे.
भोगळरूप–वारणानी आडी, भुंगळ
उन–ओछुं
पर्यंत–सुधी
दहन–बाळवुं
संभार–समूह
पय–दूध
असेव्य–न सेववा योग्य
आगामीकाळे–भविष्यकाळमां, आवता वखतमां
समिध–होमवाना लाकडां
जन्मांतरे–बीजा जन्मोमां
सहोदर–भाइ
सत्वर–जलदी

पा. ८७ मुं.

अपकार–भुंडुं, खोटुं
सत्त्व–आत्मबळ
आशय–धारणा
श्वान–कुतरो
उपेक्षा–बेदरकारी
प्रयासे–मेहेनते
प्रलय–नाश.
अंगीकारकर–धारणकर
क्रोधांध–क्रोधे करी आंधळा
महर्षि–मोटा ऋषि
मर्मपीडक–मर्मभेदक
उन्मत्त–ताता मिजाजनो; मगरुर
विस्मय–आश्चर्य

पा. ८८ मुं

ग्लानि–दुःख
जांगुली–झेर उतारनार

सुशील–सारा आचार वाळो
हानीवृद्धि–वधघट
पा. ८९ मुं.
निर्णय–नक्की
निरुपाधिक–उपाधी रहित
प्रतिकार–उपाय
निरास–काढी नांखवुं
अविद्यानी–अज्ञानती
कुटिलपणामां–कपट छळ भेदमां
षड्गुण–छ गुण
नास्तिको-मिथ्यात्वीओ

वल्कल–झाडनी छाल
पा. ९० मुं
कटाक्ष–आंखोना मचकारा
द्यूतकारो–जुगारीओ
सुहृद–मित्र
वंदि–भांड
धीवर–माछी
प्रवीण–हुंशीआर
स्थळचारी–जमीनपर चालनारां
ग्रास–आहार; कोळीओ
द्रोह–नुकशान
अवार्य–वेहद

अवशेष–बाकी रहेलो
उद्वेग–भय; शोक
अकृत्रिम–स्वाभाविक
कौटिल्यता–कपट
अज्ञ–अणसमजु
पा. ९१ मुं
आसक्त–अनुरक्त
प्रायः–घणुं करीने
वक्रोक्ति–वांकुं बोलवुं
सुवर्ण–सोनुं
पार–छेडो
आलोचना–विचार;
उग्र–आकरी
बाध–अडचण
सहस्र–हजार

लक्ष–लाख
कोटी–क्रोड
निवृत्ति–पाछा हठवुं; तृप्ति
चक्र–पैडुं
राज्यक्ष्मा–क्षयरोग
निधानस्थान–द्रव्यना भंडार
लीन–आसक्त
निधि–निधान, द्रव्यनो भंडार
अधिष्ठायक–रक्षक
पा. ९२ मुं
विजय–जीत
पतित–पडेला

लव–भाग, थोडुंक
युद्ध–लडाइ
ग्राम्यजन–गामडाना माणसो
सौहृदभाव–मित्राचारी
हास्य–हांसी, मश्करी
सर्वस्व=बधी वात
उद्वेल=कांठा ओळंगी जता
निवृत्त करवुं=पाछा हठवुं
शब्दाद्वैतज–एकधारो अवाज
विरक्ति=त्याग

पा. ९३ मुं
प्रतीति--ओळखाण
कृषि--खेती
पशुपाळवृत्ति--ढोर
पाळीने आजीविका
चलाववी
प्रयास--मेहनत
नश्वर--नाशपामनेवी
आयासरहित--मेहनत
विनानुं
अद्वैतसुख--एकज
सुख
जाड्य--जडपणुं
अदग्ध--नहि दझेला,
नहि करमाएला

खंडित--तोडेलो
कुळघात--कुळनो नाश
पात--पडती
पा. ९४ मुं
चेष्टित--चाळा अ-
थवा कार्य
चरम--छेल्ला
शस्त्राशस्त्रि--लडवाना
हथियारे हथियारवडे
दुरंत--अपार, दुर छे
छेडो जेनो
पूर्ववेत्ता--पूर्वना जा-
णनारा
अखाद्य--नहि खावा
योग्य

अपेय--नहि पीवायोग्य
अगम्य--नहि जवा
योग्य, नहि आचरवा
योग्य
प्रवृत्ति--पेसारो
जाग्रत=जागतो
विलास--चेष्टा, चाळा
आस्वादन--अनुभव
प्रसारतो--फेलावतो
क्लेशमां--दुःखमां
अगाध--अपार
मीन--माछलुं
गळगत--गळामां ग-
येला
धीमर--माछी

मत्त--मदवाळो, घेलो
मातंगना--हाथीना
कर्णताल--काननो
फफडाट
आघात--वागवुं
दीप--दीवो
सहसा--एकाएक
वेध्य--वींधवा योग्य
पंचत्व--मरण
पा. ९५ मुं.
ग्रामने--समूहने
सर्वथा--बधे प्रकारे
निहित--मुकेला अथ-
वा बोलेला
अहितकारी--बिन फा-

यदावाळी
कटु--कडवां
श्राव्य--सांभळवा योग्य
दुःश्राव्य--दुःखे क-
री सांभळवा योग्य
रति--सुखमां आनंद
स्वस्थपणाने--शांतप-
णाने
रुचिकर--गमतो
जलभमरीओ--पाणी
नी चकरी
नाविका--होडी, वहाण
पा. ९६ मुं.
ऊर्मिओ--मोजां
निरंकुश--छुटो

निःशंकपणे- शंकारहितपणे
निशाचर--राक्षस अथवा चोर
रोध--कवजो
उपहास्य--मश्करी
परिभ्रमण--समस्तपणे भमवुं
मलिनता--मेलाश
आत्माधीन--आत्माने वश
पराधीन--परतंत्र
तिमिरथी--अंधाराथी

पा. ९७ मुं.

विस्मय--आश्चर्य
कृपण--दयामणो
परिवार--संबंधी
मिथ्याभिमान--खोटो गर्व
अभिन्न--एकमेक
पितामह- दादो
वारिधिमां--समुद्रमां
स्फाटिकमणि-फटकमणी
उपाधिथी--दुःख, कारण
तद्रुपपणे--तेना जेवोज
विश्व--दुनिया
निर्दय- दया रहित
मुक्ति--मोक्ष
मुमुक्षु--मोक्षनी इच्छावाळा
योग--मेळाप
व्याघ्र--वाघ
निर्वाणपद--मोक्षपद
स्वतः--पोतानी मेळे
पूर्णिमाना--पूनमना
अमंद--अखंड
तीव्र--आकरा
शलाका--शळी

पा. ९८ मुं.

मनोवृत्ति--मनना भाव; परिणाम
समान--सरखा
क्रोधांध--गुस्साथी
अवगाहन--भोग,अभ्यास
परम निवृत्ति--मोक्ष; समस्तपणे कर्मथी मुकावुं
उपासना -सेवा
गुप्त--छानां,संताएला
स्वसंवेद्य--पोतानी मेळे जाणी शकाय एवुं
खाद्य--खावा योग्य
लेह्य--चाटवा योग्य
चुष्य--चुसवा योग्य
पेय--पीवा योग्य
मंदार--कल्पवृक्ष
माळा--हार
पति--स्वामि
गुढ--गुप्त; संताएलुं
अवार्य--वारी शकाय नहीं एवुं
शाश्वतपद--मोक्ष;हमेशां टके एवुं स्थानक
उपसर्गो--आफतो; उपद्रवो
अद्भूत--आश्चर्यकारी

पा. ९९ मुं.

क्षार--खारा
निष्कंचनपणुं--परिग्रहरहितपणुं
परीसह--समस्त प्रकारे (दुःख) सहन करवुं ते

१२५

आगमन—आणा:आज्ञा
योग्यतावाळो—न्याय-
कारवाळो
संपन्न—पामेलो: सहीत
द्रव्योपार्जन—पैसो पे-
दा करवो
शिष्टाचार—महा पुरु-
षोनो सद् व्यवहार
देशाचार—देशनी री-
तभात
अवर्णवाद—निंदा
निर्गम—गमः रस्ते जाण
निंदित—निंदा लायक
स्थिति—हालत
अतिथिनो—परोणानो

यथायोग्य—जेवो जो-
इए तेवो
सत्कार—आदरमान
दुराग्रह—खोटी हठ
अनुचित्त—अयोग्य
स्वपर—पोताना अने
पारका
बलाबल—जोर अने
नबळाइ
ज्ञानवृद्ध—ज्ञाने करी
वृद्धः अधिक ज्ञानी
पोष्य—पोषण करवा
योग्य
दीर्घदर्शी—लांबी नजर
पहोंचाडे एवो

कृतज्ञ—करेला गुणनो
जाण
सौम्य—सुंदर आकृति
वान
परिहार—त्याग
पा. १०० मुं.
विलास—चमत्कारा
अनास्था अविश्वास
आकांक्षा—इच्छा
चेष्टावडे—आचरणवडे
अहोरात्री—रात दहाडो
निर्गमन करवां-गाळवा
याम—रातनुं छेला
पहोरनुं हरकोइ मुहूर्त
स्मरण करीने—याद

करीने
स्तोत्र—स्तवना
यथाशक्ति—शक्ति प्र-
माणे
प्रवेश करी—पेसी
विशुद्धात्मावाळा-नि-
र्मळ आत्मावाळा
प्रकाशित करवुं-बोलवुं
आगमनने—आववाने
पर्युपासना—समस्त प्र-
कारे सेवा
प्रतिपत्ति—बहुमान
सद्बुद्धिपूर्वक—सारी
अक्कल वापरीने
अविरोधपणे—उलटुं

न आवे तेम
अर्थचिंतन—द्रव्य क-
माववानो विचार
मध्यान्हकाळे—बपोरे
शास्त्रवेत्ताओनी -शा-
स्त्रजाणकारनी
रहस्य—तत्त्व
देवार्चन—देवपूजा
आवश्यक—अवश्य
करवा योग्य
स्वाध्याय ध्यान=स-
ज्झाय ध्यान
प्रायः—घणुं करीने
अब्रह्मपणाने—कुशी-
लपणाने

छेद्–भंग; नाश
पा. १०१ मुं
निवृत्ति--दूर रहेवुं
ग्रंथीओ- गांठो
मज्जा--हाड कामांना
मांसनुं सत्व
अस्थि--हाडकां.
स्नायु--मांसना तंतु
चर्मनी--चामडानी
विपर्ययपणुं--बदलवुं;
बदलो
बाधकारी--हरकतक-
रनारा; दुःखदायी
प्रतिकार–उपाय
भवस्थितिने–भवोर-
खडवानो काळ
अमूढ=पंडित
श्लाघा--वखाण
वासित--वासनावाळो
श्रद्धावाळो
किंकर--चाकर
माधुकरीवृत्ति--भमरा
जेवी आजीविका
मुनिचर्या=मुनिनुं भि
क्षाए फरवुं
दुःशील–खराब आ-
चारवाळा
स्तंभवत्–थांभलाजेवो
वृषभो--बळदो
स्कंध–खांध; खभो
पद्मासन–बंने पग पग
उपर पग चढावी
तळीयां साथळपर
राखी बेसवानुंआसन
उत्संगमां=खोळामां
तृण–घास
मुक्तिगृहनी=मोक्षरुपी
घरनी
चर्या=आचरण;क्रिया
विद्युतना=विजळीना
संयोग=मेळाप
वियोग=जुदापडवुं
पा. १०२ मुं
सावद्य–पापव्यापार
विराति=त्याग
सर्वात्मपणे–सर्वांशे;
सर्वथा
यावज्जीवित–जीवे
त्यां सुधी
उपासक=पुजनार;
भक्त
अज्ञात=अजाण्यां
द्विदल–कठोळ, बे दा-
ळवाळुं
पुष्पित–फुलथीवासीत
व्यतीत–थइ गएला
नष्ट थायछे=नाश
पामेछे
प्रिया=स्त्री
रांक–गरीब
स्वामी–धणी
शव=मडदुं
श्वान–कुतरुं
विवर–पोलाण;दर
विचित्र–नवाइ जेवा
दाहज्वर–शरीरे बळ-
वा थाय तेवो ताव
हलाहल--सखत; घणुं
कडवुं
शिथिल--नरम
ग्लानि–दुःखः रोग
फिकाश
गंजी–ढगलो
मद्यपान–दारुपीवो
शौच–पवित्रता

१२६

विहीन--नाश पामवुं
उत्पत्ति--उत्पन्न था-गवे

पा. १०३ मुं

मिथ्या--खोटी
अपवाद--निंदा
[illegible]--[illegible]
ग्लानि--ग्लान थी
उन्मत्त--चीडी
[illegible]--शिर
[illegible]--दुःख
[illegible]--[illegible]-शीने
[illegible]--[illegible]
[illegible]--उते-डी नांखे छे
मज्वलित--बळता
[illegible]--दाळवु
ईंधणां--लाकडां
शुक्र--वीर्य
शोणित--लोही
परिताओप--मथवां-रोग
वमन करेला--उलटी करेलां

पा. १०४ मुं

क्षाम--दुर्बळ
पुण्यात्मा--पवित्र
नार्ह- कुंथं: हुमल्तुं
कुंपर--नपल्टर;
नवा अंकुर
त्वचा--छाल
गिरिकर्णिका--विला-डीना टोप
विरुद्ध--फळीओ
गडुची--गळो
पल्यंक--पालनु,पालो
मुकर--लील
अज्ञान--अजाण्या
निरंकुशपडने--स्वतं-त्रपणे
उच्छिष्ट--योठेलुं, ब-गडेलुं
रंधाइ--मींनाइ
त्राता--रक्षण करनार
अनगारी--घरबार विनाना
अगारी--घरबारी
सुकृतने--पुण्यने
छविच्छेद--नाककान आदि अंग छेदवां
आरोपण--मुकवुं
प्रहार--मार
रोध--अटकाव
मिथ्या उपदेश--खोटो बोध
सहसा--वगर विचारे एकदम
अभ्याख्यान--जुठुं आळ देवुं
गुह्य--छानुं
रहस्य--छानीवात
कूटलेख--जुठां खत के दस्तावेज
अस्तेय--चोरी न करवी
अनुज्ञा--रजा
लंघन--ओळंगवुं
मतिरूप--सरखी, म-क्रती

पा. १०५ मुं

अपरिग्राहिता गमन--अणपरणेली के कुं-वारी साथे कामभोग
इत्वर--थोडा काळ

पाटे राखेली
तीव्र--आकरी
अनुराग--इच्छा
अनंगक्रीडा=कामभोग
प्रमाणातिक्रम--प्रमाण
ओळंगी जवुं
द्वीपद- बे पगवाळां
चतुष्पद--चोपगां
रुप्य--रुपु
ताम्रादि=तांबा विगेरे धातुनां
भाजन=वासण
एकत्र--एकठा
स्मृति=यादी

तिर्छे-मध्य; वचला
उल्लंघन करवुं-ओळंगवुं
हानी-ओछाश
तुच्छ-हलकी
औषधी-वनस्पति
अपक्व- काची
दुष्पक्व-काची पाकी;
कांइक शेकेलुं कांइक अण शेकेलुं
खर-नुकशानकारक; पापवाळां
कर्मादानरुप-कर्मग्रहण करवारुप
शकट-गाडुं

भाटक-भाडुं
स्फोट-खोद काम,
निर्लांछन-खासी करवी
सरःशोप-तळाव सुकववां
सुवर्णकार-सोनी
शिला-पथ्थर
पानुं १०६
त्वचा-चामडी
हरिताळ-हडताळ
मुष्कछेद-खासीकरवा
पृष्ट-पाछला
निर्लांछन-अंगविंधवां ते

मार्जार-विलाडो
व्यसन-टेव
दावानळ-अग्नि
द्रह-तळाव
संयुक्त अधिकरणता-अधिकरणोने जोडी तैयार करी आपवां ते
अधिकरण-पापव्यापारना साधनो
अतिरिक्तता-अति आसक्तपणुं
वाचाळता-वाचाळपणुं
कौकुची-स्तनमर्दन
कंदर्पचेष्टा-काम उत्प

न्न थाय एवी निशानीओ
दुष्टप्रणिधान-माठुंध्यान
अनादर-आदरमान न आपवुं
अनुपस्थापन-विस्मरण, भूलीजवुं
प्रेष्य-मोकलवा योग्य
प्रयोग-प्रेरवुं
अनायन--अणाववाने
प्रक्षेप-नांखवुं, मुकवुं
शब्दानुपात-खोंखारो करवो

१२७

[illegible]नुराग-[illegible]

[illegible]-[illegible]

[illegible]-वसानुं

पा. १०७

[illegible]-[illegible], वि-काळ

[illegible]गति-नीचीगति

ऊर्ध्वगति-ऊंच गति

[illegible]-लजवा

बहिःप्राण-बाहारना प्राण

उपमर्दन-नाश

प्राज्ञ-ज्ञानी; पंडित

विधुर-दुःखी

अनुरागी-रागवाळा

हितोपदेश-फायदाकारी बोध

तत्त्वदर्शी- तत्वनो जाणनार के देखाडनार

आसक्त-लीन

कामासक्त-भोगमां लीन

हास्यविनोदमां-हसतां रमतां

पा. १०८

धीर-धैर्यवान

अग्र-आगळ पडता

समितिवंत-सम्यक् चेष्टावंत

कालक्रमे-वखत गाळवामां

मथेले-मेहेनत करेले

हेरान-दुःखी

उजमाळ-तत्पर

निःसार-असार

अहित-अकल्याण



चतुर्विंशति जिन स्तुति देशना

संग्रह समाप्त.